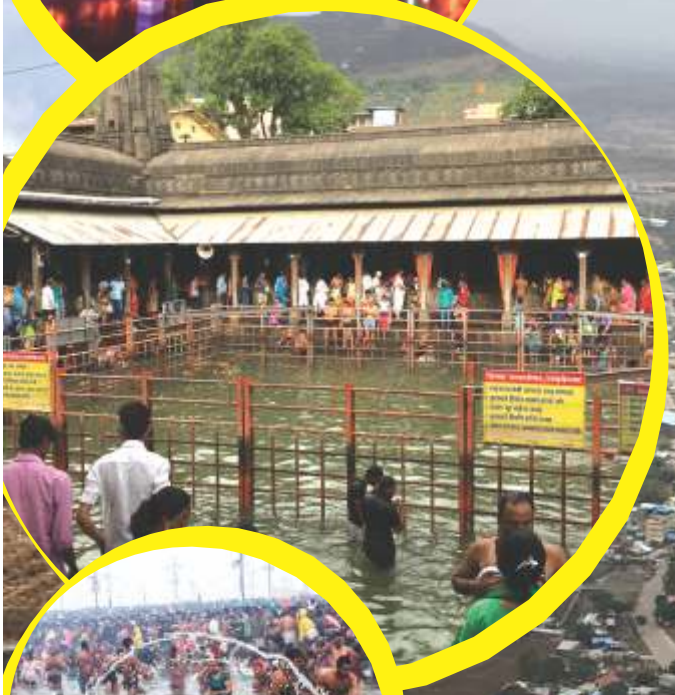

सत्यमेव जयते
अतुल्य भारत
¼i;Vu ea=ky; dh =Sekfld xg i=dk½
i;Vu ea=ky;] Hkkjr ljdkj] ubZ fnYyh
vDVcj&fnlEcj] 2018

2019
नव वर्ष की
हार्दिक
शुभकामनाएं

सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका)

- संरक्षक : **श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : **ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- संपादक : **श्रीमती सन्तोष सिल्पोकर, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रबंध–संपादक : **मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय**
- अन्य सहयोगी : **राज कुमार**

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक,
अतुल्य भारत
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली – 110011
ई–मेल– editor.atulyabharat@gmail.com
दूरभाष 011–23015594, 23793858

डॉलफिन प्रिन्टो–ग्राफिक्स
झण्डेवालान एक्सटेंशन
नई दिल्ली से मुद्रित
011–23593541–42

पर्यटन से संबंधित सूचनाओं के प्रसार हेतु निःशुल्क वितरण के लिए

वर्ष 4 अंक 14 अक्टूबर–दिसम्बर, 2018

इस अंक में...

5 संपादक की कलम से...

अब भारत जीतने लगा है पर्यटनों का विश्वास 07

09 त्रियम्बकेश्वर, ब्रह्मगिरी, अंजनेरी और भीमाशंकर

22 सेंधा नमक : कहाँ चला गया ?

27 अध्यात्म और संस्कृति का संगम

33 छुट्टी

35 बीज़ाः पर्यटन का कल्याण

37 पर्यटन का नया आयाम : कृषि पर्यटन

42 कविताएं

न्यूनतम खर्च कर पर्यटन का आनन्द लें 43

45 पर्यटन में सारण का नाम

51 अभिरंजित काँच की खिड़कियां

61 महिला सशक्तिकरण

श्रद्धांजलि

65

मेजर कुलदीप सिंह

72

हिमांश जोशी

72

एलेक पद्मश्री

73

कादर खान

73 पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियाँ एवं समाचार

परामर्शदाता व प्रधान संपादक
ज्ञान भूषण, आई.ई.एस
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक की कलम से...

पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका 'अतुल्य भारत' का 14वां अंक आपके सामने है।

पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत् प्रयास कर रहा है और ''अतुल्य भारत'' पत्रिका भी इसकी एक कड़ी है। यह मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर दे रही है और साथ ही साथ भारतीय पर्यटन के बारे में जानकारी भी प्रदान कर रही है। भारतीय पर्यटन उद्योग निरंतर वृद्धि की ओर अग्रसर है जो कि विश्व औसत से कहीं अधिक है।

इस अंक में आप पढ़ेंगे माननीय पर्यटन राज्य मंत्री जी का आलेख 'अब भारत जीतने लगा है पर्यटकों का विश्वास' जिसमें उन्होंने पर्यटन के क्षेत्र में भारत द्वारा की गई प्रगति और प्रयासों पर प्रकाश डाला है।

श्री विनीत सोनी द्वारा महाराष्ट्र में की गई यात्रा पर उनका लेख ''त्रियम्बकेश्वर, ब्रह्मगिरी, अंजनेरी और भीमाशंकर'', हमें स्वास्थ्य के प्रति सचेत करने हेतु कुमार सत्यम का आलेख 'कहां गया सेंधा नमक', एक नए तरह के पर्यटन की अवधारणा के बारे में बताया है अविनाश दास ने अपने आलेख 'कृषि पर्यटन : पर्यटन का नया आयाम' के माध्यम से कि कैसे किसान अपने खेत और खलिहानों का पर्यटन के लिए उपयोग कर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। सुशान्त सुप्रिय की कहानी कहानी 'छुट्टी' के साथ ही उनकी तथा और विश्वरंजन की कविताएं भी दी जा रही हैं। 'महिला सशक्तिकरण की जरूरत' के बारे में दीपक कुमार ने महिलाओं की समस्याओं को रेखांकित करते हुए उन्हें सक्षम बनाने की वकालत की है। इसी प्रकार वीज़ा की समस्याओं पर श्रुति राजगोपालन ने अपने आलेख 'वीजा–पर्यटन का कल्याण' में बताया है।

आज भी अधिकतर लोग घूमने फिरने पर अधिक खर्च होगा, यह सोच कर बहुत ही कम कहीं बाहर जाते हैं। इस सोच को अच्छी तरह से समझाया है, आशा कोलेकर ने अपने आलेख 'कम खर्च में पर्यटन का आनंद लें'। ओम प्रकाश मीना ने अपने आलेख 'लौंगेवाला के नायक' के द्वारा 1975 के युद्ध में पराक्रम दिखाने वाले वीरों को याद कराया है। यह मरूस्थल आज भी देश के पर्यटकों से अधिक विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। इसके अतिरिक्त श्री मोहन सिंह का एक अनूठा लेख 'अभिरंजित कांच की खिड़कियां' जिसमें भारत के कुछ प्रसिद्ध चर्चों के बारे में एक नई जानकारी दी गई है।

हाल ही में दिवंगत हुए हिंदी के जाने–माने लेखक हिमांशु जोशी और चर्चित चरित्र अभिनेता कादिर खान को भी अतुल्य भारत की ओर से याद किया गया है। इसके अलावा पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और रिपोर्टें के अंतर्गत मंत्रालय की गतिविधियों के पूर्ण विवरण भी प्रदान किए गए है।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा पर्यटन से संबंधित विषयों पर मूल रूप से हिन्दी में लिखी गई पुस्तकों को पुरस्कृत करने के लिए ''राहुल सांकृत्यायन पर्यटन पुरस्कार योजना'' वर्ष 2001–02 से चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा एक प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। महानिदेशक (पर्यटन) श्री सत्यजीत राजन ने 20 नवम्बर, 2018 को राहुल सांकृत्यायन पर्यटन पुरस्कार प्रदान किए। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी पर्यटन मंत्रालय में 1 से 14 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़े का अयोजन किया गया और प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

मैं आशा करता हूं कि आप सभी के निरंतर सहयोग से यह पत्रिका और अधिक ज्ञानवर्धक, रोचक सामग्री तथा सूचना प्रदान कर पाठकों को भारतीय पर्यटन के विभिन्न पहलुओं एवं पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने में पूर्णतः सक्षम सिद्ध होगी।

हम माननीय पर्यटन राज्य मंत्री जी के विशेषरूप से आभारी हैं कि उन्होंने अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकाल कर अपना योगदान दिया है।

आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय और महानिदेशक (पर्यटन) देश में पर्यटन के संवर्धन के लिए सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में हम उनके आभारी हैं।

अंत में, उन सभी लेखकों का धन्यवाद करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

ज्ञान भूषण

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

आस्था के पर्यटन

अब भारत जीतने लगा है पर्यटनों का विश्वास

—के.जे. अल्फोंस

हम सभी जानते हैं कि भारत में पर्यटकों को आकर्षित करने की अपार क्षमता रही है क्योंकि इसके पास समृद्ध प्राकृतिक संसाधन हैं। इसकी कला और सांस्कृतिक परंपरा सदियों पुरानी है। इसके साथ ही हमारा देश योग, आयुर्वेद और प्राचीन ज्ञान का स्रोत रहा है जिसे प्राप्त करने के लिए विश्व भर के लोग उमड़ पड़ते हैं। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वर्ल्ड ट्रेवल एंड टूरिज्म कौंसिल (डब्ल्यूटीटीसी) की वर्ष 2018 की रिपोर्ट में भारत तीसरे स्थान पर है।

इस प्रतिष्ठित रिपोर्ट में पिछले सात वर्षों (2011–17) में 185 देशों के कार्य प्रदर्शन का मूल्यांकन किया गया है। देशों का श्रेणीकरण डब्ल्यूटीटीसी के आर्थिक प्रभाव डेटा का उपयोग करते हुए इन चार मुख्य संकेतकों के आधार पर किया गया है– जीडीपी में कुल योगदान, आगंतुक निर्यात (अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन व्यय), घरेलू व्यय और पूंजी निवेश। इस क्षेत्र में भारत के उत्कृष्ट प्रदर्शन को न केवल पर्यटन क्षेत्र के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए आत्म–विश्वास बढ़ाने वाले प्रमुख कारक के रूप में देखा जा रहा है।

हम समुद्र पर्यटन को सक्रियता से प्रोत्साहित कर रहे हैं और इमिग्रेशन सुविधाओं के साथ चार बंदरगाहों में विशेष क्रूज टर्मिनल शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं।

यह सचमुच एक अच्छी खबर है, पर पर्यटन मंत्रलय में हम लोग जानते हैं कि इस दिलचस्पी को बनाए रखने और पर्यटकों की संख्या को बढ़ाते जाने के लिए हमें पर्यटकों के विश्वास को बहाल करने वाले कदम तेजी से उठाने होंगे। इस लिहाज से महिला पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित कराने से लेकर आधिकारिक स्रोतों से प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराने तक काफी कुछ किया जाना है।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार विदेशी पर्यटकों की संख्या 2014 में 76.80 लाख थी जो 2017 में बढ़कर एक करोड़ पर पहुंच गई। जहां तक फोरेक्स का संबंध है, वह वर्ष 2014 में 2.02 करोड़ डॉलर से बढ़कर 2017 में 27.3 अरब डॉलर पर पहुंच गया। हम वर्ष 2023 तक 100 अरब डॉलर के लक्ष्य तक पहुंचना चाहते हैं। इसके मद्देनजर अनेक नई पहलकदमियां की जा रही हैं। हम समुद्र पर्यटन को सक्रियता से प्रोत्साहित कर रहे हैं और इमिग्रेशन सुविधाओं के साथ चार बंदरगाहों में विशेष क्रूज टर्मिनल शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं।

हम चाहते हैं कि और अधिक पर्यटक हमारे खूबसूरत पूर्वोत्तर राज्यों की ओर आकृष्ट हों। वर्तमान सरकार की प्राथमिकता का एक पहलू इन स्थानों के आसपास इंफ्रास्ट्रक्चर को उन्नत बनाना है जहां पर्यटक अक्सर आते हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में पर्यटन संबंधी नियमों को शिथिल किए जाने से नई संभावनाओं के द्वारा खुले हैं।

पर्यटन मंत्रालय के दो अग्रणी कार्यक्रम हैं। एक, 'स्वदेश दर्शन' जिसकी कुल लागत 5,992

*'पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पर्यटन मंत्रालय

करोड़ रुपये है और दूसरा, 'प्राशाद' जिसकी लागत 727 करोड़ रुपये है। इनका उद्देश्य हमारे विरासत स्थलों और धार्मिक गंतव्य स्थलों में बुनियादी सुविधाएं तैयार करना है जैसे कि शौचालय, पार्किंग, पेयजल, कैफेटेरिया, वाई–फाई आदि। वर्ष 2019 के अंत तक स्वदेश दर्शन के अंतर्गत तीस नई परियोजनाओं का उद्घाटन किया जाएगा।

प्रधानमंत्री द्वारा प्रेरित स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से भारत में स्वच्छता कवरेज 39 से बढ़कर 95 हो गया। इससे पर्यटन की संभावना में जबर्दस्त सुधार आया है। देश में स्वच्छता संबंधी कमियों को दूर करने पर काफी बल दिया जा रहा है। वर्ष 2014 में 60 फीसदी ग्रामीण आबादी को शौचालय की सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

वर्ष 2018 में हमने 95 ग्रामीण स्वच्छता कवरेज प्राप्त किया जिसके अतंर्गत 507369 गांव खुले में शौच से मुक्त हुए। यह एक लंबा सफर था। राष्ट्रीय आंकडों के अनुसार शहरी शौचालय कवरेज अब 87 हैं और देश के तीन चौथाई वार्डों में घर–घर नगरपालिका कूडा संग्रह करवाया जा रहा है। जैसे–जैसे यह बहुमुखी प्रयास आगे बढ़ेगा, वैसे–वैसे भारत के विभिन्न हिस्सों में यात्र को अधिक सुगम बनाने की सरकारी योजनाएं असर दिखाएंगी और पर्यटकों के आगमन में उल्लेखनीय तेजी आएगी।

आस्था के पर्यटन

त्रियम्बकेश्वर, ब्रह्मगिरी, अंजनेरी और भीमाशंकर

—विनीत सोनी

इस वर्ष जून की शुरुआत में मुझे त्रियम्बकेश्वर जाने का अवसर प्राप्त हुआ, वैसे पिछले कई वर्षों से मैं यहाँ आने की सोच रहा था और इस बार जब एक काम से मुंबई जाना हुआ तो मन में आया कि यात्रा ब्रेक कर भगवान भोलेशंकर के भी दर्शन कर लिए जाएं। मुम्बई से नासिक लगभग 170 कि.मी. दूर है और यहां से रेलगाड़ी लगभग साढ़े तीन घंटे का समय लगाती है।

बाबा भोलेशंकर के 12 ज्योतिर्लिंगों में त्रियम्बकेश्वर भी एक है और नासिक शहर से लगभग 30 कि.मी. दूर है। मेरी ट्रेन लेट हो गयी और शाम 4 बजे नासिक पहुँची और मैंने यहाँ से सीधे पंचवटी के लिये ऑटो ले लिया, यहाँ पहुँचकर सिंहानिया धर्मशाला में एक कमरा किराये पर लिया और नहाकर घूमने निकल पड़ा। गोदावरी के घाट पर बहुत सारे विराट वट के पेड़ हैं। वनवास काल में भगवान श्री राम ने माता सीता और लक्ष्मण जी के साथ यहां निवास किया था और शायद इसीलिए इसका नाम पंचवटी पड़ा। यहां बहुत सारे मंदिर हैं जिनमें से प्रमुख हैं, कालाराम मंदिर, सीता गुफा, लक्ष्मण मंदिर, सुन्दरनारायण मंदिर और कपिलेश्वर महादेव मंदिर और यहाँ से कुछ ही दूरी पर तपोवन भी है पर समय के अभाव में मैं वहाँ नहीं जा पाया। इस समय आम और जामुन का मौसम था और पंचवटी के घाटों पर आराम से बैठकर अल्फ़ान्सो आमों का लुत्फ़ लिया। यहाँ के जामुन भी बहुत बड़े और स्वादिष्ट थे और साथ ही साथ बहुत ही बढ़ियां अमरुद भी इस मौसम में आ रहे थे तो इन सब को पैक कराकर और खाना खाकर मैं वापस धर्मशाला आ गया।

अगली सुबह तीन बजे उठा, साढ़े चार बजे तक बस स्टैंड पहुँच गया जो पंचवटी से पाँच कि.मी. दूर है। मैं थोड़ा खुशकिस्मत रहा कि निकलते ही मुझे स्टैंड के लिए सीधी बस मिल गयी क्योंकि इतनी सुबह वहाँ ऑटो भी नहीं चलते हैं। बस स्टैंड पर त्रियम्बकेश्वर जाने के लिए बहुत सवारियां थीं और कुछ ऑटो भी जा रहे थे पर अभी कोई बस नहीं थी। लगभग 15 मिनट बाद बस मिली और उसने साढ़े पाँच बजे तक त्रियम्बक पहुंचा दिया। बस स्टैंड मंदिर के एकदम पास ही है और अभी यहाँ ज्यादा बड़ी लाइन नहीं थी। बाहर ही बहुत सी प्रसाद और पूजन सामग्री की दुकानें सजी हुई थीं और यहीं पता चला कि गर्भगृह में दर्शनों का समय बस एक घंटे ही है और वह भी सवेरे छः से सात बजे का और वहां एक विशेष प्रकार का वस्त्र, जिसे पीताम्बरी कहते हैं, पहन कर ही जा सकते हैं। यहां गर्भ गृह में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है, सुनकर थोड़ा विचित्र लगा।

पीताम्बरी एक विशेष प्रकार की लम्बी पीले रंग की धोती होती है जिसे दुकान वाले ही पहनाते हैं और बस इसी को पहन कर ही जाने की अनुमति है, आप को अपने अन्य सारे वस्त्र उतारने पड़ते हैं। दुकान वालों को इसे पहनाने में महारत है और वह इसे इस प्रकार से बांध देते हैं कि विश्वास हो जाता है कि यह

*यात्रा लेखक

खुलेगी नहीं। पीताम्बरी पहन कर और हाथों में जल भरा कलश, जो मैं घर से ही लाया था, लेकर मैं दर्शनों के लिए लाइन में लग गया। अभी लगभग सौ आदमी लगे थे और छः बज रहे थे पर लाइन धीरे–धीरे बढ़ रही थी। यहां वहां नजर आते पंडा लोगों को देख कर कुछ हैरानी जरूर हुई। यहां पंडे शीघ्र दर्शन का लालच देकर अपनी ओर खींच रहे थे, इनके पास पीताम्बरी से लेकर पूजा सामग्री तक सारी व्यवस्था मौजूद थी। इनके लिए कोई नियम लागू नहीं होते हैं यह लोग जब चाहें, जैसे चाहें मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करा सकते हैं।

बहरहाल, लाइन धीरे–धीरे आगे बढ़ रही थी और पौने सात तक मैं मंदिर के मुख्य भवन तक पहुंच गया जहाँ से गर्भगृह साफ़ नजर आ रहा था। दूर–दूर से आए बहुत से लोगों को इस पीताम्बरी के नियम के बारे में मालूम न होने से वे अन्दर नहीं जा पा रहे थे और गर्भगृह के द्वार से ही दर्शन करने के लिए ही विवश थे। शिवलिंग थोड़ा नीचे की ओर होने के कारण द्वार के सामने एक शीशा भी लगा है जहाँ से आप दर्शन कर सकते हैं पर इससे प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है क्योंकि शिवलिंग के चारों ओर भक्तों का ताँता लगा रहता है और इसके कारण दर्शन नहीं हो पाते हैं। यह सब देखकर मुझे अच्छा नहीं लगा, भोले नाथ जो अवढरदानी हैं और भक्तों पर अति शीघ्र प्रसन्न होते हैं और उनकी हर प्रकार की इच्छा की पूर्ति करते हैं उनके दर्शनों पर इस प्रकार की पाबंदी और नियम ?

प्रभु की कृपा से सात बजे से थोड़ा पहले मैं गर्भगृह के द्वार पर पहुँच गया, शीश नवाया और अन्दर प्रवेश किया। यहाँ पर शिवलिंग थोड़ा नीचे की ओर है और वास्तव में तीन छोटे शिवलिंग हैं जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतीक माना जाता है और शायद इसीलिए इस का नाम त्रियम्बकेश्वर पड़ा। गर्भगृह में बहुत लोग नहीं थे पर आप शांति से जल न चढ़ा पायें इसकी पूरी व्यवस्था पंडा सँभालते हैं, ये यूँ ही फालतू में चिल्लाते रहते हैं और इन्हें फर्क नहीं पड़ता कि ये किस पर चिल्ला रहे हैं और कहाँ बैठे हैं, अन्यथा ज्योतिर्लिंग में कोई सज्जन व्यक्ति तो चिल्लाने का साहस नहीं कर सकता है। खैर इनकी चिल्लाहट से बेपरवाह मैंने भगवान भोलेनाथ को जल अर्पित किया और श्रद्धा से नमन किया और दर्शनों के लिए कोटि–कोटि धन्यवाद् दिया। गर्भगृह से बाहर आकर थोड़ी देर ध्यान की अवस्था में बैठा और फिर परिक्रमा कर बाहर आ गया।

समुद्र तल से लगभग 600 मीटर की ऊँचाई पर होने के कारण नासिक में मौसम सुहावना बना रहता है और त्रियम्बक तो और भी ऊँचाई पर स्थित है और इसके ठीक पीछे है पवित्र ब्रह्मगिरी पर्वत जो पवित्र गोदावरी का उद्गम स्थल है। समुद्रतल से लगभग 1200 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह पर्वत भगवान शिव का ही विराट स्वरुप माना जाता है। यह स्थान अक्सर बादलों से घिरा रहता है और मंदिर से लगभग दो कि.मी. दूर है। रास्ते में बिक रहे जामुनों का आनंद लेता हुआ मैं आधे घंटे में इसके बेस तक पहुँच गया पर इसके पहले रास्ते में कुशावर्त तीर्थ मिला जहाँ पहले स्नान करके फिर लोग मंदिर में दर्शन करते हैं और यह कुम्भ मेले के दौरान स्नान का प्रमुख कुंड है।

कुशावर्त कुण्ड और पीछे दिखता ब्रह्मगिरी पर्वत

थोड़ी देर में मैं ब्रह्मगिरी के बेस तक पहुँच गया और और चढ़ाई प्रारंभ की। पहले आधे कि.मी. का रास्ता आसान है और ज्यादा चढ़ाई नहीं है, मौसम अच्छा है और जगह–जगह निम्बू पानी की छोटी–छोटी दुकानें हैं। थोड़ी देर बाद रास्ता दो भागों में विभाजित हो जाता है, जगह का नाम है गंगद्वार। यहाँ से अगर आप दाहिने जायेंगे तो महर्षि गौतम गुफा, गोरखनाथ गुफा और राम–लक्ष्मण कुंड पड़ेंगे और अगर आप सीधी चढ़ाई चढ़ते जाएंगे तो पर्वत के ऊपर पहुँच जाएंगे।

आगे खड़ी सीढियाँ हैं जो थोड़ी फिसलन भरी भी थीं और जगह जगह बैठे उत्पाती बंदरों के कारण चढ़ना और मुश्किल हो गया था। रास्ते में आपको लोग आते जाते दिख जायेंगे जिनमे से अधिकतर स्कूल–कॉलेज जाने वाले युवा हैं वहीं कुछ तीर्थ यात्री भी हैं। लगभग एक कि.मी. की सीधी चढ़ाई के बाद आप एक सपाट स्थान पर पहुँचते हैं और इसकी सुन्दरता आपको मंत्र मुग्ध कर देती है। चारों ओर हरी–भरी घास, तरह–तरह के फूल और दूर तक दिखता नज़ारा उसपर हल्की फुहारें और ठंडी हवा, मन जैसे यहीं ठहर गया हो। कुछ देर यहीं प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का आनंद लिया और फिर चलना आरंभ किया। आगे की चढ़ाई में सीढियाँ नहीं हैं बस घास के मैदानों से होते हुए हल्की चढ़ाई है और 15–20 मिनट बाद आप इसके ऊपर पहुँच जाते हैं।

हरियाली से भरपूर ब्रह्मगिरी की ओर जाता रास्ता।

यहां भी एक सपाट मैदान मिला और भीषण आंधी जैसी ठण्डी हवाओं ने स्वागत किया, जो इतनी तेज़ थीं कि खड़ा भी होना मुश्किल था और लगभग सभी लोग किसी न किसी सहारे को थामे हुए थे। यहां का नज़ारा अनोखा था दूर तक फैली वादियाँ, गोदावरी नदी, अंजनी पर्वत और मीलों दूर तक के नज़ारे, आप चारों ओर का दृश्य देख सकते हैं। इसी पहाड़ी के एक ओर है गोदावरी का उद्‌गम और मंदिर वहीं दूसरे छोर पर दाहिनी ओर है प्राचीन शिव मंदिर। इस पर्वत शिखर के चारों ओर फैली घाटियों को देखकर ही मैं समझ गया कि यहां ऐसे ही हवाएं चलती होंगी, शायद मानसून ने इनकी तीव्रता को और भी बढ़ा दिया था। लगभग 1200 मीटर की ऊंचाई पर हवाएं न केवल तीव्र, अपितु ठण्डी भी थी। कुछ देर यहीं पर हवा के कम होने की प्रतीक्षा की लेकिन और यहां ज्यादा देर तक बैठना संभव नहीं था, इसलिए पास ही पड़ी लोहे की एक रॉड उठाकर उसके सहारे गोदावरी मंदिर की ओर बढ़ चला।

ब्रह्मगिरी पर्वत की ओर बढ़ते हुए

पास से यह पर्वत कुछ ऐसा दिखता है

अभी आधा ऊपर ही आये थे और सामने वाले पर्वत को चढ़ना बाकी था

ऊपर से नजर आता त्रिंबक का विहंगम दृश्य, दूर अंगूठे जैसा पर्वत भी दिख रहा है

त्रियम्बक के दूसरी और का दृश्य, थोड़ा नीचे दाहिनी ओर प्राचीन शिव मंदिर भी दिख रहा है

पर्वत के ऊपर आकर भी एक पर्वत शेष रह जाता है जो आप नहीं चढ़ सकते हैं

इस पहाड़ी से निकलकर गोदावरी कई स्थानों पर प्रकट होती है और पुनः इसी पहाड़ी के अन्दर चली जाती है, इसकी बहुत सी धाराएं हैं और इनके अलग–अलग नाम हैं। मंदिर में यह एक गाय के मुख से निकलती है इसलिए इसे गंगा भी कहा जाता है। पास ही माँ कोलंबीका का मंदिर स्थित है, यहां बंदरों की भरमार है और उनसे बचते हुए दर्शन किए। पहाड़ी के दूसरे छोर पर स्थित भगवान महादेव मंदिर को प्रस्थान किया जो यहाँ से 250 मीटर की दूरी पर है। अभी बादल घने हो गए थे, फुहारें पड़ने लगी थीं और हवा और ठण्डी हो गयी थी, बन्दर अलग परेशान कर रहे थे और फिलहाल इस रास्ते पर मै अकेला ही था, किसी तरह इन सब से बचते–बचाते भगवान के मंदिर पहुँचा। यह एक प्राचीन मंदिर है जो शिवलिंग देखने से ही समझ आ जाता है, भगवान आशुतोष को जल अर्पित कर कुछ देर शांति से प्रार्थना की और फिर यहीं थोड़ा विश्राम किया। फुहारें थमती न देख थोड़ी देर बाद यहाँ से प्रस्थान किया और गंगद्वार दर्शनों के लिए बढ़ चला। यहाँ निम्बू पानी पिया लगभग आधे कि.मी. बाद फिर चढ़ाई आरंभ हुई और गंगद्वार पर पहुँच कर ख़त्म हुई, रास्ते में मजेदार पकौड़ी और चाय का आनंद लिया और लगभग 45 मिनट में वापस गंगद्वार आ गया।

गोदावरी पहाड़ी के शिखर पर स्थित अपने उद्गम स्थल से प्रकट होकर यहां पुनः दर्शन देती है और फिर पर्वत के अन्दर चली जाती है, पास ही कोलंबीका देवी और दुर्गा माता का भी मंदिर है। यहाँ से और आगे दाहिने ओर महर्षि गौतम की गुफा है जिसमे 108 छोटे शिवलिंग हैं और इससे थोड़ी दूर पर ही स्थित है गुरु गोरखनाथ गुफा।

यहाँ से उतरने पर राम कुंड और लक्ष्मण कुंड हैं पर सफाई के अभाव में अव्यवस्था के शिकार हैं खासकर यहाँ के दुकानदार ही इन

पौराणिक कुंडों में गंदगी फैलाते हैं। इन कुण्डों की सफाई और देखरेख की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। रास्ते में जगह–जगह बजरंगबली के भी मंदिर हैं। थोड़ी देर बाद मैं नीचे आ गया, आना–जाना मिलाकर लगभग आठ – नौ कि.मी. का सफ़र तय किया, घड़ी में समय देखा तो 12 बज रहे थे, मुझे अभी एक और ऐसी ही यात्रा की शुरुआत करनी थी इसलिए जल्दी से खाना खाया और वापिस नासिक जाने वाली बस में बैठ गया।

अंजनेरी पर्वत

त्रियम्बक से पांच कि.मी. है अंजनेरी जिसकी पहचान है अँगूठे जैसा पर्वत जो ब्रह्मागिरी से भी नज़र आता है, मैंने बस वाले को पहले ही बता दिया था और 10 मिनट बाद उसने वहाँ उतार दिया। पहले मैं आपको बता दूं कि मैं यहाँ क्यों जा रहा हूँ। इस पर्वत के बारे में मान्यता है कि यहां अंजनी माता ने घोर तपस्या की थी और कुछ लोग इस स्थान को हनुमान जी के जन्म से भी जोड़कर देखते हैं तो इसी जिज्ञासा में मैंने यहाँ आने का निर्णय किया था। हाईवे से दाहिने हाथ पर एक मोड़ पर एक कच्ची सड़क जाती हुई दिखती है। मैंने भी चलना आरम्भ किया, धीरे–धीरे सड़क पर्वत की ओर बढ़ने लगी और एक बजे की धूप में चढ़ाई थोड़ी कठिन लगने लगी। कुछ लोग अपने–अपने साधन से जा रहे थे पर कोई ऑटो या टैक्सी नहीं दिख रही थी और तो और रास्ता बताने वाला भी कोई नहीं दिख रहा था। लगभग दो कि.मी. की चढ़ाई के बाद एक मंदिर दिखा, मंदिर नया बना ही दिख रहा था पर परिसर बड़ा था, ऊंचाई पर होने के कारण यहां का वातावरण बड़ा शांत और सुन्दर था जिससे बड़ी प्रसन्नता हुई। मंदिर में माता अंजनी और हनुमान जी की प्रतिमाएं है, दर्शन उपरांत पुजारी जी ने बताया अभी तीन कि.मी. का रास्ता और है, उसके बाद अंजनी पर्वत के लिए सीढियाँ मिलेंगी। मुझे जाना तो था ही इसलिए ज्यादा कुछ सोचे बिना चलना शुरू किया और आधे घंटे बाद एक जगह नजर आयी जहां बहुत से वाहन खड़े थे और चाय पकौड़ी और निम्बू पानी की कुछ दुकानें थीं। पूछने पर पता चला कि यही पर्वत का बेस है वैसे यह जगह भी बहुत ऊंचाई पर है और अँगूठे की आकृति वाला पर्वत यहाँ से काफी नीचे छूट गया था। निम्बू पानी पिया और थोड़ी देर आराम किया, पानी वाले ने बताया कि लगभग पाँच कि.मी. चलना है। उसकी बात सुन कर मैं थोड़ा घबरा गया क्योंकि ढाई बज रहे थे, बारिश का मौसम था और रास्ते का कुछ पता नहीं था और मेरी चिंता दूरी न होकर समय था कि शाम से पहले वापस आ पाऊँगा या नहीं। ''चिंता मत करो आप दो – ढाई घंटे में वापस आ जाओगे, निश्चिंत जाओ।'' यह बात सुनकर थोड़ा बल मिला और चढ़ना शुरू किया।

सीढियां एकदम खड़ी और काफी ऊँची – ऊँची हैं। चार पांच कदम में ही साँस फूल रही थी। सीढियों

अंगूठे जैसा दिखता पर्वत; हाईवे के पास

के इर्द गिर्द ही हनुमान जी की छोटी–छोटी प्रतिमाएं हैं और कई गुफाएँ भी हैं जिससे इस जगह की प्राचीनता का पता चलता है। लगभग डेढ़ कि.मी. की चढ़ाई के बाद मैं इस पर्वत के ऊपर पहुँच गया; बेहद खूबसूरत जगह, लगभग सपाट, हरे–भरे घास के मैदान, वृक्ष, दूर–दूर तक फैलीं पर्वत मालाएं और ताज़ी ठण्डी हवा, मन एकदम हल्का हो गया था और कुछ देर मैं यूँ ही बैठा रहा। यहाँ से एक ओर ब्रह्मगिरी पर्वत और दूसरी ओर नासिक शहर दिख रहा था। इस जगह की सुन्दरता देखकर ऐसा लग रहा था कि प्राचीन काल में ये निश्चय ही तपोभूमि रही होगी।

यहाँ से दूर कोई एक कि.मी. पर एक छोटा सा मंदिर दिख रहा था जिसे देखकर मन को प्रसन्नता मिली कि हो न हो यही माता का मंदिर है और उस ओर चलना आरंभ किया। रास्ता पथरीला और उबड़ खाबड़ है और कोई 20 मिनट में मैं वहां पहुंच पाया। यह वास्तव में एक छोटी मठिया है और इससे लगी हुई एक सुन्दर झील भी पास में ही है जिसके किनारों पर बकरियाँ चर रही थीं। मंदिर अंजनी माता का ही है और इसमें बाकी देवताओं की भी प्रतिमाएं हैं, मंदिर में पूजा कर पुजारी जी से आशीर्वाद लिया तब उन्होंने बताया ''मंदिर इस पर्वत के ऊपर है, जाने के लिए सीढियां हैं आराम से जाना।'' मंजिल अभी दूर है और सामने एक पर्वत की और इशारा किया जिसमे बादलों ने डेरा जमाया हुआ था।

इतनी ऊंचाई पर आने के बाद मैंने सोचा भी नहीं था कि मुझे एक और पर्वत चढ़ना पड़ेगा जो लगभग ब्रह्मगिरी पर्वत जितनी ही ऊंचाई पर है और सामने वाला पर्वत 100 मीटर ऊंचा लग रहा था। अब कुछ यात्री मिल गए थे।

अभी आधी दूर ही आये थे माता का मंदिर सामने वाले पर्वत के ऊपर था

थोड़ी देर बाद सीढियां शुरू हो गई एकदम सीधी और ऊँची पर साइड में रेलिंग लगी थी इसलिए सुरक्षित महसूस हो रहा था। धीमे – धीमे चढ़ते हुए पर्वत शिखर पर पहुंचे और पहुंच कर थोड़ा आश्चर्य हुआ मुझे लगा था कि इसके ऊपर ज्यादा जगह नहीं होगी और कहीं किनारे पर मंदिर होगा पर यह तो सपाट निकला और वहां पता चला कि अभी और चलना है। पर चलें कहां कोहरे के कारण कुछ दिखाई नहीं दे रहा था और नीचे जहाँ मौसम अच्छा था उसकी तुलना में यहां बेहद काले बादलों ने डेरा जमाया हुआ था मानो हमारे आने का इंतज़ार कर रहे हों।

पगडंडियों के सहारे हमने बढ़ना शुरू किया ही था कि एकदम इंद्रदेव बरस पड़े और इतनी जोर से बरसे कि संभलने का मौका ही नहीं मिला?..... मोबाइल, पर्स सब भीग गया। मेरे पास एक बैक पैक था जिसे पॉलिथीन में भर कर जल्दी से अन्दर किया और पुनः चलने का प्रयास किया पर जाएं तो किधर कुछ नजर नहीं आ रहा था, एक तो वैसे ही ठण्डा मौसम ऊपर से बारिश, कंपकपी छूटने लगी थी।

खैर किसी तरह चलना जारी रखा और कुछ देर बाद एक छोटा सा परिसर नजर आया जिसके नीचे लोग जमा थे। पास जाकर देखने पर मालूम पड़ा कि यही अंजनी हनुमान मंदिर है जो एक मठिया जितना बड़ा था और चबूतरे पर लोग बारिश बंद होने की राह देख रहे थे। मंदिर के दर्शन मात्र से सारी थकान मिट गयी और मन आनंद से सराबोर हो गया, बारिश के कारण तन भी धुल गया जो एक तरह से अच्छा ही हुआ। प्रसाद के रूप में थोड़े माला फूल लिए और अन्दर प्रवेश किया। मंदिर में हनुमान जी बाल रुप में हैं और अंजनी माता की गोद में बैठे हैं। प्रतिमाएं

अंजनी माता और बाल हनुमान मंदिर

गेरुए रंग में रंगी हैं और गणेश जी की भी प्रतिमा है। पूजा–अर्चना कर कुछ क्षण शांति से अन्दर व्यतीत किए और फिर माथा टेककर बाहर आ गया। अब तक बारिश बंद हो चुकी थी पर धुंध मौजूद थी इस ऊंचाई पर बस यही एक मंदिर है और चारों ओर बिल्कुल शांति है अगर मौसम अच्छा हो तो यह स्थान ध्यान के लिए अति उत्तम जगह है।

ऐसे स्थानों पर अक्सर लोग नहीं आते हैं क्योंकि पहले तो जानकारी का अभाव और दूसरा थोड़ी चढ़ाई पर भगवान का नाम जपते हुए रास्ता कब तय हो जाता है इसका पता नहीं चलता। मंदिर के बाहर तीन चार स्थानीय लड़के भी आ रहे थे और हम बातचीत करते हुए इस पर्वत से नीचे उतर आए। नीचे जब झील के पास आए तो देखा धूप खिली हुई है और मौसम एकदम साफ़ है इससे जल्दी ही कपड़े सूख गए और आधे घंटे के बाद हम वापस पहाड़ी के बेस पर पहुँच गए। घड़ी में समय देखा तो साढ़े पाँच बज रहे थे मतलब तीन घंटे लगे। यहाँ मैं चाय पीने लगा दो लड़कें भी वहां चाय पी रहे थे उनके पास बाइक थी और नासिक जा रहे थे और मुझसे भी साथ चलने को कहा। मैंने भी हाईवे तक साथ चलने की हामी भर दी जिससे मुझे पांच कि.मी. पैदल चलने से राहत मिली। हाईवे पर इन्हें विदा किया और बस पकड़कर वापस सात बजे तक होटल पहुँच गया। जल्दी से कपडे बदले, खाना खाया और बैग रखा और लेट गया। पीठ एकदम जकड़ गयी थी और कमर दर्द करने लगी थी, आज बहुत समय बाद मैं इतना चला या कहा जाए कि चढ़ाई की थी। सब मिलाकर 23–24 कि.मी. चला था उसमे से भी ज्यादातर चढ़ाई थी पर भगवान की कृपा से शक्ति मिलती रही और जब दिन की शुरुआत में ही बाबा भोले के दर्शन हो जाएं तो फिर कोई कष्ट हो भी नहीं सकता।

ब्रह्मगिरी और अंजनेरी ऐसे स्थान हैं जहाँ आकर इस जगह को और करीब से जानने का अवसर मिलता है और आपको वास्तव में अच्छा लगता है वरना तो आजकल हम लोगों का ज्यादातर समय बस रास्ता काटने में ही निकल जाता है। ऐसे स्थानों पर आकर एक आनंद सा मिलता है और यात्रा का उद्देश्य पूरा होता है अतः मेरा सबसे यही अनुरोध है कि यदि संभव हो तो थोड़ा अतिरिक्त समय ऐसे स्थानों के लिए भी अवश्य निकालें।

भीमाशंकर

अगली सुबह मैं चार बजे उठा और नासिक सी बी एस बस स्टैंड पहुँच गया। यहां से पुणे के लिए बसें जाती हैं, आज का मेरा कार्यक्रम भीमाशंकर जाने का था। नासिक – पुणे हाईवे पर नासिक से 148 कि.मी.

आने पर मंचर है जहां से भीमाशंकर का रास्ता कटता है। मंचर से इसकी दूरी 50 कि.मी. है वहीं पुणे से मंचर की दूरी लगभग 60 कि.मी. है। भीमाशंकर भगवान शंकर के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है और महाराष्ट्र में स्थित सहयाद्री पर्वतमालाओं में 1050 मीटर की ऊंचाई पर है। मैं 10 बजे ही मंचर पहुँच गया था और यहाँ से भीमाशंकर जाने वाली बस में बैठ गया और थोड़ी देर बाद बस घुमावदार पहाड़ी रास्तों पर दौड़ने लगी। रास्ता बहुत सुन्दर है, आस–पास सदाबहार वन हैं और बीच में घास के मैदान और साथ ही बहती है घोड़ नदी। धीरे–धीरे ऊंचाई बढ़ने लगती है और हवा ठण्डी होने लगी ओर कुछ देर बाद बस पहाड़ी के शिखर पर पहुँच जाती है और आगे का रास्ता सपाट है।

ऊपर मौसम एकदम साफ़ था, रास्ते के दोनों ओर धान के खेत थे और चारों ओर जबर्दस्त हरियाली कुछ देर ऐसे ही बस चलती रही और फिर थोड़ी देर बाद बस घने वन में प्रवेश कर गई। यहीं से भीमाशंकर वाइल्डलाइफ सेंचुरी प्रारंभ होती है, वन इतने घने हैं कि थोड़ी देर बाद दिखना ही बंद हो जाता है और ड्राईवर को लाइट जलानी पड़ती है। इतने में कहीं से काले बादल आ गए और चारों और कोहरा छा गया, एकदम से रात जान पड़ने लगी और फिर थोड़ी देर में बस स्टैंड आ गया।

कैसे जाएँ ...

भीमाशंकर पुणे से 110 कि.मी. और नासिक से 200 कि.मी. दूर है अगर आप मुंबई से सार्वजानिक परिवहन से आएंगे तो भी आपको पुणे आना पड़ेगा। यहाँ कोई होटल नहीं है बस कुछ मकान और दुकाने हैं, निकटतम होटल और रिसोर्ट 30 –35 कि.मी. दूर हैं। यहां हर मौसम में दिन का तापमान 20 से 30 डिग्री के बीच रहता है।

बूंदाबांदी के बीच एक दुकान पर बैग रखा, प्रसाद लिया और एक लोटे में जल भरकर दर्शनों की लाइन में लग गया। मंदिर थोड़ा निचाई पर है और एक सीढ़ीनुमा चौड़ा रास्ता मंदिर की ओर ले जाता है। रास्ता पूरी तरह से ढका हुआ है इसलिए बारिश में भी कोई असुविधा नहीं होती है। मैं लगभग 12 बजे भीमाशंकर पहुंचा था और आज रविवार होने के कारण काफी लोग आ गए थे और लाइन काफी धीमे बढ़ रही थी। इन्हीं सीढ़ियों के दोनों ओर प्रसाद की भी दुकानें हैं जहाँ बहुत अच्छा खोया मिलता है। इसी बीच भीषण बारिश होने लगी जिससे मंदिर परिसर में अन्दर तक कोहरा भर गया और मौसम बहुत ठण्डा हो गया। खैर धीमे–धीमे ही सही लाइन आगे सरकने लगी और लगभग आधे घंटे बाद मैं मुख्य भवन तक आ गया, जगह–जगह पर लगी टीवी के माध्यम से लाइव दर्शन हो रहे थे। अभी शिवलिंग को कवच पहनाया हुआ था और भक्तगण प्रसाद–जल आदि अर्पित कर रहे थे। थोड़ी दूर और आगे बढ़ने पर मैं लगभग गर्भ गृह के बिल्कुल सामने आ गया।

जब बस 15 –20 लोग ही आगे बचे तभी लाइन रुक गयी, पता चला कि आरती होने वाली है और थोड़ी देर में आरती शुरू हो गई। बारिश अब और भी तेज़ हो गयी थी और अब इसको एक घंटे से ज्यादा हो गया था और जब आरती और घंटे– घड़ियाल की मधुर ध्वनि इसमें मिल गयी तो एक अलग ही वातावरण का निर्माण हुआ। थोड़ी देर बाद लाइन फिर बढ़नी शुरू हुई और मैंने अन्दर प्रवेश किया, भगवान की कृपा से शिवलिंग के मूल स्वरुप के दर्शन हुए क्योंकि आरती के बाद कवच हटा लिया गया था। यहाँ आपको भोलेनाथ को जल, पुष्प आदि अर्पित करने के लिए पर्याप्त समय मिलता है। अच्छी बात यह है कि आपको कोई बाहर नहीं खींचता। भगवान को जल

एवं पुष्प अर्पित कर माथा टेका और बाहर आ गया, थोड़ी देर शांति से ध्यान किया और फिर परिसर में बने दूसरे मंदिरों के दर्शन किए जिनमे से प्रमुख हैं श्री राम–जानकी, लक्ष्मण मंदिर और हनुमान मंदिर। माँ दुर्गा का भी यहाँ बहुत सुन्दर मंदिर है।

भीषण बारिश अभी भी जारी थी और अच्छी बात थी कि मेरे पास रेन कोट था, वापस सीढियाँ चढ़ के देखा तो लाइन बहुत लम्बी हो गई थी और लगभग रोड़ तक पहुँच गई थी, वापस आकर खाना खाया और बारिश बंद होने का इंतजार करने लगा। असल में मेरी इच्छा आज यहाँ रूक कर भीमाशंकर सेंचुरी और ''हनुमान लेक'' जाने की थी और सोचा था अगर समय मिला तो गुप्त भीमाशंकर भी जाऊँगा पर अब ख़राब मौसम के कारण वहाँ जाना संभव नहीं लग रहा था। हनुमान लेक पास ही लगभग आधे कि.मी. दूर है पर लगातार होती बारिश ने वहां भी नहीं जाने दिया। यहाँ पर कोई होटल या धर्मशाला नहीं है, मैं समझ गया की शायद मुझे एक बार और आना पड़ेगा और वापस बस स्टैंड चल दिया। बस अड्डे पर कोई बस नहीं थी पूछने पर पता चला कि बहुत ज्यादा वाहन हो जाने के कारण केवल छोटी गाड़ियों को ही आने दिया जा रहा है और बसों को दो कि.मी. पीछे ही रोक दिया गया था।

मेरे पास ठीक–ठाक वजनी बैग था और आगे हल्की चढ़ाई थी पर किया भी तो क्या जाए ? जब बारिश थोड़ी हल्की हुई तो टैक्सी और कारों के बीच किसी तरह जगह बनाते चलना आरंभ किया और आधे घंटे की यात्रा के बाद एक मोड़ पर पहुँचा जहाँ एक बस खड़ी थी। दिल को बड़ी तसल्ली मिली और जय भोले बोलकर मैं बस में सवार हो गया, बस पुणे की थी तो मैंने कहा पुणे ही सही। बस शाम सात बजे बस शिवाजी नगर बस अड्डे पहुँच गयी जहां मैंने होटल लिया और अगली सुबह मुंबई के लिए प्रस्थान किया।

त्रियम्बकेश्वर

त्रियम्बकेश्वर नासिक से 30 कि.मी. दूर है, अंजनेरी पर्वत नासिक–त्रियम्बकेश्वर हाईवे पर से पाँच कि.मी. पहले है और मंदिर तक 8–9 कि.मी. का ट्रेक है। अगर आप अपने वाहन से आते हैं तो इसके बेस तक आ सकते हैं जहाँ से चार कि.मी. का ट्रेक है। ब्रह्मगिरी त्रियम्बकेश्वर मंदिर से लगभग डेढ़ कि.मी. दूर है और यहां से 3–4 कि.मी. पैदल का रास्ता है। त्रियम्बकेश्वर में रुकने के लिए होटल उपलब्ध हैं।

ऊं नमः शिवायः

श्री विनीत सोनी की यह यात्रा किसी रोमांचकारी पर्यटन से कम नहीं है। इस लेख तथा चित्रों के लिए 'अतुल्य भारत' उनका आभारी है।

जिंदगी वक्त के बहाव में है, यहां हर आदमी तनाव में है
उन्होंने लगा दी पानी पर तोहमत, यह नहीं देखा छेद तो नाव में हैं

हमारा स्वास्थ्य

सेंधा नमक : कहाँ चला गया?

—कुमार सत्यम

सेंधा नमक शरीर के लिए सबसे उपयुक्त क्षारीय पदार्थ है, जो भोजन के प्रमुख अवयव के रूप में एक समय प्रयुक्त हुआ करता था। यह सेंधा नमक बनता कैसे है? सबसे पहले हम यह जानते हैं कि नमक मुख्यतः कितने प्रकार होते हैं। एक होता है समुद्री नमक, दूसरा होता है सेंधा नमक (rock salt) सेंधा नमक बनाया नहीं जाता बल्कि पहले से ही बना होता है। पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में खनिज पत्थर के नमक को 'सेंधा नमक' या 'सैन्धव नमक', 'लाहौरी नमक' आदि के नाम से जाना जाता है। जिसका मतलब है 'सिन्धु अथवा सिंध के इलाके से आया हुआ'। वहाँ नमक के बड़े बड़े पहाड़ तथा सुरंगे हैं। वहाँ से यह नमक आता है। अक्सर मोटे मोटे टुकड़ों में होता है, आजकल पिसा हुआ भी आने लगा है। यह हृदय के लिये उत्तम, दीपन और पाचक, त्रिदोष शामक, शीतवीर्य अर्थात ठंडी तासीर वाला, पचने में हल्का है। इससे आमाशय में पाचक रस बढ़ते हैं।

भारतीय भोजन से सेंधा नमक कैसे गायब कर दिया गया? क्या आप जानते हैं कि 1930 से पहले भारत में कोई भी समुद्री नमक नहीं खाता था। भारत में नमक के व्यापार में विदेशी कंपनियां आज़ादी के पहले से ही आ चुकी थीं। अंग्रेजों की बहुत सी कंपनियों ने नमक बेचना शुरू किया और तब से ही यह सारा खेल शुरू हुआ। विदेशी कंपनियों को नमक बेचना था और बहुत बड़ा लाभ भी कमाना था तो पूरे भारत में एक नई बात फैलाई गई कि आयोडीन युक्त नामक खाओ। भारत में अँग्रेजी प्रशासन द्वारा बहुत पहले से ही भारत की भोली–भाली जनता को आयोडिन मिलाकर समुद्री नमक खिलाया जाता रहा है। आयोडीनयुक्त नामक का इस प्रकार से प्रचार किया गया जैसे कि सभी भारतीयों में आयोडिन की कमी हो गई है। आयोडीनयुक्त नामक को सेहत के लिए बहुत अच्छा और पौष्टिकता से भरपूर बताया गया। ऐसी बातें पूरे देश में प्रायोजित ढंग से फैलाई गई। परिणामस्वरूप आजादी के बाद भी 70 के दशक तक जो नमक दो से तीन रूपये किलो बिकता था, वहीं आयोडीन नमक के नाम पर उसके दाम उछाल मार कर सीधे आठ से दस रूपये प्रति किलो पहुँच गए और आज तो 20 रूपये को भी पार कर गया है।

दुनिया के 56 देशों ने अतिरिक्त आयोडिनयुक्त नमक के इस्तेमाल को लगभग 40 साल पहले ही प्रतिबंधित कर दिया था। आज जर्मनी, फ्रांस, डेन्मार्क में ही नहीं, अमेरिका में भी इस तरह का कोई नमक प्रचलन में नहीं है। डेन्मार्क की सरकार ने 1956 में ही आयोडिनयुक्त नमक प्रतिबंधित कर दिया था। क्यों?

*व्याख्याता, होटल प्रबंध संस्थान, भोपाल

क्योंकि उनके वैज्ञानिकों ने कहा कि हमने 1930 से 1956 तक जनता को आयोडिनयुक्त नमक खिलाया और परिणामस्वरूप अधिकांश लोग नपुंसक हो गए। इससे जनसंख्या इतनी कम होने लगी कि देश के खत्म होने का खतरा हो गया। आयोडीनयुक्त नमक बंद करवा देना चाहिए और सरकार ने आयोडिनयुक्त नमक पर प्रतिबंध लगा दिया।

जबकि 1960 के दशक में देश में लाहौरी नमक मिलता था। यहां तक कि राशन की दुकानों पर भी इसी नमक का वितरण किया जाता था। स्वाद के साथ–साथ स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता था। यह हृदय के लिये उत्तम, दीपन और पाचक, त्रिदोष शामक, शीतवीर्य अर्थात ठंडी तासीर वाला, पचने में हल्का है। इससे आमाशय में पाचक रस बढ़ता है। काला नमक, सेंधा नमक प्रयोग करें क्योंकि यह प्रकृति का बनाया है। सिर्फ बड़ी कम्पनियों के लुभावने विज्ञापनों फेर में समुद्री नमक खाना समझदारी नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि हम समुद्री नमक के चक्कर से बाहर निकलें। अपने स्वास्थ्य का स्वयं ध्यान रखें और बिमारियों से दूर रहें।

लेकिन जब हमारे देश में भी इस आयोडीनयुक्त का धंधा शुरू हुआ, तो एक सज्जन ने कोर्ट में जनहित याचिका से मुकदमा दाखिल किया और कुछ समय तक इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। लेकिन सरकार की इस दलील पर कि बिना आयोडीनयुक्त नमक से घेंघा जैसी बिमारियां हो रही हैं यह प्रतिबंध हटा दिया गया और देश में कानून बना दिया कि बिना आयोडिन का नमक भारत में बिक ही नहीं सकता।

अब किसी भी साधारण व्यक्ति के मन में प्रश्न उठ सकता है कि सेंधा नमक क्या है, यह कैसे बनता है और खानपान में इसका इस्तेमाल क्यों किया जाता है। सेंधा नमक एक प्राकृतिक तथा अपरिष्कृत नमक है। हम इसे कई नामों से जानते हैं जैसे सेंधा, सैन्धवा, लाहौरी या हैलाईट सोडियम क्लोराइड आदि। सेंधा नमक क्या है –दरअसल यह रंगहीन या सफेद तरह का खनिज पत्थर होता है। यह क्रिस्टल पत्थर जैसा होता है। हालांकि कभी–कभी इसमें अन्य खनिज पदार्थों की बहुलता हो जाती है तो इसका रंग हल्का नीला, जामुनी, गुलाबी, नारंगी, पीला या भूरा भी हो सकता है। सेंधा नमक में सोडियम क्लोराइड सबसे प्रमुख घटक है। जिसमें क्रिस्टल के रूप में खनिज पाए जाते हैं। सोडियम के अलावा इसमें फास्फोरस, कैल्शियम, पोटेशियम, लोहा, मैग्नीशियम, जस्ता, सेलेनियम, तांबा, ब्रोमिन, ज़िरकोनीयम और आयोडीन की उच्च मात्रा पाई जाती है। अतः इसे स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभदायक माना गया है।

सेंधा नमक कैसे बनता है ?

सेंधा नमक असल में एक खनिज है जिसे हम हिमालयी सेंधा नमक या गुलाबी सेंधा नमक के नाम से भी जानते हैं। क्योंकि यह विशिष्ट हल्के गुलाबी रंग का होता है। हिमालयी सेंधा एक प्राकृतिक रूप से बनने वाला नमक है। यह अनेक खनिजों में परिपूर्ण होता है। हिमालयी सेंधा नमक घर के उपयोग के लिए किया जा सकता है। इसे मध्यम और छोटे टुकड़ों में काटकर प्रयोग में लाया जाता है। समुद्री नमक की तरह इसका भी इस्तेमाल घर के खाना बनाने में किया जा सकता है। इसे ज्यादातर लोग उपवास में खाते हैं।

सेंधा नमक उच्चतम गुणवत्ता वाले कच्चे प्राकृतिक खनिजों से बना होता हैं। सेंधा नमक एक

स्वाभाविक रूप से खनिज युक्त नमक है और इसे नमक की खानों से काटकर बनाया जाता है। इससे पीसने के बाद यह सफेद और हल्का गुलाबी हो जाता है। वैसे सेंधा नमक सभी नमक के प्रकारों में सबसे अच्छा माना जाता है।

बात बहुत पुरानी नहीं है भारत में आज से 20– 25 वर्ष पहले कोई भी समुद्री नमक नहीं खाता था। अधिकतर लोग सेंधा नमक का ही उपयोग करते थे। सेंधा नमक की शुद्ध ता को एक और बात से पहचान सकते हैं कि सभी भारतीय उपवास तथा व्रत में सब नमक ही खाते हैं। तो यह बात सोचने की है कि जो समुद्री नमक आपके उपवास को अपवित्र कर सकता है वो आपके शरीर के लिए कैसे लाभकारी हो सकता है?

सेंधा नमक के प्रकार

सेंधा नमक दो प्रकार के होते हैं एक श्वेत सैंधवा जो सफेद रंग का सेंधा नमक होता है, दूसरा रक्त सैंधवा जो लाल रंग का सेंधा नमक होता है। इन दोनों में से किसी को भी सेंधा नमक कहा जा सकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से दोनों ही फायदेमंद है और इनका इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाओं में भी किया जाता है। काला नमक भी सेंधा नमक का एक प्रकार है, जिसे आयुर्वेद के अनुसार सफेद सेंधा नमक के बाद इसे अच्छा माना जाता है। फिर भी, सफेद या हल्के गुलाबी रंग के नमक को ही श्रेष्ठ माना गया है।

भारतीय आयुर्वेद में सेंधा नमक बहुत तरह के फायदे बताएं गए हैं। आयुर्वेदिक दवाओं में इसी का उपयोग किया जाता है। यह नमक प्राकृतिक रूप से ही सफेद, गुलाबी, लाल और काले रंग में होता है।

अद्भूत पर्यटन स्थलः खेवरा माइंस

इसका इस्तेमाल 'बाथ प्रोडक्ट' और 'क्राफ्ट' की चीजों में भी किया जाता है। सेंधा नमक के बारे में आयुर्वेद में बताया गया है कि यह आपको इसलिये खाना चाहिए क्योंकि सेंधा नमक वात, पित्त और कफ को दूर करता है। यह पाचन में सहायक होता है और साथ ही इसमें पोटैशियम और मैग्नीशियम पाया जाता है जो हृदय के लिए लाभकारी होता है। यही नहीं आयुर्वेदिक औषधियों में जैसे लवण भाष्कर, पाचन चूर्ण आदि में भी प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार इसे दैनिक उपयोग में लेने की सलाह दी जाती है।

सेंधा नमक से बना लैम्प, नमी को दूर करता है।

सेंधा नमक कहां पैदा होता है और कहां से निकलता है

पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद से 150 कि.मी. दूर पंजाब प्रान्त के झेलम ज़िले में स्थित खेवड़ा में नमक की एक प्रसिद्ध खान है। जहाँ से सदियों से सेंधा नमक खोदकर निकाला जा रहा है। यह कोह ए नमक (नमक पर्वत) की निचली पहाड़ियों में स्थिति हैं और भारतीय उपमहाद्वीप में नमक की सबसे पुरानी लगातार उत्पादन करती आ रही नमक की खानों में से हैं। इसमें 22 करोड़ टन सेंधा नमक का अनुमानित बहुत ही बड़ा भण्डार है। प्रतिवर्ष यहां से लगभग साढ़े चार लाख टन नमक निकाला जाता है। यह खान अभी और 5000 वर्षों तक नमक दे सकती है।

सेंधा नमक के फ़ायदे

सेंधा नमक के उपयोग से रक्तचाप और बहुत ही गंभीर बीमारियों पर नियन्त्रण रहता है। क्योंकि यह अम्लीय नहीं बल्कि क्षारीय है। क्षारीय चीज जब अम्ल में मिलती है तो अम्लीयता निष्क्रिय हो जाती है और रक्त अम्लता खत्म होते ही शरीर के अधिकतर रोग ठीक हो जाते हैं। यह नमक शरीर में पूरी तरह से घुलनशील है।

सेंधा नमक शरीर में अधिकतर पोषक तत्वों की कमी को पूरा करता है। इन पोषक तत्वों की कमी पूरी नहीं होने के कारण ही लकवे (paralysis) का अटैक आने का सबसे बढ़ा जोखिम होता है।

खेवरा माइंसः पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण स्थान

पाकिस्तान के जिस खेवरा माइंस क्षेत्र से रॉक सॉल्ट निकाला जाता है उसे वर्ष 2011 से पर्यटकों तथा आम लोगों के लिए खोल दिया गया था। लोगों को माइंस में घुमाने के लिए यहां एक छोटी इलैक्ट्रिक ट्रेन का इस्तेमाल किया जाने लगा है। माइंस में रॉक सॉल्ट से कई आकर्षक चीजें भी बनाई जाती हैं। पर्यटकों को वह भी दिखाते हुए उनके बारे में बताया जाता है। लोगों की निरन्तर बढ़ती संख्या के कारण इस जगह को अब पूरी दुनिया में जाना–जाने लगा है। इससे पहले बहुत कम लोग इस जगह को जानते थे।

समुद्री नमक के भयंकर नुकसान

आयुर्वेद के अनुसार समुद्री नमक अपने आप में ही बहुत खतरनाक है। क्योंकि कंपनियाँ इसमें अतिरिक्त आयोडीन डाल रही है। साधारण जनता को तो पता ही नहीं कि यह आयोडीन भी दो तरह का होता है एक तो प्राकृतिक (प्रकृति रूप से बना हुआ) में जो नमक में पहले से ही मौजूद होता है। दूसरा होता है उद्योगों में उपयोग किया जाने वाला आयोडीन 'industrial iodine', यह बहुत ही खतरनाक है। समुद्री नमक जो पहले से ही खतरनाक है, उसमें कंपनियां अतिरिक्त industrial iodine डाल कर पूरे देश को बेच रही है। फ़ैक्टरियों में निर्मित इस नमक से हम लोगों को बहुत सी गंभीर बीमरियां मिल रही हैं।

आम तौर से उपयोग में लाया जाने वाला यह समुद्री नमक उच्च रक्तचाप (high Blood Pressure) डाइबिटीज़ आदि गंभीर बीमारियों का भी कारण बनता है। इसका एक कारण यह भी है कि यह नमक अम्लीय (acidic) होता है। इसके सेवन से रक्त अम्लता बढ़ती है और रक्त अम्लता बढ़ने से ही सब खतरनाक रोग आते हैं। यह समुद्री नमक पानी में कभी पूरी तरह नहीं घुलता। क्रिस्टल की तरह चमकता रहता है इसी प्रकार शरीर के अंदर जाकर भी नहीं घुलता और अंत इसी प्रकार किडनी से भी नहीं निकल पाता और पथरी का कारण भी बन सकता है। यही नमक नपुंसकता और लकवा (paralysis) का बहुत बड़ा कारण है। समुद्री नमक से शरीर को कुछ ही पोषक तत्व मिलते हैं और जितने पोषक मिलते हैं उनसे कहीं अधिक अन्य बीमारियां जरूर मिल रही हैं। रक्तचाप अथवा उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोगों को डॉक्टर नमक छोड़कर सेंधा नमक का उपयोग करने की सलाह देते है। आखिर क्यों?

रिफाइण्ड नमक में 98% सोडियम क्लोराइड ही होता है, जो शरीर में पूरी तरह से घुलता नही है और शरीर इसे विजातीय पदार्थ के रुप में रखता है। इस नमक में आयोडीन को बनाये रखने के लिए Tricalcium Phosphate, Magnesium Carbonate, Sodium Alumino Silicate जैसे रसायन मिलाये जाते हैं। यही सब रसायन सीमेंट बनाने में भी इस्तेमाल होते हैं। विज्ञान के अनुसार यह रसायन शरीर में रक्त वाहिनियों को कड़ा बनाते हैं, जिससे रक्त में ब्लॉक्स (थक्का) बनने की संभावना बढ़ जाती है और आक्सीजन के प्रवाह में परेशानी होती है। परिणामस्वरूप जोड़ों का दर्द और गठिया, प्रोस्टेट आदि विकार होते हैं। आयोडीन नमक से शरीर को पानी की जरुरत ज्यादा होती है। क्योंकि 1 ग्राम नमक अपने से 23 गुना अधिक पानी सोखता है और इस प्रकार यह कोशिकाओं के पानी को कम करता है। इस कारण हमें प्यास ज्यादा लगती है।

अब यदि हमें अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना है तो यह आवश्यक है कि यह अतिरिक्त आयोडिनयुक्त समुद्री नमक खाना छोड़े और उसकी जगह सेंधा नमक खाएं। सिर्फ आयोडीन के चक्कर में समुद्री नमक खाना समझदारी नहीं है क्योंकि जैसा हमने ऊपर भी बताया है कि आयोडिन हर नमक में होता है। सेंधा नमक में भी आयोडिन होता है बस फर्क इतना है इस सेंधा नमक में प्राकृतिक आयोडिन होता है। इसके अलावा हमें आलू, अरवी के साथ–साथ हरी सब्जियों से भी काफी आयोडिन मिल जाता है।

अतः यह आवश्यक है कि हम समुद्री नमक के चक्कर से बाहर निकले और प्रकृति प्रदत्त काले नमक, सेंधा नमक प्रयोग करें।

कुंभ – आस्था के पर्यटन

अध्यात्म और संस्कृति का संगम

–संतोष सिल्पोकर

कुंभ मेला भारत में आयोजित किया जाने वाला सबसे बड़ा मेला है। यहाँ पर हिन्दू धर्म के अनुयायी बड़ी संख्या में एकत्र होकर पवित्र नदी में स्नान करते हैं। यह मेला चार विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया जाता है – नासिक में गोदावरी नदी के किनारे, हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे, उज्जैन में क्षिप्रा (शिप्रा) नदी के किनारे और प्रयागराज में (गंगा, यमुना और सरस्वती के) संगम पर। न केवल भारत के हिन्दू बल्कि बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक भी इन तीर्थस्थानों के मेले में शामिल होते है। साधु और संतों की भी कुंभ मेले में भरमार होती है।

कुंभ का प्रचलन और इसका आयोजन कब से आरम्भ हुआ इस बारे में निश्चित रूप से कोई प्राचीन संदर्भ उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन एक पौराणिक संदर्भ अवश्य मिलता है जिसमें ग्रहों की विशेष स्थिति होने पर ही कुंभ होने के संकेत मिलते हैं।

स्कंदपुराण में उल्लेख मिलता है कि –

चन्द्रःप्रश्वणाद्रक्षां, सूर्यो विस्फोटनाद्धौ।
दैत्येभ्यश्च गुरू रक्षां, सौरिदेवेन्द्रजाभ्दयात्।।
सूर्येदुगरूसंयोगस्य, यद्राशौ यत्र वत्सरे।
सुधाकुम्भप्लवे भूमौ भवति नान्यथा।।

अर्थात जिस समय अमृत कुंभ लेकर देवताओं

*संयुक्त निदेशक (रा.मा.), पर्यटन मंत्रालय

और दैत्यों में संघर्ष हुआ, उस समय चंद्रमा ने उस अमृतकलश से अमृत छलकने से रक्षा की और सूर्य ने उस अमृतकलश की टूटने से रक्षा की। देवगुरू बृहस्पति ने दैत्यों से रक्षा की और शनि ने उसे इन्द्रपुत्र जयन्त के हाथों से इसे गिरने नहीं दिया।

कुंभ मेले के आयोजन के बारे में एक पौराणिक कथा प्रचलित है।

दुर्वासा ऋषि ने अपना अपमान होने के कारण देवराज इन्द्र को 'श्री' हीन हो जाने का शाप दे दिया। ऋषि दुर्वासा के अभिशाप के कारण देवताओं की शक्तियां क्षीण होने लगीं थी। तब पुनः शक्तियां प्राप्त करने के लिए उन्होंने भगवान ब्रह्मा और भगवान शिव की आराधना की लेकिन उन्होंने उन्हें विष्णु भगवान से प्रार्थना करने को कहा। भगवान विष्णु ने क्षीरसागर का मंथन करके अमृत निकालने की सलाह दी।

भगवान विष्णु की सलाह पर सभी देवता दैत्यों के साथ संधि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए।

मंथन करने के लिए मंदार पर्वत को मधाणी (मथनी) तथा वासुकी नाग का रस्सी के रूप में उपयोग किया गया था। समुद्र का मंथन करने पर सबसे पहले जल का हलाहल (कालकूट विष) निकला जिसकी ज्वाला बहुत तीव्र थी। हलाहल विष की ज्वाला से सभी देवता तथा दैत्य जलने लगे। इस पर सभी ने मिलकर भगवान शंकर से प्रार्थना की और शंकर जी ने विष पान कर लिया। दूसरी थी कामधेनु , उसके बाद श्वेत रंग का उच्चैश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ मणि, कल्पद्रुम अर्थात कल्पवृक्ष, रंभा नामक एक सुंदर अप्सरा, लक्ष्मी, वारुणी (मदिरा), चन्द्रमा, पारिजात वृक्ष, पांचज्य शंख, धन्वंतरि वैद्य और अंत में अमृत निकला। संभवतः यह ऐसा रसायन रहा होगा जिसको पीने से व्यक्ति हजारों वर्ष तक जीने की क्षमता हासिल कर लेता होगा।

जैसे ही मंथन से अमृत दिखाई पड़ा, दैत्यगुरू शुक्राचार्य वह कुंभा यानि कलश उठाने के लिए आगे बढ़े तो देवता उनकी कुभावना को समझ गए। देवताओं के इशारे पर इंद्र का पुत्र 'जयंत' अमृत–कलश को

लेकर आकाश में उड़ गया। दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत प्राप्त करने के लिए जयंत का पीछा किया और अथक परिश्रम के बाद उन्होंने जयंत को पकड़ लिया लेकिन समझौते के अनुसार दैत्यों को उनका हिस्सा नहीं दिए जाने पर, अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देवों और दैत्यों में बारह दिन तक युद्ध होता रहा। अंत में विवाद को शांत करने के लिए विष्णु जी ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया। इस प्रकार देव–दानव युद्ध समाप्त किया गया।

इस युद्ध में लड़ते–लड़ते अमृत पात्र से अमृत चार अलग–अलग स्थानों पर छलक कर गिर गया। यह स्थान थे प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन। तब से, यह माना गया है कि इन स्थानों पर रहस्यमय शक्तियां उत्पन्न हैं और इसलिए इन स्थानों पर कुंभ मेला लगता है।

ज्योतिषीय महत्व

पौराणिक विश्वास जो कुछ भी हो, ज्योतिषियों के अनुसार कुंभ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुंभ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ीस्थान पर गंगाजल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अंतरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से कुंभ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट मानी जाती है। वैसे तो सभी हिंदू त्यौहार एक समान रूप से बड़ी श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाए जाते है, पर यहाँ अर्ध कुंभ तथा कुंभ मेले के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है।

कुंभ हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुंभ पर्व स्थल हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष और प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के बीच छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुंभ भी होता है। कुंभ के लिए निर्धारित चार स्थानों में अलग–अलग स्थान पर हर तीसरे वर्ष कुंभ का अयोजन होता है। कुंभ के लिए निर्धारित चारों स्थानों में प्रयागराज के कुंभ का विशेष महत्व है।

खगोल गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्रांति के दिन प्रारम्भ होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशि में और बृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रांति के होने वाले इस योग को "कुम्भ स्नान–योग" कहते हैं और इस दिन को विशेष मांगलिक माना जाता है और यहाँ स्नान करना साक्षात स्वर्ग–दर्शन माना जाता है।

कुंभ मेले का इतिहास

कुंभ मेले के आयोजन का प्रावधान कब से आरम्भ हुआ इस बारे में विद्वानों में अनेक भ्रांतियाँ हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार कुंभ की शुरुआत आदिकाल में समुद्र मंथन से ही हो गई थी। क्योंकि मंथन में निकले अमृत का कलश हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक के स्थानों पर गिरा था, इसीलिए इन चार स्थानों पर कुंभ मेला प्रत्येक तीन वर्ष में एक बार कुंभ लगता आया है। 12 साल बाद यह मेला अपने पहले स्थान पर वापस पहुंचता है। कुछ दस्तावेज बताते हैं कि 525 ईसा पूर्व में शुरू हुआ था। कुछ विद्वान चाणक्य और मुद्राराक्षस रचित ग्रंथों का संदर्भ देते हुए, गुप्त काल में कुंभ के सुव्यवस्थित होने की बात करते हैं। परन्तु प्रमाणित तथ्य सम्राट शिलादित्य हर्षवर्धन 617–647 ई. के समय से प्राप्त होते हैं। चीनी यात्री ह्वेंग्सांग ने भी अपनी भारत यात्रा पर

प्रयागराज में बनाई गई टेंट सिटी

कुंभ मेले का उल्लेख किया है। बाद में श्रीमद्जगतगुरु शंकराचार्य तथा उनके शिष्य सुरेश्वराचार्य ने दसनामी संन्यासी अखाड़ों के लिए संगम तट पर स्नान की व्यवस्था कराई। तथ्य चाहे कुछ भी रहे हो, आज कुंभ स्नान हमारे सामने साक्षात पर्व है।

कहा जाता है कि हिंदू धर्मावलम्बियों को अपने जीवन काल में एक बार स्नान अवश्य करना चाहिए। एक कथा के अनुसार, भगवान ब्रह्मा ने एक बार कहा था कि गंगा के पवित्र जल में स्नान करने अथवा एक डुबकी लेने से मनुष्य अपने पापों से मुक्त हो जाता है। धर्मग्रंथों के अनुसार और हिंदु धर्मावलम्बियों का यह भी मानना है कि महाकुंभ के दौरान गंगा नदी में स्नान करने से, उन्हें और उनके पूर्वजों को भी पाप से मुक्ति प्राप्त होती है। महाकुंभ में लाखों श्रद्धालु शामिल होते है, जो पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं।

हर 12 साल बाद प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ में लाखों की संख्या में तीर्थयात्री पवित्र संगम में स्नान करने आते हैं।

पारंपरिक अनुष्ठान

कुंभ की अवधि में अनेक प्रकार के शुभ कर्मो के आयोन का विधान है। लेकिन मुख्य अनुष्ठान में हरिद्वार में गंगा, प्रयागराज में संगम, उज्जैन में क्षिप्रा और नासिक में गोदावरी नदियों के पवित्र तटों पर स्नान करना है। इसके अलावा, इन स्थानों पर इन दिनों हो रही धार्मिक चर्चाओं या सत्संगों में भाग लेना, सामुहिक रूप से भक्ति गीतों का गायन, अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के पश्चात गरीबों को भोजन कराना आदि है। इस विशाल आयोजन के धार्मिक और धर्म निरपेक्ष पहलुओं का अनुभव करने के लिए लोग बड़ी संख्या में कुंभ मेला की यात्रा करते हैं। कुंभ मेले में साधुसंतों के बड़े शिविर लगाए जाते हैं जिनमें सत्संग आयोजित किए जाते हैं और आने वाले भक्तों को बड़े पैमाने पर आध्यात्मिक जीवन के बारे में निर्देश और सलाह दी जाती है।

कुंभ मेला के बारे में कुछ तथ्य

★ कुंभ मेले के पीछे लोककथा यह है कि यह हर 12 साल में आयोजित किया जाता है क्योंकि यह देवताओं और राक्षसों के बीच की लड़ाई के 12 दिन और 12 रातों को दर्शाता है।

★ यह त्यौहार 2000 वर्ष से भी अधिक पुराना है। कुम्भ मेला का पहला दस्तावेज़ विवरण चीन के यात्री हुएन्त्सांग द्वारा दर्ज किया गया था, जो 629–645 ईस्वी में भारत आया था।

★ विश्व के किसी भी आयोजन की तुलना में यहां सबसे बड़ा जमावड़ा होता है। कुंभ मेले में अक्सर 50 से 60 लाख श्रद्धालुओं के आगमन का रिकॉर्ड पाया गया है। यह हिंदू धर्म की एकता की महान भावना का एक रूप है।

★ इस त्यौहार का प्रमुख अनुष्ठान नदी के तट पर धार्मिक स्नान है। हरिद्वार में गंगा, नाशिक में गोदावरी, उज्जैन के क्षिप्रा और संगम (गंगा, यमुना और पौराणिक नदी सरस्वती के संगम) प्रयागराज में है।

★ कुंभ मेले में अनुमानित व्यापारिक आय 12,000 करोड़ रुपए (120 अरब रुपए) है। कुंभ मेला के दौरान लगभग 6,50,000 लोगों को रोजगार मिलता है।

★ यूनेस्को (UNESCO) ने कुंभ मेला को भारत की सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी है।

★ इस त्यौहार को ''पृथ्वी पर सबसे बड़ी सभा'' के रूप में देखा गया था,**गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड**

रिकॉर्ड्स ने इस त्यौहार को – 14 अस्थायी अस्पतालों, 243 डॉक्टरों लगभग 30,000 पुलिस बलों और सुरक्षा कर्मचारियों को ड्यूटी पर और 40,000 जन प्रसाधन (शौचालय) के साथ ''सर्वश्रेष्ठ प्रबंधित'' घटनाओं में से एक के रूप में मान्यता दी।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुंभ का आयोजन ग्रहों और नक्षत्रों की विशेष स्थितियों में होता है ।

★ बृहस्पति के कुंभ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा के किनारे कुंभ का आयोजन किया जाता है ।

★ बृहस्पति के मेष राशि में तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में होने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में संगम तट पर कुंभ का आयोजन किया जाता है ।

★ बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक में गोदावरी के किनारे कुंभ का आयोजन किया जाता है ।

★ बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में क्षिप्रा के तट पर कुंभ का आयोजन किया जाता है ।

कुंभ के प्रमुख स्नान

15 जनवरी को मकर संक्रांति के साथ आरंभ होने जा रहे इस कुंभ में छः प्रमुख स्नान आयोजित किए जाएंगे जिनमें तीन शाही स्नान होंगे

★ पहला स्नान (पहला शाही)
15 जनवरी मंगलवार (मकर संक्रांति)

★ दूसरा स्नान (प्रमुख स्नान)
21 जनवरी सोमवार (पौष पूर्णिमा)

★ तीसरा स्नान (दूसरा शाही)
4 फरवरी , सोमवार (मौनी अमावस्या)

★ चौथा स्नान (तीसरा शाही)
10 फरवरी रविवार (बसंत पंचमी)

★ पांचवां स्नान (प्रमुख स्नान)
19 फरवरी , मंगलवार (माघी पूर्णिमा)

★ छठा स्नान (प्रमुख स्नान)
4 मार्च, सोमवार (महाशिवरात्रि)

करोड़ों की आस्था, करोड़ों का विश्वास, आध्यात्म का महान पर्व कुंभ

15 जनवरी से 4 मार्च, 2019 तक हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज में पर्यटन के तीर्थस्थल

मौलिक व अप्रकाशित कहानी

छुट्टी

—सुशांत सुप्रिय

कई घंटे जागने के बाद रात जैसे थककर सो गई थी। खिड़की के बाहर पूर्वी क्षितिज पर उजाले का शिशु उछल–कूद करने लगा था। खिड़की में से सुबह की ताज़ा हवा के झोंके अंदर आ रहे थे।

आज मेरी आँख जल्दी खुल गई थी। मैंने देखा कि बगल में सुमी बिस्तर पर अलसायी पड़ी थी। उसके पास ही बगल में पाँच साल का बेटा पुलक भी चैन की नींद सो रहा था। मैंने घड़ी पर निगाह डाली। सुबह के साढ़े–पाँच बज रहे थे। मुझे थोड़ी हैरानी हुई। हर रोज़ तो सुमी इस समय तक खुद ही उठ जाती थी। सुमी को हिला कर मैंने प्यार से कहा, "जानु, उठोगी नहीं क्या ? पुलक को स्कूल भेजना है, देर हो रही है।"

सुमी शायद कोई मीठा सपना देख रही थी। वह नींद में ही कुनमुनाई, फिर अपनी अलसायी आँखें खोलते हुए उसने मुस्कुरा कर कहा, "आज मैं कोई काम नहीं करूँगी।" मैं चिंतित हुआ,"क्यों? क्या तबीयत ठीक नहीं तुम्हारी ?"

"नहीं–नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" सुमी ने उनींदी आँखों से कहा।

"तो फिर ऐसी क्या बात हो गई कि आज तुम ... "

" बस, ऐसे ही। आज मैं कोई काम नहीं करूँगी।" सुमी नींद और जागने की सीमा–रेखा पर पड़ी बोली और फिर उसने दूसरी ओर करवट ले ली।

मुझे गुस्सा आ गया। सुबह नौ बजे मेरी एक ज़रूरी मीटिंग थी। गुस्से में मैं सुमी से कुछ उल्टी–सीधा कहने ही वाला था कि अचानक स्मृति के मंच से कोई झीना सा पर्दा जैसे सरसराकर उठ गया और मुझे अपने बचपन की एक घटना साफ़–साफ़ याद आ गई। ऐसा लगा कि जैसे वह कल की ही बात हो और मैं संयत हो गया। मुस्कुराकर मैंने पुलक को उठाया। उसे एक गिलास पानी पिलाया। रोज़ यह काम उसकी मम्मी करती थी। फिर मैंने बेटे को ब्रश करवाया और उसे बाथरूम में नहलाने ले गया।

"पापा, आज मम्मी क्यों नहीं उठी है? ... आप मम्मी को जगाओ न।"

बेटे ने कहा।

" बेटा, आज मम्मी को सोने दो।" मैं बोला, "आज अपने राजा बेटा को पापा तैयार करके स्कूल भेजेंगे।" यह सुनकर बेटा खुश हो गया।

मैने उसे नहला कर स्कूल–ड्रेस पहनाई, फिर दूध गरम करके कटोरी में ले आया। उसमें कॉर्न–फ़्लेक्स डाले और बेटे को खिलाने लगा।

"पापा, आज मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। वाह! आज मुझे मेरे पापा तैयार करके स्कूल भेज रहे हैं।" पुलक ने चहक कर कहा।

फिर मैं रसोई में गया और बेटे के टिफ़िन के लिए मैंने फटाफट पनीर–टमाटर के सैंडविच बना कर पैक कर दिए।

बेटे को स्कूल–बस पर चढ़ा कर जब मैं वापस लौटा तब तक सुमी जाग गई थी पर अभी भी बिस्तर पर अलसायी–सी पड़ी थी।

" क्या हाल है? " मैंने मुस्कुराकर पूछा।

*लोकसभा सचिवालय में अधिकारी

" आज मैं कोई काम नहीं करूँगी।" सुमी ने अँगड़ाई ले कर कहा।

" ठीक है, जानु। मैंने पुलक को तैयार करके स्कूल भेज दिया है। तुम्हारे लिए चाय बना दूँ ? नाश्ते में क्या लोगी ? ब्रेड–ऑमलेट चलेगा ? " मैंने पूछा।

सुमी ने सुखद आश्चर्य से मेरी ओर देखा। जैसे उसे यक़ीन ही नहीं हो रहा हो।

" तुमने यह सब बनाना कब सीखा ? "

"बहुत साल हॉस्टल में रहा हूँ ... और भी बहुत कुछ बना सकता हूँ।" मैंने उसे बताया।

"अच्छा, एक बात बताओ। मेरे यह कहने पर कि आज मैं कोई काम नहीं करूँगी तो तुम नाराज़ क्यों नहीं हुए। मुझे तो लगा था कि तुम मुझ पर चिल्लाओगे. ..." सुमी बोली।

" अरे जानु, मैं तुम्हें एक घटना सुनाता हूँ जो मेरे बचपन में मेरे घर में घटी थी। यह वाक़्या सुनकर तुम खुद सब कुछ समझ जाओगी।"

"बात तब की है जब मैं पाँच–छह साल का था।" मैंने बताना शुरू किया।

"एक सुबह पिताजी उठे तो उन्होंने देखा कि मेरी मां अभी भी उनके बगल में सो रही थीं। मैं भी माँ से चिपक कर सो रहा था। पिताजी को हैरानी हुई। रोज़ तो मां सबसे पहले उठकर स्नान कर लेती थीं। फिर चबूतरे पर उगी तुलसी पर जल चढ़ाती और उगते सूर्य को जल का अर्घ्य देकर पूजा करने के बाद वह पहले पिताजी के लिए चाय बना कर लाती और तब स्कूल जाने के लिए वह मुझे उठाती थीं। लेकिन उस दिन सूरज निकले हुए भी बहुत देर हो चुकी थी। माँ अब भी बिस्तर पर सोई पड़ी थीं। पिताजी को चिंता हुई। उन्होंने मां को जगा कर पूछा कि क्या उनकी तबीयत तो ठीक थी। जब पिताजी मां को जगा रहे थे तभी मेरी नींद भी टूट गई।

" माँ ने कहा कि उनकी तबीयत तो ठीक थी, पर उस दिन कोई काम नहीं करेंगी। यह सुनकर पिताजी की हैरानी की सीमा नहीं रही। उन्होंने मां से इसका कारण जानना चाहा। तब मां बोलीं, "आज मेरी छुट्टी है।" यह सुनकर पिताजी को गुस्सा आ गया। वह बोले – "इसका क्या मतलब है ?" उस दिन माँ ने जो कहा , वह सारी बातें मुझे आज भी याद हैं। माँ बोलीं – " आप हफ़्ते में छह दिन दफ्तर जाते हो, उसके बाद एक दिन आपकी भी छुट्टी होती है। बेटा हफ़्ते में पाँच दिन स्कूल जाता है। उसके बाद दो दिन उसकी भी छुट्टी होती है। पर मैं तो हफ़्ते में सातों दिन, महीने में तीस–इकतीस दिन, साल में तीन सौ पैंसठ दिन लगातार काम करती रहती हूँ। मुझे भी तो कभी घर के काम–काज से छुट्टी चाहिए। "यह सुनकर पिताजी हँस कर बोले, "अरे, तुम कोई नौकरी थोड़े ही करती हो। तुम तो 'हाउस–वाइफ़' हो। तुम्हारी कैसी छुट्टी ?" तब माँ ने दृढ़ता से कहा, "यह घर ही मेरा ऑफ़िस है। इस घर के काम–काज करना भी तो मेरी नौकरी है। मैं अगर 'हाउस –वाइफ़' हूँ तो क्या मेरा दिल कभी आराम करने को नहीं कर सकता ? क्या मैं कभी नहीं थक सकती ? क्या मुझे कभी हर दिन के काम–काज से छुट्टी नहीं मिल सकती ?" पिताजी अवाक् रह गए। उन्होंने ऐसी दलील पहले कभी नहीं सुनी होगी।

पर माँ की बात में दम था। आखिर मां भी इन्सान थी। मैं तब केवल पाँच–छह साल का ही था और मुझे अपनी मां की बातें सुनकर उनसे सहानुभूति हुई। उस दिन पिताजी ने माँ को समझाने–बुझाने की बहुत कोशिश की। पर मां थी कि पिताजी के नाराज़ हो जाने के बाद भी, टस से मस नहीं हुई " – कहकर मैं मुस्कुराया। मैंने कहीं पढ़ा था कि बुद्धिमान लोग अपने अनुभवों से सीखते हैं। जो अधिक बुद्धिमान होते हैं वह दूसरों के अनुभवों से सीखते हैं।

यह सारी घटना सुनकर सुमी ने बिस्तर से उठकर मुझे चूम लिया और मैं रसोई में हम दोनों के लिए चाय–नाश्ता बनाने के लिए चल पड़ा।

पर्या–पर्यटन

वीज़ा - पर्यटन का कल्याण

–श्रुति राजगोपालन

पर्यटन व्यवसाय भारत की समृद्धि में खासा योगदान दे सकता है, पर कुछ बाधाएं खत्म करने की जरूरत है।

एक दशक से ज्यादा समय से विदेश में हूं, अक्सर जब लोगों को पता चलता है कि मैं भारत से हूं तो बताते हैं कि वह भी भारत जाना चाहते हैं। कोई ताजमहल की बात करता है, कोई हिमालय की, कोई वाराणसी की और कोई तमिलनाडु की। अगर मैं ऐसे हर शख्स से एक डॉलर की फीस ली होती तो मेरे पास अब तक इतना पैसा जरूर जमा हो गया होता कि उससे आराम से भारत की एक बार यात्रा कर सकती थी। दूसरी तरफ, यह भी सोचिए कि वह सारे लोग, जो भारत आना चाहते हैं, वास्तव में भारत आए होते, तो भारत कितना अमीर हो जाता?

एक देश की तरह और एक संस्कृति की तरह भारत ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है, लेकिन इसके बावजूद पिछले पूरे साल में महज एक करोड़ विदेशी पर्यटक भारत आए, जबकि इस दौरान चीन में छह करोड़ पर्यटक गए और फ्रांस में तो आठ करोड़। इसका एक कारण तो यह है कि विकसित देशों से आने वाले पर्यटक प्रदूषण और अपनी सेहत, भारतीय शहरों में सुरक्षा की स्थिति को लेकर चिंतित होते हैं। लेकिन ये सब तो छोटे कारण हैं। यही पर्यटक अक्सर नई संस्कृति और नए परिदृश्यों के लिए भारत से भी कम विकसित देशों की यात्राएं करते रहते हैं। थाईलैंड और मैक्सिको, दोनों ही देशों में जाने से पहले वैक्सीनेशन कराने की सलाह दी जाती है फिर भी वहां भारत से तीन गुना पर्यटक जाते हैं। असली समस्या प्रवेश की बाधाओं को लेकर है।

अर्थशास्त्री एलेक्स तब्रॉक मानते हैं कि भारत में बहुत कम अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आने का एक बड़ा कारण यह है कि यहां आने के लिए ज्यादातर देशों के पर्यटकों को वीजा लेना पड़ता है। कुछ समय पहले (2014 तक) इसके लिए एक बहुत लंबा फॉर्म भरना पड़ता था और वीजा मिलने का इंतजार भी लंबा होता था। फॉर्म में ढेर सारी तरह–तरह की गैर–जरूरी बाते लिखनी होती थीं, कई सारे फोटो लगाने होते थे, फिर भुगतान के कुछ ही तरीके स्वीकृत थे। लेकिन अब यह सारी चीजें अब खत्म हो चुकी हैं। अब 160 देशों के पर्यटकों को आगमन पर वीजा मिल जाता है और ई–वीजा का भी प्रावधान किया जा चुका है।

विदेशियों के लिए वीजा की जरूरत सम्राज्यवादी भारत की बंद अर्थव्यवस्था की ही एक निशानी है। उस दौर की कड़ी व्यापार और आब्रजन नीतियों के कारण देश में किसी भी काम के लिए प्रवेश पर बाधाएं खड़ी की गई थी। बहुत कम देशों के लोग ही भारत में बिना वीजा के आ सकते थे। इसे बदलने के लिए कुछ नहीं किया गया। जब भी यह सवाल उठता, नौकरशाहों का तैयार जवाब होता कि वीजा पाबंदियों को द्विपक्षीय ढंग से ही हटाया जा सकता है, यानि उन देशों के नागरिकों को ही वीजा से राहत रहेगी, जिन देशों में भारतीय नागरिकों पर वीजा नहीं लगता।

* सहायक प्रोफेसर, परचेज कालेज, न्यूयार्क

रॉबर्ट लॉसन और सौरव रायचौधरी ने 2016 में अपने एक शोधपत्र में बताया था कि वीजा जरूरतों के कारण किसी देश विशेष से पर्यटकों की आमद में 70 फीसदी तक की कमी आती है। चंद पड़ोसी देशों को छोड़ कर ज्यादातर देशों के नागरिकों को भारत आगमन के लिए वीजा लेना होता है।

वीजा मुक्त पर्यटन का फायदा समझने के लिए हमें घरेलू पर्यटन को देखना होगा। भारत के लोग देश में कहीं भी बिना वीजा के आ–जा सकते हैं। इसलिए देश में घरेलू पर्यटक विदेशी पर्यटकों के मुकाबले कहीं ज्यादा होते हैं। इसके मुकाबले वीजा लेकर विदेश जाने वाले भारतीय पर्यटक काफी कम होते हैं। अनुमान है कि वीजा मुक्त पर्यटन से पर्यटकों की संख्या 60 गुना तक बढ़ सकती है। भारत के लिए जरूरत यह है कि वह एकपक्षीय ढंग से 50 सबसे अधिक विकसित देशों के नागरिकों के लिए वीजा की जरूरत को खत्म कर दिया जाए। वैसे आदर्श स्थिति तो यही रहेगी कि वह इसे लगातार बढ़ाते हुए दुनिया के ज्यादातर देशों पर लागू करे। ऐसे मामलों में वहीं बाधा बननी चाहिए, जहां सुरक्षा–हित आड़े आते हों। वीजा पाबंदियों के द्विपक्षीय या बहुपक्षीय समझौतों के इंतजार का अर्थ है कि ये पाबंदियां लंबे समय तक चलेंगी और भारत का सालाना अरबों रूपए का घाटा होता रहेगा। ऐसे संसार की कल्पना कठिन नहीं है, जहां वीजा ही न होता हो – ऐसा संसार ज्यादा समद्ध, ज्यादा सुखी और ज्यादा घूमने लायक होगा।

(यह लेखिका के अपने विचार हैं, हिंदुस्तान, नई दिल्ली से साभार 03 नवम्बर, 2018)

शाबाश

अखिल भारतीय सेवा भारोत्तोलन चैम्पियनशिप वर्ष 2018–19 में प्रथम स्थान (स्वर्ण पदक)

पर्यटन मंत्रालय, मुख्यालय में कार्यरत श्री संदीप कुमार ने अखिल भारतीय सेवा भारोत्तोलन चैम्पियनशिप वर्ष 2018–19 में प्रथम स्थान (स्वर्ण पदक) प्राप्त किया है। 23 जनवरी, 2013 को पर्यटन मंत्रालय में सरकारी सेवा में आए श्री संदीप कुमार वर्ष 2012–13, 2014–15, 2015–16, 2016–17 में भी प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

अतुल भारत की ओर से बधाई

अर्थव्यवस्था

पर्यटन का नया आयाम : कृषि पर्यटन

—अबिनाश दाश

भारत में पर्यटन अभी तक केवल तीर्थ यात्रा, साहसिक यात्रा, वन्यजीव, समुद्र तटों आदि तक ही सीमित रहा है। परन्तु यह यहीं तक पर्यावेशित नहीं है। इसकी सीमाएं और अधिक व्यापक हैं। भारत में कृषि पर्यटन हाल ही में अपनाई गई नवीनतम व्यवस्था है और यह उन पर्यटकों को एक बड़ी संख्या में आकर्षित कर रहा है, जो वास्तविक ग्रामीण जीवन का अनुभव करना चाहते हैं। कृषि पर्यटन से ग्रामीण इलाकों में काफी उत्साह का माहौल बना है।

अभी तक यात्रा और पर्यटन की सोच सिर्फ शहरी अमीर वर्ग तक सीमित रही है, जो आबादी का केवल एक छोटा सा हिस्सा है। आज जब परिवार बहुत छोटे हो गए हैं और उसी प्रकार रिश्ते भी सीमित रह गए हैं। ऐसे में बहुत कम लोग सोच पाते हैं कि वह भी कभी अपने गांव जाते, वहां नाना–नानी या दादा–दादी के साथ कुछ दिन बिताते ? इसी सोच को अंजाम देते हुए कृषि पर्यटन की अवधारणा का जन्म हुआ। कृषि पर्यटन में भोजन, आवास, मनोरंजन और यात्रा पर लागत कम आती है। यह पर्यटन को विस्तृत आधार प्रदान करता है। इसलिए कृषि पर्यटन की अवधारणा यात्रा और पर्यटन को देश की बड़ी आबादी से जोड़ सकती हैं।

कृषि पर्यटन आपको ग्रामीण जीवन में एक करामाती और प्रामाणिक संपर्क के साथ स्थानीय भोजन के स्वाद से रूबरू कराते हुए, जिंदगी के वास्तविक अनुभव प्रदान कर खेती के विभिन्न तरीकों से आपका परिचय करवाता है। इससे शहरों के कंक्रीट के जंगलों के तनाव भरे माहौल से दूर शांतिपूर्ण और ग्रामीण वातावरण में आपकी मानसिक कार्य कुशलता को पुनर्जीवित करने में मदद मिलती है। कृषि पर्यटन आपको प्रदूषणरहित और प्राकृतिक वातावरण में आराम करने और मनोवैज्ञानिक – सांस्कृतिक अहसास को पुनर्जीवित करने का अवसर देता है। कृषि पर्यटन का मकसद केवल ग्रामीण जीवन का अनुभव कराना ही नहीं है अपितु कृषि अर्थव्यवस्था के अलग अलग पहलूओं तथा उस से जुड़ी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं से भी रूबरू होने का एक अवसर प्रदान करना है।

*पुस्तकालयाध्यक्ष :होटल प्रबंधन संस्थान ,भुवनेश्वर

हाल के वर्षों में कई राज्य कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आगे आए हैं।

भारत में कृषि एक व्यवसाय से ज्यादा एक संस्कृति है। जबकि पर्यटन देश में उद्योग के रूप में आय का एक बड़ा साधन है। इस उद्योग को अगर कृषि व्यवसाय के साथ जोड़ दिया जाए तो ''कृषि पर्यटन'' किसानों के लिए आय का एक अतिरिक्त साधन हो सकता है। इसलिए कृषि से जुड़े सारे पहलूओं की संवेदनशीलता, आर्थिक प्रणाली के सकारात्मक घटक के रूप में विवेचना करने की जरूरत है और यही 21वीं शताब्दी की मांग है।

भारत को गांवों की भूमि के रूप में जाना जाता है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार भारत में कुल 5.5 लाख गांवों में 77 करोड़ से अधिक किसान वास करते हैं। इसलिए कोई संदेह नहीं कि इन गांवों के जीवंत और दिव्य अनुभव वाकई लाजबाब है।

आज शहरी संस्कृति में पले बढ़े लोगों को ग्रामीण जीवन के बारे में जानने की उत्सुकता होती है। कृषि पर्यटन – किसान, गांवों और खेत खलिहानों के इर्द–गिर्द ही घूमता है और शहरी के उत्सुक लोगों को संतुष्ट करने की क्षमता रखता है। ग्रामीण माहौल का यह विशेष अनुभव तथा ग्रामीण जीवन का आनंद लेने के लिए भी यह एक मौका प्रदान करता है जिसमें एक पर्यटक ग्रामीण जीवन में रह कर पुरानी परंपरा और संस्कृति का अनुभव करने के लिए पक्षी प्रेक्षण (पंछी देखना), सूखी घास पर लेटना, ट्रैक्टर की सवारी, घुड़सवारी, किसी विवाह समारोह में शामिल होने, ग्रामीण खेलों को देखने और खुद भी उनमें भाग लेने, नदी किनारे मछली पकड़ने, गांव के मेले और त्यौहारों में हिस्सा लेने या फिर किसी खेत में धूप में बैठकर दोपहर का भोजन करने का लुफ्त उठा सकते हैं। यह सब शहरी जिंदगी में संभव नहीं है।

कृषि पर्यटन भारतीय पर्यटकों के लिए कुछ ज्यादा नया नहीं है। कृषि अध्ययन, कृषि व्यवसाय अध्ययन, सामाजिक मनोविज्ञान, नागरिक शास्त्र जैसे पाठ्यक्रमों के साथ कृषि पर्यटन क्षेत्र को शामिल करते हुए अध्ययन या अध्ययन दौरे के रूप में युवा पीढ़ी को शामिल किया जा सकता है। यात्रा और पर्यटन की वर्तमान सोच शहरी और समृद्ध वर्ग तक सीमित है जो कुल जनसंख्या का केवल एक छोटा सा हिस्सा है जबकि कृषि पर्यटन में कम खर्च होने के कारण यह एक बड़ी आबादी के लिए यात्रा तथा पर्यटन का एक बड़ा क्षेत्र प्रदान कर सकता है। लागत प्रभावी होने के कारण कृषि पर्यटन में अतिरिक्त और अनावश्यक व्यय की गुंजाइश नहीं होती है।

कृषि क्षेत्र में पर्यटन क्षेत्र में विस्तार करने की क्षमता है और यह प्राथमिक क्षेत्र को प्रमुख सेवा क्षेत्र के करीब ला सकता है जो कृषि और पर्यटन दोनों क्षेत्रों के लिए एक सबल स्थिति पैदा करता है। और दूसरे शब्दों में पर्यटन क्षेत्र में विस्तार के लिए कृषि क्षेत्र के नए आयामों का अन्वेषण किया गया है।

भारतीय कृषि की विशेषता

विश्व खाद्य संगठन द्वारा जारी विश्व कृषि

सांख्यिकी–2010 के अनुसार भारत ताजा फल और सब्जियों, दूध, प्रमुख मसालों आदि का सबसे बड़ा उत्पादक है। रेशेदार फसलें जैसे जूट, मोटे अनाज जैसे ज्वार, बाजरा और मक्का आदि के साथ ही तिलहनों का भी उत्पादक है। इसके अलावा भी भारत सूखे फल, जड़ और कंद फसलें, दाल, मछली, अंडे, गन्ना, नारियल और सब्जियों का विश्व में दूसरा या तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। जल कृषि और मत्स्यपालन उद्योग भारत में सबसे तेजी से बढ़ रहा है। 1995 से 2016 के बीच भारत में मत्स्य उत्पादन दोगुना हुआ है। 2010 में भारत ने दुनिया के देशों को करीब छः लाख मीट्रिक टन मत्स्य उत्पाद का निर्यात किया था। जबकि जलकृषि फसलें तीन गुना बढ़ी हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने कई नकदी फसलों जैसे कॉफी और कपास आदि का 80% से अधिक उत्पादन किया है। इतना ही नहीं, आज यह पशुधन का उत्पादक भी है।

2016 की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत की जनसंख्या, कृषि क्षमता से कहीं अधिक तेजी से बढ़ रही है।

सूत्रों से यह भी ज्ञात होता है कि आज भारत अपनी बढ़ती जनसंख्या की जरूरतों को पूरा करने के साथ–साथ चावल और गेहूं का निर्यात भी कर सकता है। फिर भी कहा जाता है कि किसानों की स्थिति ठीक नहीं है। भारत को ब्राजील और चीन की तरह बुनियादी सुविधाओं को बढ़ाने के साथ ही वितरण व्यवस्था में सुधार करने तथा अन्य के साथ ही, कृषि के व्यावसायिक विवधिकरण की भी सिफारिश की गई थी। इस विवधिकरण की प्रक्रिया में कृषि पर्यटन एक प्रमुख घटक है।

प्रबंध तथा जरूरी अवसंरचना :

कृषि पर्यटन से किसानों के विकास की उम्मीदें जगी हैं। परन्तु इस प्रकार के पर्यटन से संबंधित जागरूकता वाले कार्यक्रमों की कमी है। इस में कोई दो राय नहीं कि कृषि पर्यटन के लिए अवसंरचनात्मक एवं वित्तीय सहायता के पोषण के स्वरूप में तथा पर्यटन प्रशासन में संशोधन की जरूरत होगी। कृषि पर्यटन में ग्रामीण युवाओं को शामिल करने के लिए प्रोत्साहन का प्रावधान भी जरूरी है। भारत में कृषि पर्यटन की अवधारणा विकास और विपणन में अग्रणी हो सकती है।

विश्व पर्यटन संगठन का अनुमान था कि वर्ष 2017 तक एक अरब से अधिक पर्यटक दुनिया के विभिन्न हिस्सों का दौरा करेंगे। लेकिन इसमें कृषि और ग्रामीण पर्यटन से यह प्रतिशत ही नहीं बढ़ेगा बल्कि पर्यटन उद्योग आर्थिक रूप में विदेशी मुद्रा उत्पन्न करने के लिए समान अवसर प्रदान करने में कारगर साबित होंगे।

भारत में कृषि पर्यटन का प्रचलन 2004 में आरम्भ हुआ है। इसे पांडुरंग तावड़े के प्रयासों से महाराष्ट्र के बारामती कृषि पर्यटन केंद्र में शुरू किया गया था। उन्हें पर्यटन क्षेत्र में सबसे नवीन उत्पाद के लिए भारत के राष्ट्रपति जी ने राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार

से सम्मानित किया है।

कृषि पर्यटन शब्द अक्सर ग्रामीण पर्यटन के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इसमें कृषि आधारित अनेक गतिविधियां शामिल है जो पर्यटकों को खेत में लाकर और उन्हें फल तोड़ने, सब्जी उगाने, फसल काटने इत्यादि में भी शामिल किया जाता है। इन ग्रामों में पर्यटकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। बैलगाड़ी या ट्रैक्टर की सवारी, घोड़े, बैल या भैंस की सवारी और यदि गिर जाएं तो प्राथमिक चिकित्सा आदि की व्यवस्था होती है।

दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कृषि पर्यटन के बारे में अलग–अलग परिभाषाएं हैं। इटली में खेतों में रहने के लिए विशेष रूप से कृषि गतिविधियों का प्रदर्शन जैसे भेड़ की ऊन कतरना, मछली पकड़ना/शिकार करना, फार्म टूर, क्रॉस कंट्री स्कीइंग, बर्फीले क्षेत्र में कैम्पिंग, फल चुनना, जानवरों को नहलाना और खिलाना, दूध दूहना, एक ही बड़े बिस्तर पर कई लोगों का एक साथ सोना, सुबह खुद अपने और साथियों के लिए एकसाथ नाश्ता बनाना आदि पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहां पर्यटकों को खेतों में ही एक शानदार एयर कंडीशन्ड घर मिलता है जिसमें अक्सर स्विमिंग पूल भी होता है।

यहां अवकाश के लिए कम से कम पांच दिनों का पैकेज होता है ताकि शहरी पर्यटक गांव के जीवन को समझ सकें क्योंकि इसके लिए अपेक्षाकृत लंबे समय तक ठहरने की जरूरत होती है। इसमें मेजबान, जो एक ठेठ किसान है, अतिथि के सत्कार के साथ ही उसे कृषि के बारे में बताता है। शाम को अतिथि उस किसान परिवार के साथ ही भोजन करता है। अतिथि को वहां रहना उबाऊ न लगे इसलिए व्यस्त रखने के लिए खेत में ले जाकर कृषि से संबंधित कुछ हलका काम भी कराया जाता है। जिससे पर्यटक छुट्टियों का एक अलग ही आनंद प्राप्त करते हैं।

कृषि पर्यटन को एक आला पर्यटन के रूप में ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका और फिलीपींस समेत दुनिया के कई हिस्सों में एक उद्योग माना जाता है। जहां किसी गांव की यात्रा और निवास, जिसमें खेत में बना एक बढ़िया गेस्ट हाउस या मेजबान के घर में अलग कमरे, कैम्पिंग इत्यादि शामिल हैं। यूरोप में कृषि–पर्यटन व्यवसायियों के आंकड़ों को सारांशित करने से पता चलता है कि ग्रामीण पर्यटन उत्पाद में उनकी लगभग 35% भागीदारी है। पश्चिमी यूरोप में 38%. और पूर्वी यूरोप में यह 10% से भी कम है।

विशेषता

कृषि पर्यटन के लिए बहुत अधिक तामझाम की भी जरूरत नहीं है। उदाहरण के लिए पर्यटकों के लिए केवल एक दो बेडरूम, जो खेत के नजदीक, उससे कुछ दूर या फिर गांव में ही हो सकते हैं। रसोई में ज्यादातर देसी और स्थानीय सामग्री का उपयोग किया जाता है। भारत में भी कुछ स्थानों पर दिन में पर्यटकों को खेत में ले जाया जाता है ताकि वह किसानों के काम को समझ सकें।

आधुनिक जीवन शैली ने जीवन को तनावपूर्ण बना दिया है। इसलिए लोग प्रकृति की निरंतर खोज में ऐसे स्थान को, जहां जीवन और अधिक शांतिपूर्ण हो, तलाशते हैं। आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा की जड़े गांव में हैं। ग्रामीणों के स्वदेशी चिकित्सा ज्ञान का सम्मान किया जाता है। आज लगभग सभी शहरी क्षेत्रों और विदेशों में जैविक खाद्य पदार्थो की बहुत मांग होने लगी है। कुल मिलाकर शहरी लोग स्वास्थ संबंधी समाधानों के लिए गांवों की ओर देख रहे हैं।

प्राकृतिक वातावरण

व्यस्त शहरी जनसंख्या का प्रकृति की ओर झुकाव रहता है क्योंकि प्राकृतिक वातावरण शहर के व्यस्त जीवन से भिन्न होता है। वहां खेत खलिहान, फसलें, गाय, भैंस, ऊंट,घोड़ा जैसे जानवर, पहाड़, झरने और पक्षियों के झुंड एक अलग ही वातावरण प्रस्तुत करते हैं जहां आप व्यस्त शहरी जीवन को भूल सकें।

इसके साथ ही आराम करने के लिए किसी छायादार बड़े बरगद के पेड़ के नीचे बैठिए, जड़ी बूटियों की दिलचस्प जानकारी लीजिए, कृषि विषयों पर बातचीत करिए, त्यौहार में भाग लीजिए और गांव के जीवन का आनंद लीजिए।

कृषि पर्यटन में कृषि कार्यों में भाग लेना, बैलगाड़ी या ऊंट की सवारी, गाय, भैंस चराना, खाना पकाना और ग्रामीण खेलों में भाग लेना या गांव के कच्चे तालाब/नदी में तैरना कुछ ऐसी गतिविधियां हैं जिनके बीच पर्यटकों को भाग लेने में आनंद आ सकता है। गृहणियों को संतुष्ट करने के लिए खाना पकाने का आयोजन किया जाता है। गांव में अपने स्वयं और परिवार के लिए खाना पकाना लोगों को आकर्षित कर सकते हैं।

खरीदारी

ग्रामीण शिल्प, पोशाक ताजा कृषि उत्पाद, संसाधित खाद्य पदार्थ, कुछ चीजें पर्यटक याद के लिए स्मृति चिन्ह के रूप में खरीद सकते हैं।

अगर हमारे युवा गांवों के स्तर पर कृषि पर्यटन को विकसित करें तो अतिरिक्त रोजगार की संभावनाएं बढ़ सकती हैं जिससे वह अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि उन्हें पर्यटन के बारे में प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वह अपने गांव में पर्यटन का विकास करें।

(1) एक सजल संवेदना-सी

– सुशांत सुप्रिय

उसे आँखों से
कम सूझता है अब
घुटने जवाब देने लगे हैं
बोलती है तो कभी–कभी
काँपने लगती है उसकी ज़बान
घर के लोगों के राडार पर
उसकी उपस्थिति अब
दर्ज़ नहीं होती
लेकिन वह है कि बहे जा रही है अब भी
एक सजल संवेदना–सी
समूचे घर में ––
अरे बच्चों ने खाना खाया कि नहीं
कोई पौधों को पानी दे देना ज़रा
बारिश भी तो ठीक से
नहीं हुई है इस साल

(2) निमंत्रण

ओ प्रिय
आओ कोई ऐसी जगह तलाश करें
जहाँ प्रतिदिन मूक समझौतों के सायनाइड
नहीं लेने पड़ें
जहाँ ढलती उम्र के साथ
निरंतर चश्मे का नंबर न बढ़े
जहाँ एक दिन अचानक
यह भुतैला विचार नहीं सताए
कि हम सब महज़
चाबी भरे खिलौने हैं
चलो प्रिय
कौमा और पूर्ण–विराम से परे
आओ कहीं और जिएँ ।

*लोकसभा सचिवालय में अधिकारी

(1) मन का मर्म

–विश्व रंजन

खुश तो बहुत होगे तुम।
जो तुमने चाहा वह तुम्हें मिला।
बाकी सब मिट्टी में मिला।
अच्छी किस्मत जो पाई है।
बीता कल भी तुम्हारा, बीता हर पल भी तुम्हारा।
हर बीते पल एक एहसास जताता है।
न रो पाता न हँस पाता,
बस तेरी सुने आवाज के सहारे अपने आप को समेट के रह जाता।
इस जीवन में एक पल के लिए मेरे हो जाओ।
सालों से जिस पल के लिए तलाश थी उसको पूरी कर जाओ।
हां जी हां जब तक सांस रहेगी,
अमृत के निर्मल धार के लिये यह आवाज उठेगी।

(2) अमृत की नजर

नजर तेरी भी नजर मेरी भी,
तुझको नजर ना लगे,
इसके लिए काली चादर से अपने को घेरी भी।
क्या करूं, हां जी हां क्या करू, अपनी नजर का,
जो हर पल अमृत की दीदार चाहे,
मैं तेरे पास तू मेरे पास होके भी,
मुझसे क्यों नजर फेरे दी।

*सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर, पर्यटन मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

पर्यटन सलाह

न्यूनतम खर्च कर पर्यटन का आनन्द लें

—आशा कोलेकर

आज भी भारतीय समाज में छुट्टियां मनाने का अर्थ रिश्तेदारों या पैत्रिक घर जाने से होता है। ज्यादातार परिवार बच्चों की सालाना छुट्टियां या त्यौहारों पर अपने परिजनों के पास जाते है और उसके आसपास के पर्यटन स्थलों का भ्रमण करते है। धीरे–धीरे इस संकल्पना में बदलाव आ रहा है। अमीर घराने तो बहुत पहले से ही अपने परिवार के साथ देश–विदेश के पर्यटन स्थलों का भ्रमण करते आ रहे है किंतु पिछले लगभग दो दशकों से कई मध्यमवर्गीय परिवार अब छुट्टियां मनाने के लिए रिश्तेदारों के घर जाने की बजाय विभिन्न पर्यटन स्थलों पर जाने के लिये उत्सुक रहने लगे है। उनसे से बहुत परिवारों ने आजकल पर्यटन को अपनी जीवनशैली में शामिल कर लिया है लेकिन बहुत सारे ऐसे लोग भी है जो चाहते हुए भी अधिक खर्चे के डर से घूमने या कहें कि पर्यटन पर नही जाते हैं। यदि हम कुछ बातों का ध्यान रखे तो बहुत कम खर्चे में ही पर्यटन का पूरा आनंद ले सकते हैं।

पर्यटन का पूरा आनंद लेने के लिये यह जरूरी है कि हम समय रहते गंतव्य स्थल का चयन कर निर्णय कर लें कि वास्तव में कहां जाना है। इससे यह फायदा होगा कि हमें समय मिलेगा पूर्णतः नियोजित प्रोग्राम बना सकेंगे और गतिरोधों को दूर रखने में कामयाब होंगे। पर्यटन स्थल चुनते वक्त बेहतर होगा कि हम पूरे परिवार के साथ विचार विमर्श करें और हर सदस्य की इच्छाओं का ध्यान रखते हुए ऐसे स्थल चुने जो ज्यादातर सदस्यों की पसंद हो। हां, चयन करते समय यह न भूलें कि हमारा बजट क्या है और हम वहां कितने दिनों के लिये रहना चाहते है।

यदि हम पहली बार पर्यटन के लिये जा रहे है तो कोई आसपास की जगह थोड़े कम दिनों के लिये चुने। धीरे–धीरे जब हमें अनुभव मिलेगा तो हम पूरे आत्मविश्वास के साथ दूरदराज की संस्कृतियों को देखने परखने, देश–विदेश की यात्रा कर सकेंगे।

बजट बनाएं

सबसे पहले हमें यह निर्णय लेना चाहिये कि हम छुट्टियों पर कितना समय बिताना चाहते है, बजट बनाते समय हमें न सिर्फ परिवहन एवं रहने खाने पर होने वाले खर्चे का ध्यान रखना है अपितु कुछ प्रावधान खरीददारी, विशेष पर्यटन स्थलों पर लगने वाले प्रवेश शुल्क और आपातकालीन स्थिति के लिये भी रखना चाहिये क्योंकि हम दूसरे प्रदेश या देश में जा रहे है, जहां हम शायद किसी को भी नही जानते हों। इसलिये हमें हर स्थिति की तैयारी पहले से ही रखनी चाहिये। अभी दो दशक पहले तक लोग अपने साथ खाना बांधकर चलते थे। आजकल हम लोग इससे परहेज करते है और कहीं भी कुछ भी खा लेते हैं, ऐसे खाने से बीमार होने की आशंका बढ़ जाती है, कोशिश करें कि थोड़ा बहुत अल्पाहार घर से बनाकर ले जाएं, जरूरी दवाईयां अपने साथ रखें और गंतव्य स्थल के मौसम को देखकर ही कपड़े इत्यादि पैकिंग

* व्याख्याता होटल प्रबंधन संस्थान, भोपाल (मध्य प्रदेश)

करें। यदि हम इन सब बातों को ख्याल रखेंगे तो हम अचानक आई विपरीत परिस्थितियों के लिये तैयार रहेंगे और अपने खर्चे में भी कमी कर सकेंगे ।

परिवहन निर्धारित करे

एक बार हमारा गंतव्य स्थल तय हो जाए तो हमें वहां तक पहुंचने के साधन तलाशने चाहिए, यदि हम विदेश जा रहे है तो हमें अपना हवाई टिकट बुक करने से पहले विसिटर्स वीजा पास के लिये आवेदन कर देना चाहिये। इस बात का खासकर ध्यान रखें की वीजा मिलने के बाद ही हवाई टिकट बुक करना चाहिए। हवाई टिकट बुक करते समय अच्छी तरह से पड़ताल करनी चाहिये। अलग– अलग एयरलाइंस के रेट की भी जांच कर लेनी चाहिये। ध्यान रहे कि हम जितना पहले बुकिंग करेंगे उतने ही सस्ते टिकट मिलने की संभावना होती है। कई एयरलाइंस लक्जरी एयरलाइंस की तुलना में बहुत कम चार्ज करते हैं। याद रहे कि इन एयरलाइंस में खानपान का पैसा अलग से देना पड़ता है इसलिये अल्पाहार/भोजन करने के बाद ही हवाई सफर करें।

यदि देश में ही सफर करना है तो उस स्थान पर पहुंचने के सभी साधनों का भी विश्लेषण करें और जो साधन ज्यादा आराम एवं किफायती रूप से पहुंचाएं उसका उपयोग करें। पहले से ही ट्रेन का आरक्षण करवा लेने से सुविधा होती है और तत्काल आरक्षण की मारामारी के साथ पैसे भी बचते हैं। यदि परिवार बड़ा और पर्यटन स्थल ज्यादा दूर नही है तो निजी वाहन अथवा किराये की गाड़ी का इस्तेमाल किया जाता सकता है, इससे स्थानीय परिवहन के खर्च से भी बचेंगे। कुछ स्थानों पर स्थानीय परिवहन के लिये किराये पर भी गाड़ी मिलती है जो आप स्वयं चला सकते है और टैक्सी की अपेक्षा सस्ती और सुविधाजनक भी रहती है।

ठहरने की व्यवस्था पहले से करें

आजकल इंटरनेट से बुकिंग होने की वजह से ठहरने की व्यवस्था आसानी से हो जाती है, अपने बजट के अनुसार होटल या अन्य व्यवस्था के बारे में जांच करे और उसके पश्चात ही बुकिंग करें। बहुत सारी इंटरसेल एजेंसी बेवसाईट है जिनके द्वारा बुकिंग करने से बहुत बचत हो जाती है। गोआईबीवो

पर्यटन

पर्यटन में सारण का नाम

—विश्वरंजन

भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपने में समाहित किया हुए सारण की धरती ने अनेक क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किए है। सारण भारत के बहुचर्चित शहरों में से एक है। सारण की धरती पर प्राकृतिक नजारे, समाजिक एकता, आपसी भाईचारा, पर्यटन स्थल, आदि एक अद्भूत रहस्य समाहित है। भारत के पर्यटन मानचित्र पर सारण ने अपना नाम इतिहास में दर्ज करा रखा है। लेकिन बहुत कम लोगों को इसके बारे में जानकारी है।

इसके नाम की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न धारणाएं मिलती है। एक धारणा में यह भी माना गया है कि सारण का नाम सरंगा—अरण्य या हिरण के जंगल से लिया गया है क्योंकि यह स्थान प्रागैतिहासिक काल में घने जंगल और हिरणों के लिए प्रसिद्ध था।

सारण का प्रशासनिक मुख्यालय छपरा है। गंगा, गंडक, एवं घाघरा नदी से घिरा यह जिला भारत में मानव बस्ती के सबसे प्राचीन केंद्रों में से एक है। संपूर्ण जिला एक समतल एवं उपजाऊ प्रदेश है। भोजपुरी भाषी क्षेत्र की पूर्वी सीमा पर स्थित यह जिला सोनपुर मेला, चिरांद के पुरातत्व स्थलों तथा

*सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर, पर्यटन मंत्रालय नई दिल्ली

राजनैतिक चेतना के लिए प्रसिद्ध है।

चूंकि प्राचीन काल में सारण की भूमि वनों के असीम विस्तार और इसमें विचरने वाले हिरणों के कारण प्रसिद्ध थी इसलिए इसे –हिरण (सारंग) एवं वन (अरण्य) को जोड़ कर सारंगारण्य कहा गया जो कालक्रम में बदलकर सारन हो गया। ब्रिटिश विद्वान जनरल कनिंघम ने लिखा है कि मौर्य सम्राट अशोक के काल में यहाँ लगाए गए धम्म स्तंभों को 'शरण' कहा जाता था जो कालांतर में सरन और फिर सारन कहलाने लगा और यही इस क्षेत्र का नाम बन गया। सारण का मुख्यालय छपरा भी काफी प्रसिद्ध रहा है।

इतिहास के पन्नो में....

छपरा से 11 कि.मी. दूर स्थित, सारण जिला का सबसे महत्वपूर्ण पुरातत्व स्थल चिरांद (2000 ईस्वी पूर्व) है। महाजनपद काल में सारण की भूमि कोसल का अंग था। कोसल राज्य के उत्तर में नेपाल, दक्षिण में सर्पिका (साईं) नदी, पूरब में गंडक नदी तथा पश्चिम में पांचाल प्रदेश था। इसके अंतर्गत आज के उत्तर प्रदेश का फैजाबाद, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर तथा देवरिया जिला के अतिरिक्त बिहार का सारण क्षेत्र आता था। आठवीं सदी में यहाँ पाल शासकों का आधिपत्य हुआ। जिले के दिघवारा के निकट दुबौली से महेन्द्रपाल देव के समय 898 ईस्वी में जारी किया गया ताम्रफलक प्राप्त हुआ है।

बक्सर युद्ध में विजय के बाद सन 1765 में अंग्रेजों को यहाँ का दिवानी अधिकार मिल गया। 1829 में जब पटना को मंडल बनाया गया तब सारन और चंपारण को अलग जिला बनाकर एक साथ रखा गया। लेकिन सन् 1866 में चंपारण को अलग जिला बनाकर सारण से अलग कर दिया गया। 1908 में तिरहुत के प्रमंडल (डिवीजन) बनने पर सारण को इसके साथ कर, इसके अंतर्गत गोपालगंज, सिवान तथा सारण तीन तहसीलें बनाई गई। 1981 में सारण को डिवीजन का दर्जा देकर तीन तहसीलों के अलग अलग जिले बना दिए गए। स्वतंत्रता की लड़ाई में यहाँ के मजहरुल हक़, राजेन्द्र प्रसाद जैसे महान सेनानियों ने बिहार का नाम ऊँचा किया है।

सारण के प्रख्यात पर्यटन स्थल....

महर्षि दधीचि मुनि का आश्रम– छपरा शहर के सरजू नदी के समीप स्थापित है।

प्राचीन काल में महर्षि दधीचि नाम के एक परम तपस्वी हुए थे। उनके पिता ऋषि अथर्वा थे और माता का नाम शांति था। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन शिव की भक्ति में व्यतीत किया था। वह एक ख्याति प्राप्त महर्षि थे तथा वेद–शास्त्रों के ज्ञाता, परोपकारी और बहुत दयालु थे। वह सदा दूसरों के हित के लिए तत्पर रहते थे। ऐसा माना जाता है कि उस वन के पशु–पक्षी तक उनके व्यवहार से संतुष्ट थे। वह इतने परोपकारी थे कि उन्होंने असुरों के संहार के लिए अपनी अस्थियां तक दान कर दी थी। महर्षि दधीचि की लोक कल्याण के लिए किए गए परोपकार की एक कथा प्रचलित है।

एक बार महर्षि दधीचि कठोर तपस्या कर रहे थे उनके तप के तेज से तीनों लोक आलोकित हो उठे। यह देख इन्द्र के चेहरे का तेज जाता रहा क्योंकि

उसे लगा कि महर्षि उनसे इंद्रासन छीनना चाहते हैं। इसलिए उसने तपस्या भंग करने के लिए कामदेव और एक अप्सरा को भेजा, लेकिन वे विफल रहे।

तब इन्द्र ने उनकी हत्या के इरादे से सेना भेज दी। लेकिन उसकी सेना के अस्त्र–शस्त्र महर्षि की तप के कवच को नहीं भेद सके और वह शांत भाव से समाधिस्थ बैठे रहे। हारकर सेना लौट गई। इस घटना के कुछ समय बाद ही वृत्रासुर ने देवलोक को अपने आधिपत्य में ले लिया। पराजित इन्द्र और देवता मारे–मारे फिरने लगे। तब ब्रह्मा ने उन्हें बताया कि महर्षि दधीचि की अस्थियों से बने अस्त्र से ही वृत्रासुर का अंत संभव है। अतः उनके पास जाकर उनसे अस्थिदान मांगो। इससे इन्द्र असमंजस में पड़ गए। वह सोचने लगे कि जिनकी हत्या का प्रयास कर चुका था, वह उसकी सहायता क्यों करेंगे? लेकिन अन्य कोई उपाय नहीं होने पर वह महर्षि के पास पहुंचे और गिड़गिड़ाते हुए बोले – महात्मन्, तीनों लोकों के मंगल हेतु हमें आपकी आस्थियों का दान चाहिए।

महर्षि विनम्रता से बोले– देवेंद्र, शरीर नश्वर है और एक दिन इसे मिट्टी में मिल जाना है। यदि जनहित में यह किसी काम आता है तो इससे बढ़कर और क्या सौभाग्य हो सकता है। आओ, मैं तुम्हें अपना शरीर देता हूं। इन्द्र आश्चर्य से उनकी ओर देख ही रहे थे कि महर्षि ने योग विद्या से अपना शरीर त्याग दिया। बाद में उनकी अस्थियों से बने वज्र से इन्द्र ने वृत्रासुर का संहार कर तीनों लोकों को अभय प्रदान किया।

आश्रम को देखने आए अनेक पर्यटकों ने अपनी राय दी है कि इस आश्रम के विभिन्न पक्षों पर शोध कार्य किये जाने की आवश्यकता है।

आमी

यह जगह छपरा से 37 कि.मी. पूर्व और दिघवारा के चार कि.मी. पश्चिम में स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि प्राचीन समय में दिघवारा रेलवे स्टेशन के निकट एक दीर्घद्वार था और यह स्थान दिघाओं के रूप में जाना जाने लगा। आमी में एक प्राचीन मंदिर है जिसे अम्बा स्थान कहा जाता है। मंदिर के पास एक उद्यान है और एक गहरी और व्यापक बावली है जिसमें पूरे वर्ष पानी रहता है। यहां कभी सूखा नहीं पड़ता है। अप्रैल और अक्टूबर के नवरात्र के अवसर पर दूर–दूर से श्रृद्धालु भक्त यहां दर्शन करने और मनौतियां मांगने आते हैं।

सोनपुर मेला

भारत में सबसे बड़ा रेलवे प्लेटफार्म सोनपुर में होने कारण भी यह स्थान प्रसिद्ध है। सोनपुर मेला कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होने वाला एक बड़ा राष्ट्रीय मेला है। सोनपुर मेले के दो पक्ष है, पहला धार्मिक और दुसरा पशु मेला। हरिहरनाथ मंदिर गज–ग्राह की लड़ाई का स्थल है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर हरि ने गज की ग्राह यानि घड़ियाल से रक्षा की थी। यहां पूर्णिमा पर गंगा में स्नान का विशेष महत्व है। यहां भक्तगण औपचारिक रूप से भी स्नान के लिए आते हैं। हिंदु धर्मावलम्बियों द्वारा कार्तिक पूर्णिमा के दिन मेला आयोजित किया जाता है इस दिन भी स्नान करने की परम्परा है। पूरे माह तक चलने वाला सोनपुर का मेला बिहार में ही नहीं है बल्कि भारत और विश्व भर में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है।

ढोढ आश्रम

यह स्थान पारसगढ़ के उत्तर में स्थित है जहां

पुरातात्विक महत्व के कई स्मारक देखे जा सकते हैं। गण्डकी नदी के किनारे पर और भगवान धुंधेश्वर नाथ के प्राचीन मंदिर में विशाल शिव लिंग स्थित है।

गौतम आश्रम

गौतम ऋषि का आश्रम छपरा से पांच कि.मी. पश्चिम में स्थित है। धार्मिक विश्वास के अनुसार, यहां अहिल्या की शुद्धि हुई थी। रामायण में गौतम ऋषि का उल्लेख है जिन्होंने अपनी पत्नी को पत्थर बन जाने का शाप दिया था।

शिलौढ़ी

यह शिव पुराण और राम चरित्र मानस के बाल कांड के अनुसार एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस स्थान पर नारद का मोहभंग होने की कथा मिलती है। यह प्राचीन स्थान मढौरा से 28 कि.मी. दूर है। यहां भी प्रत्येक शिवरात्रि को विशाल मेले का आयोजन किया जाता है, जिसके दौरान बाबा शिलानाथ के दर्शन किए जाते हैं।

चिरांद

चिरांद घाघरा नदी के उत्तरी तट पर डोरीगंज बाजार के पास जिला मुख्यालय के 11 कि.मी. दक्षिण पूर्व में स्थित है। यहां की गई खुदाई में पाषाण युग की लगभग चार हजार वर्ष पुरानी विकसित संस्कृति

का पता चला है। चिरांद के निवासी पशुपालन, कृषि और शिकार में लगे हुए थे। पूरे भारत में नवपाषाण युग की संस्कृति का उदय सबसे पहले यहीं हुआ बताया गया था। आज चिरांद एक महत्वपूर्ण शहरी स्थान बन गया है।

मांझी

छपरा शहर से 20 कि.मी. पश्चिम गंगा के उत्तरी किनारे पर प्राचीन किले का अवशेष है। 30 फीट ऊँचे खंडहर में लगी ईंटे 18" x 10" x 3'' की है। यहाँ से प्राप्त दो मूर्तियों को स्थानीय मधेश्वर मंदिर में रखा गया है। इनमें भूमिस्पर्श मुद्रा में भगवान बुद्ध की एक मूर्ति है जिसे विशेषज्ञ मध्य काल में बनी बताते हैं। टीले के पूर्व में बने कम ऊँचाई वाले खंडहर को स्थानीय लोग राजा की कचहरी कहते हैं। अबुल फजल लिखित आइन–ए–अकबरी में मांझी को एक प्राचीन शहर बताया गया है। ऐसी धारणा भी है कि इस जगह का नाम चेर राजा माँझी मकेर के नाम पर पड़ा है।

सरजू और गंगा का संगम स्थल

सरजू नदी (अन्य नाम घाघरा, सरयू, शारदा) हिमालय से निकलकर गंगा के पठार में बहने वाली नदी है जो बलिया और छपरा के बीच में गंगा में मिल जाती है। ज्यादातर ब्रिटिश मानचित्रकार इसे पूरे मार्ग पर्यंत गोगरा या घाघरा के नाम से दिखाते रहे हैं किन्तु स्थानीय लोगों द्वारा पारम्परिक रूप में

इसे सरजू (या सरयू) कहा जाता है। इसके अन्य नाम देविका, रामप्रिया इत्यादि हैं। यह नदी बिहार के आरा और छपरा के पास गंगा में मिल जाती है। यहाँ इस नदी के किनारे अनेक पर्यटन स्थल स्थापित है। सारण क्षेत्र से गुजरने वाली यह नदी जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है। इसे देखने के लिए अनेक पर्यटक नदी तट पर आते हैं। सरयू और गंगा नदी के संगम स्थल पर एक अदभुत दृश्य देखने को मिलता है। यहाँ पर हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन आते है। अपने ऊपरी भाग में इसे काली नदी के नाम से जाना जाता है। यह काफ़ी दूरी तक भारत (उत्तराखण्ड राज्य) और नेपाल के बीच सीमा बनाती है।

सारण भूमि ने राजनितिक इतिहास के पन्नो में दर्ज किए नाम....

डॉ राजेन्द्र प्रसाद –भारत के राष्ट्रपतियों की सूची में पहला नाम डॉ राजेन्द्र प्रसाद का आता है। उनका पूरा नाम – राजेंद्र प्रसाद महादेव सहाय था। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष और स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति थे। उनका जन्म 1884 में ग्राम जिरादेई, सारन में हुआ था। उन्होनें नमक सत्याग्रह के दौरान सक्रियता से भाग लिया था और भारत छोडो आंदोलन में भी भाग लिया था। वही अकेले ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें लगातार दो बार भारत का राष्ट्रपति चुना गया। साथ ही वह एक भारतीय राजनीति के सफल नेता और सुलझे हुए वकील थे। भारतीय स्वतंत्रता अभियान के दौरान ही वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और बिहार क्षेत्र से एक बड़े नेता साबित हुए। महात्मा गाँधी के सहायक होने के कारण ब्रिटिश अधिकारियों ने राजेन्द्र प्रसाद को

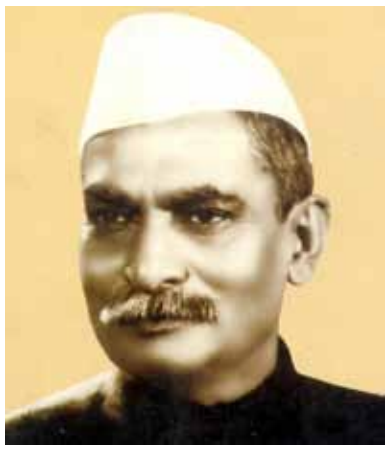

1931 के नमक सत्याग्रह और 1942 के भारत छोडो आन्दोलन में जेल में रखा था।

भिखारी ठाकुर

भोजपुरी के अमर कलाकार भिखारी ठाकुर

भिखारी ठाकुर भोजपुरी के प्रसिद्ध लोक कलाकार, रंगकर्मी लोक जागरण के सन्देश वाहक, लोक गीत तथा भजन कीर्तन के अनन्य साधक थे। वह बहु आयामी प्रतिभा के व्यक्ति थे। उन्हें 'भोजपुरी का शेक्सपीयर' कहा जाता है। भोजपुरी गीतों एवं नाटकों की रचना एवं सामाजिक कार्यों के लिये उनका नाम आज भी प्रसिद्ध हैं। वह लोक कलाकार के साथ ही साथ कवि, गीतकार, नाटककार, नाट्य निर्देशक, लोक संगीतकार और अभिनेता भी थे। भिखारी ठाकुर की मातृभाषा भोजपुरी थी और उन्होंने भोजपुरी को ही अपने काव्य और नाटक की भाषा बनाया।

विरासत

ठाकुर को भोजपुरी भाषा और संस्कृति का बड़ा झंडाबरदार माना जाता है। भोजपुरी झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बंगाल के कुछ हिस्सों सहित बिहार के प्रमुख हिस्सों में व्यापक रूप से बोली जाती है। वह केवल इसी क्षेत्र में ही लोकप्रिय नहीं हैं बल्कि उन शहरों में भी जहां बिहारी श्रमिक अपनी आजीविका के लिए चले गए उनका नाम जाना जाता है।

पर्यटकों के लिए.....

वैष्णो देवी में शुरू हुई केबल कार

श्रीमाता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की ओर से श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए वैष्णो देवी मंदिर से भैरो घाटी के बीच केबल कार शुरू की गई है। सर्दी के मौसम में श्रद्धालुओं को केबल कार सुबह आठ बजे से शाम 5:30 बजे तक उपलब्ध कराई जा रही है। केबल कार शुरू होने से 3.5 किलोमीटर का यह ट्रेक सिर्फ 3 मिनट में पूरा हो रहा है। एक तरफ से टिकट की कीमत 100 रुपये प्रति व्यक्ति है।

IRCTC: 2490 रुपये में वैष्णो देवी की यात्रा

वैष्णो देवी जाने का प्लान बनाने वाले श्रद्धालुओं के लिए इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन लिमिटेड (IRCTC) ने इकनॉमी पैकेज निकाला है। इस पैकेज के तहत कोई भी श्रद्धालु मात्र 2490 रुपये में नई दिल्ली से वैष्णो देवी की यात्रा कर सकता है। इस पैकेज में दोनों ओर की रेल यात्रा का किराया, दो बार नाश्ता और ठहरना भी शामिल है। अधिक जानकारी के लिए irctctourism.com देखें।

वास्तुकला

अनूठे पर्यटन स्थल

अभिरंजित काँच की खिड़कियां

– मोहन सिंह

आपने अनेक धार्मिक स्थलों का भ्रमण किया। कहीं भक्ति भाव से या फिर यूं ही एक पर्यटक के रूप में। आज हम आपको कुछ ऐसे क्रिश्चियन चर्चों के बारे में बता रहे हैं जहां की विशेषता है साज सज्जा के साथ बड़े ही कलात्मक रूप से कांच पर की गई चित्रकारी।

भारत में औपनिवेशिक काल के कई ऐतिहासिक चर्च हैं जो हमें स्कॉटिश विरासत की याद दिलाते हैं। वैसे कुछ इतिहासकारों का अनुमान है कि चौथी सदी के आसपास पश्चिमी मिशनरियों ने भारत में प्रवेश किया था। परन्तु ईस्ट इंडिया कम्पनी बनने पर भारत में ब्रिटिश लोगों के आने के बाद ही चर्चों का निर्माण आरंभ हुआ था। कैथोलिक, बैप्टिस्ट, मैथोडियन, प्रोटेस्टेंट्स आदि मत के लोगों ने अपने लिए चर्च बनवाए। ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन के दौरान, अधिकतर स्कॉटलैंड के लोगों ने कंपनी के लिए काम किया था। स्कॉटलैंड से आए इन अधिकारियों और उनके परिवारों की धार्मिक आस्था को देखते हुए उन्होंने कोलकाता, मद्रास, बैंगलोर आदि में चर्चों का निर्माण कराया। यह सारे चर्च मुख्य रूप से यूरोपीय समुदाय के लिए ही बनाए गए थे।

अभिरंजित काँच'स्टेंड ग्लास' से साधारणतः वही काँच (शीशा) समझा जाता है जो खिड़कियों में लगता है, विशेषकर जब विविध रंगों के काँच के टुकड़ों को जोड़कर कोई चित्र प्रस्तुत कर दिया जाता है। यूरोप के अधिकतर विख्यात गिरजाघरों में बहुमूल्य अभिरंजित काँच लगे हैं।

प्रारंभ

अभिरंजित या फिर रंजित काँच का प्रयोग विशेषकर ऐसी खिड़कियों में होता है जो खुलती नहीं थी/हैं और केवल प्रकाश आने के लिए लगाई जाती थीं। इसी उद्देश्य से गिरजाघरों के विशाल कमरों में बड़े अभिरंजित काँच (प्रकाश आने के लिए) दीवारों में लगाए जाते थे। काँच की इन खिड़कियों पर अधिकतर ईसाई धर्म से संबंधित चित्र जैसे ईसा का जन्म, बचपन, धर्मप्रचार, सूली अथवा माता–मरियम के चित्र अंकित होते थे और इन काँचों में से होकर जो प्रकाश भीतर आता है उससे शांति और धार्मिक वातावरण बनता है। अभिरंजित काँच की इन दीवारों में प्राकृतिक एवं पौराणिक दृश्य और महान पुरुषों के चित्र भी अंकित हैं।

कैंटरबरी के मध्यकालीन गिरिजाघर की खिड़की में लगे अभिरंजित काँच का एक नमूना

रंजित अथवा अभिरंजित काँच का कब और

*कंसल्टेंट तथा पत्रिका के प्रबंध संपादक, पर्यटन मंत्रालय

कहाँ प्रथम निर्माण हुआ यह आज तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। फिर भी, अधिकतर इतिहासकारों का मत है कि काँच के आविष्कार के कुछ समय बाद ही अभिरंजित काँच का आविष्कार भी संभवतः पश्चिमी एशिया के मिस्र में हुआ होगा। अपनी लोकप्रियता के कारण इस कला की उन्नति एवं विस्तार 12वीं शताब्दी से आरंभ होकर 14वीं शताब्दी तक रहा था। 16वीं शताब्दी में भी बहुत से कलायुक्त अभिरंजित काँच बने, परंतु इसी शताब्दी के अंत में इस कला का ह्रास आरंभ हुआ और 17वीं शताब्दी के अंत तक पश्चिमी एशिया में यह काला लगभग समाप्त सी हो गई। लेकिन इस दौरान यूरोप में कुछ कारीगर इस कला को बचाए रहे। आज भी यूरोप में कुछेक ऐसी संस्थाएं हैं जो अभिरंजित काँच बनाती हैं।

अभिरंजित काँच के निर्माण में तीन प्रकार के काँच प्रयोग में आते हैं।

(1) काँच जो द्रवण के समय ही सर्वत्र रंगीन हो जाता है।

(2) इनैमल द्वारा पृष्ठभूमि पर रंगा काँच।

(3) रजत लवण द्वारा पीला रंगा काँच।

आरंभ में उपयुक्त रंगीन काँच के टुकड़े एक नक्शे के अनुसार काट लिए जाते थे और चौरस सतह पर उन्हें नक्शे के अनुसार रख कर, उसमें बनाए जाने वाले जोड़ की रेखाओं में पिघले सीसे की धातु भर दी जाती है। इस प्रकार कांच के विविध टुकड़े एक दूसरे से जुड़ते हुए एक पट्टी में तब्दील हो जाते थे। इससे सीसा भी रेखा की तरह पट्टिका पर अंकित हो जाता है और आकर्षक लगता है।

यदि किसी विशिष्ट रंग का काँच उपलब्ध नहीं रहता तो काँच पर इनैमल लगाकर और फिर काँच को गरम करके अनेक प्रकार का एकरंगा काँच तैयार कर चित्रकारी की जा सकती है। आरंभ में गरम करने के पूर्व इनैमल को खुरचकर चित्र अंकित किया जाता था। मगर बाद में इनैमल द्वारा ही विभिन्न प्रकार के चित्र अंकित किए जाने लगे। इनैमल लगाने की क्रिया एक से अधिक बार भी की जा सकती है और इस प्रकार रंग को अपेक्षित स्थान पर गहरा या हल्का किया जा सकता है अथवा उस पर दूसरा रंग चढ़ाकर उसका रंग बदला जा सकता है।

रंगरहित काँच पर चांदी का लेप लगाने के बाद काँच को गरम करने से काँच की सतह पीली से नारंगी रंग तक की जा सकती है। यह रंग स्थायी और अति आकर्षक होता है। इस प्रकार के काँच को भी अभिरंजित काँच और इस क्रिया को 'पीत अभिरंजिकी' कहा जाता है। नीले काँच पर इस क्रिया से काँच हरा दिखाई पड़ता है।

इस प्रकार का काँच अभिरंजित काँच चित्रों के प्रयोग में आता है। भारत में अभिरंजित काँच की माँग

लगभग शून्य ही है इसलिए यहाँ पर यह उद्योग भी नहीं के बराबर है और जो लोग शायद इसे खरीदना भी चाहें तो यह इतना महंगा है कि खीदने वाले को चार बार सोचना पड़ता है। दिल्ली में ऐसे अभिरंजित कांच का मूल्य 3500 रूपए से 5500 रूपए प्रति वर्ग फुट है।

भारत में भी ऐसे कुछेक चर्चो में इस विरासती कलाकृति को आज भी देखा जा सकता है। आइए हम आज आपको कुछ ऐसे चर्चो के बारे में बताते हैं।

क्राइस्ट चर्च, कसौली

यदि आप हिमाचल प्रदेश में शिमला के निकट कसौली गए हों तो, यहां के मॉल रोड पर स्थित क्राइस्ट चर्च अवश्य देखा होगा। यह हिमाचल प्रदेश का सबसे पुराना चर्च है। इसकी खूबसूरत संरचना और प्राकृतिक सुंदरता देश भर से प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित करती है। चर्च की संरचना प्रतीकात्मक गॉथिक शैली वास्तुकला में डिजाइन की गई थी। कसौली में रहने वाले ईसाई परिवारों ने 1842 में सिर्फ एक क्रॉस की आकृति से इसकी नींव रखी थी। बाद में जुलाई, 1853 से इस चर्च का निर्माण शुरू किया गया था। जब चर्च बनाया गया था तब इस प्रकार के रंगीन शीशे इंग्लैंड से मंगवाए जाते थे। ब्रिटिश शासन के दौरान यह इमारत धार्मिकता और की सादगी का प्रतीक थी और उस समय पर्यटन जैसी कोई सोच नहीं थी।

अद्वितीय चर्च...

जैसे ही सूरज चमकता है। चर्च में लगी कांच की खिड़कियों में से होकर उसकी रंग बिरंगी किरणें हॉल में प्रवेश करती हैं। वास्तु–कला की दृष्टि से चर्च में सामने मुख्य हॉल, क्रूसिफ़ॉर्म फर्श, सुंदर अभिरंजित कांच की खिड़कियों और एक गलियारे में घड़ी का एक टॉवर भी बनाया गया जो खूबसूरत वेदी पर मूर्ति की ओर जाता है और यहां रंगीन कांच पर यीशु, यूसुफ और मरियम की तस्वीरें लगाई गई हैं। एक

कसौली चर्च की फोटो

पचमढी चर्च का एक चित्र

तस्वीर में यीशु को क्रूस पर भी दर्शाया गया है।

चर्च का सबसे रोमांचक हिस्सा है – इसका बाहरी भाग। जो 1850 से पहले से ही एक कब्रिस्तान से घिरा हुआ है। आज इसे ''शांत क्षेत्र'' कहा गया है। इसलिए पर्यटकों को यहां किसी प्रकार का शोर करने या जोर से बोलने की अनुमति नहीं है। पर्यटक यहां पक्षियों को देखने का आनंद लेते हुए कसौली के सुंदर नजारों को भी निहार सकते हैं। कसौली जाने के लिए अप्रैल से नवंबर का समय अच्छा रहता है क्योंकि इन महीनों में मौसम सुखद रहता है।

पचमढ़ी : मध्य प्रदेश के पचमढ़ी में आज भी ब्रिटिश काल की याद दिलाने वाले कई स्मारक मौजूद हैं। इनमें उस दौर में बना गिरजाघर प्रमुख हैं। सन् 1892 में बना रोमन कैथोलिक गिरजाघर फ्रेंच और आयरिश वास्तु–कला का बेहतरीन नमूना माना जाता है। इसका विशेष आकर्षण हैं, यहां खूबसूरत रंगीन बेल्जियम कांच से जड़ी खिड़कियां। ब्रिटिश लोगों द्वारा 1875 में बनाए गए, इस चर्च की वास्तुकला बहुत ही आकर्षक है। इसमें 'पवित्र–क्रूस' के पास एक गोलाकार गुंबद है जिसमें संतों के चित्रों से सजाया गया है। दीवारों और वेदी के पीछे की सज्जा करने के लिए यूरोप से अभिरंजित कांच के ''पैन'' आयात किए गए थे। जब सूर्य की किरणें उनसे गुजरती हैं तो अपने आप में एक भव्य दृश्य बन जाता है। चर्च की एक विशेषता जो लोगों का ध्यान खींचती है वह है इसकी छत और गुम्बद क्योंकि इन्हे 'सपोर्ट' देने के लिए एक भी स्तम्भ (पिलर) नहीं है। आप किसी भी मौसम में पचमढ़ी जा सकते हैं।

क्राइस्ट चर्च, वेल्लूर : यह चर्च प्रार्थना करने के अलावा वैसे भी देखने के लिए एक आदर्श गंतव्य है। मन को शांति प्रदान करने के साथ ही सांस्कृतिक परंपरा को देखने के लिए क्राइस्ट चर्च, वेल्लूर का आप न केवल भ्रमण करें बल्कि यहां आप शांति के कुछ यादगार क्षणों का भी आनंद लें।

कला के विश्व मानकों, असाधारण वास्तुकला और बड़ी खूबसूरती से निष्पादित 'लेआउट' पर्यटकों का मन मोह लेता है। यहां आने पर अपने साथ कैमरा लाने और विशेष क्षणों को 'कैप्चर' करने की कोई मनाही नहीं हैं। दिलचस्प और शानदार डिजाइनों, रंगीन परिदृश्य, मनोरंजक अक्षर, आस–पास का संगीत, रंगमंच की सामग्री और पास ही बाहर बने छोटे से संग्रहालय को देखने भी जरूर जाएं। क्राइस्ट चर्च, वेल्लूर, परिवार के साथ एक यादगार समय बिताने का अच्छा स्थान है। हमारी सलाह है कि जब भी आप इस ओर आएं, क्राइस्ट चर्च, वेल्लूर में धार्मिक पर्यटन करने एक बार जरूर जाएं।

सेक्रेड हार्ट चर्च पांडिचेरी

यह चर्च 100 वर्ष पुराना है। इस ऐतिहासिक चर्च की लंबाई 48 मीटर और चौड़ाई लगभग 18 मीटर है। लैटिन संस्कृति के अनुसार क्रॉस की आकृति ऊंचाई गॉथिक शैली में बनाई गई थी। इसकी संरचना में 24 मुख्य स्तंभ हैं। प्रवेश द्वार के ऊपर बाइबिल के छंद देख सकते हैं जो लैटिन में लिखे गए हैं। इस चर्च के अंदर ग्लास पेंटिंग में 28 संतों की तस्वीरें देख सकते हैं।

सेक्रेड हार्ट चर्च पांडिचेरी में दक्षिण बौलेर्ड पर स्थित है। यह गोथिक वास्तुकला के प्राचीन नमूनों में से एक है। इस चर्च में कांच के कुछ नायाब पैनल शामिल हैं जो यीशु मसीह और कैथोलिक चर्च के संतों के जीवन की विभिन्न घटनाओं को दर्शाता है।आज यह चर्च ईसाइयों के लिए प्रसिद्ध श्रद्धेय धार्मिक तीर्थ स्थल माना जाता है।

सना हुआ ग्लास से बनी इन खूबसूरत खिड़कियों को देखकर कोई भी व्यक्ति अपने आप को धन्य समझेगा। इस चर्च में हर साल विभिन्न धर्मो के पर्यटकों और भक्तों की बढ़ती संख्या से पता लगता है कि आज भी यह विशाल चर्च पांडिचेरी शहर में सबसे अद्भूत चर्चों में से एक है।

पांडिचेरी चर्च का एक चित्र

सेंट जॉर्ज कैथेड्रल चेन्नई

चेन्नई स्थित सेंट जॉर्ज कैथेड्रल चर्च सन् 1885 में बनाया गया था। इस चर्च का भारत के सभी चर्चों में एक प्रतिष्ठित स्थान है। इस चर्च में 2000 से अधिक लोगों के एक साथ खड़े होने के लिए एक बड़ा बाहरी हॉल बनाया गया है। यहां की उत्कृष्ट डिजाइनिंग देखने लायक है जो उस समय की स्थापत्य कला की प्रतिभा को दर्शाता है।

चर्च के बारे में...

आज भी यह माना जाता है कि स्थानीय लोगों ने चंदा एकत्र कर खुद के प्रयासों से इस चर्च का निर्माण कराया था। जब यह पूरा होने को था तब सरकार की ओर से 5000 रूपए की सहायता मिली थी। चूंकि उस समय इस चर्च के निर्माण पर लगभग दो लाख रुपए का खर्च आया था इसलिए यह सहायता एक तरह से नगण्य ही थी।

इस चर्च की वास्तुकला किसी भी पर्यटक को चकित करने के लिए पर्याप्त है। चर्च की आंतरिक साजसज्जा किसी को भी मंत्रमुग्ध कर देती है। जब भी कोई व्यक्ति इस चर्च में प्रवेश करता है, उसे एक सुखद वातावरण के परम आनंद का अहसास होता है।

इस चर्च को कई फर्मों ने कई अमूल्य वस्तुएं दान दी थी। इस चर्च में उपयोग में लाई जा रही वेदी की मेज मैसर्स. मदर्स डी. द्वारा दी गई, मैसर्स. बैन्बरी ने घंटियां और अन्य वस्तुएं दान की थी। प्रसिद्ध कैलर कारथर, जो 18–कैरेट के सोने से बना है, का उपयोग पवित्र आध्यात्मिकता के लिए किया जा रहा है। इन चीजों के अलावा, पूजा के लिए लोगों को इकट्ठा करने के दौरान भी एक बड़ा पाइप वाद्य है। इसी तरह रंगीन कांच की एक जोड़ी भी है जो चर्च की सुंदरता में चार चांद लगाती हैं। एक रंगीन कांच की खिड़की में, यीशु की शुरुआत की अवधि का चित्रण दिखाया गया है। दूसरे कांच में, पृथ्वी के साथ मैरी को चित्रित किया गया है।

चर्च के परिसर के अंदर संतों की मूर्तियां हैं। इसके अलावा शिक्षा से संबंधित प्रसिद्ध व्यक्तियों को दिखाया गया है। यह स्थान न केवल मन को शांति देता है बल्कि समाज में सीखने और सच्चाई को भी बढ़ावा देती है।

कैथेड्रल घंटी

चर्च में लगी आठ प्रसिद्ध घंटियां मैसर्स मेअर्स एंड स्टैनबैंक ने बनाई थीं जिन्हें 1873 के क्रिसमस समारोह में चर्च को दिया गया था। सभी घंटियों का आकार अलग अलग है। एक घंटी की ऊंचाई 42'' है। जबकि छोटी घंटी का आकार 24" है। सभी घंटियाँ चर्च के केंद्रीय हॉल में लगाई गई हैं और जमीन से लगभग 50 इंच ऊपर एक चबूतरे पर इन घंटियों को लगाया गया है। इन घंटियों को सहारा देने के लिए विशेष रूप से लकड़ी के स्लैब लगाए गए हैं। यह वाद्य प्रभु को समर्पित गीतों के गायन के समय उपयोग किया जाता है। आज भी यह चर्च हजारों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है।

सेंट एंड्रयूज चर्च बैंगलूरू

कर्नाटक के बैंगलूर शहर में कब्बन रोड पर स्थित सेंट एंड्रयू चर्च, स्कॉटलैंड के एक सेंट एंड्रयू के नाम पर रखा गया है। रूढ़िवादी प्रेस्बिटेरियन स्कॉटिश वास्तुकला में निर्मित यह ऐतिहासिक प्रेस्बिटेरियन चर्च, अपने टॉवर के शीर्ष पर एक लंबा बेलफ़ी और चाइमिंग घड़ी के साथ, इस शहर का एक आकर्षक स्थान है। 22 नवंबर 1866 को लेफ्टिनेंट–जनरल एवं क्वार्टर मास्टर जनरल ऑफ हर एक्सीलेंसी आर्मी सर

होप ग्रांट की पत्नी लेडी ग्रांट ने इसकी नींव रखी थी। इसकी कुल 45,000/– रूपए की लागत को मुख्य रूप से सदस्यों से तथा बाद में कुछ पैसा सरकार द्वारा वहन किया गया था।

यह भारत में सुंदर चर्चों में से एक माना जाता है मेजर सांकी (आयरलैंड के एक खिलाड़ी), मुख्य अभियंता और मैसूर के कार्यकारी अभियंता आर.सी. डोब्स ने इसका डिजाइन तैयार किया और इसके निर्माण में सहायता दी थी। मेजर सांकी ने नागपुर में ऑल साउल सैंट्स के एंग्लिकन कैथेड्रल को भी डिज़ाइन किया था। ईंट के रंग की इस गोथिक संरचना का आकार 105 फीट लंबा 57 फीट चौड़ा और 43 फीट ऊंचा है। इस चर्च की शानदार विशेषताएं, हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। रंगीन कांच की खिड़कियां और 90 फीट लंबा टावर के साथ बड़े प्रभावशाली गैबल्स हैं। अलंकृत वेदी सागौन की लकड़ी से बनी है। वेदी के ऊपर 25 फीट का रंगीन कांच लगा है। स्कॉटिश कलाकार एलेक्स वोलेंटाइन और उनके सहायक गार्डिनर द्वारा बनाए गए 15 पैनलों का सावधानीपूर्वक संलयन है। 1897 में रानी विक्टोरिया के शासनकाल की हीरक जयंती मनाने के लिए इसे बनाया गया था।

इसके आधार पर यीशु के साथ सेंट एंड्रयू, सेंट पीटर, सेंट पॉल और सेंट जॉन के पात्रों के चित्र हैं। कर्क के चर्च का प्रतीक ऊपर से देखा जा सकता है – सही पर अल्फा प्रतीक के साथ ज्वार झाड़ी और सही पर ओमेगा प्रतीक के बहुत ऊपर पर यीशु को चित्रित किया गया है।

यह चर्च छठी मद्रास नेटिव इन्फैंट्री के कर्नल थॉमस मैकगौन की पत्नी, मैरी एलिज़ाबेथ मैकगौन की याद में बनाया गया जिसकी 19 अप्रैल 1868 को स्कॉटलैंड के मार्सेली में मृत्यु हुई थी। सेंट एंड्रयू, मद्रास में मैरी एलिज़ाबेथ की स्मृति में एक स्मारक चर्च की वेदी के पीछे बनाया गया है।

चर्च मुख्य रूप से स्कॉटिश सेना मद्रास प्रेसीडेंसी और स्कॉटिश नागरिकों, स्थानीय मुख्य मण्डली का गठन किया और एग्मोर में स्कॉटिश समुदाय की सेवा करने के लिए सेंट एंड्रयू चर्च बनाया गया था। यहां आरंभ में मूल भारतीयों के बैठने के लिए सबसे पीछे व्यवस्था थी।

वास्तुकला

इस चर्च से नव–शास्त्रीय वास्तुकला की प्रमुख विशेषताओं का पता चलता है, यह लंदन के सेंट मार्टिन से प्रेरित है। यह मद्रास इंजीनियर्स के मेजर

थॉमस डे हैविलैंड और कर्नल जेम्स कैल्डवेल द्वारा डिजाइन और निर्माण किया गया था। चर्च की संरचना चक्राकार है। पृष्ठ भाग 24.5 मीटर के व्यास में, एक उथले चिनाई वाले गुंबद से एक गहरे नीले रंग का रंग का तख्त है। इसे सुनहरे सितारों से चित्रित किया गया है और गुंबद को सहारा दिया गया। इसके नीले रंग का इंटीरियर मुख्य वेदी के ऊपर रंगीन कांच की खिड़कियां बहुत ही समृद्ध रंगों में चर्च की महिमा को प्रदर्शित करता है।

कानपुर मेमोरियल चर्च

यह चर्च 1857 के युद्ध में मारे गए ब्रिटिश सैनिकों की याद में कानपुर छावनी के मध्य में बनाया गया था। इस चर्च का नाम "ऑल साउल्स कैथेड्रल" रखा गया था। बाद मे लोग इसे कानपुर मेमोरियल चर्च के नाम से जानने लगे। चर्च के निर्माण में लाल रंग की ईंटों का उपयोग करके लोम्बार्डी गॉथिक शैली के वास्तुकला को दर्शाते हुए चर्च का निर्माण सुंदर तरीके से किया गया है। इस ऐतिहासिक और प्रसिद्ध चर्च का डिजाइन बंगाल रेलवे के वास्तुकार वाल्टर ग्रैनविले द्वारा बनाया गया था।

चर्च में रंगीन कांच को खूबसूरती से चित्रित किया गया है और इस प्रकार इसके भीतरी भाग में की गई कलाकारी आगंतुकों को सहज ही अपनी ओर खींच लेती है।

उस समय इस शहर को Cawnpore कहा जाता था। कानपुर क्लब के पास कानपुर छावनी के केंद्र में स्थित यह चर्च पहले ऑल सोल्स कैथेड्रल के नाम से जाना जाता था। इसके एक किनारे पर कब्रिस्तान है जिसमें ब्रिटिश लोगों और सिपाहियों की कब्रें हैं। इस चर्च के पूर्वी भाग में एक स्मारक बागीचा भी है, जहाँ दरवाजे लगाए गए हैं। शहर में किंग एडवर्ड VII के स्मारक हॉल भी है जो कि इसकी सुंदरता के लिए बहुत ही ध्यान देने योग्य है और इसे शांति का प्रतीक माना है। जब कभी आप कानपुर शहर घूमने या किसी और काम से आएं तो अपनी खूबसूरत वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध कानपुर मेमोरियल चर्च पर जाना नहीं भूलें।

सेंट जेम्स चर्च दिल्ली

दिल्ली का सेंट जेम्स चर्च एंग्लिकन मान्यताओं

से जुड़ा है। इसे स्किनर चर्च के रूप में जाना जाता है 1836 में कर्नल जेम्स स्किनर ने इसका निर्माण कराया था। दिल्ली में कश्मीरी गेट के पास लोथियन रोड और चर्च रोड के मोड़ पर स्थित यह चर्च शहर के सबसे पुराने कैथेड्रल में से एक है। जब तक कि 1931 में गुरुद्वारा रकाब गंज के पास कैथेड्रल चर्च ऑफ रिडेम्पशन का निर्माण नहीं हुआ था, तब तक भारत के वायसराय भी इसी चर्च में आते थे।

इतिहास

इंग्लैंड के कर्नल जेम्स स्किनर ने चर्च के निर्माण की शुरुआत की थी। प्रारंभ में, मेजर रॉबर्ट स्मिथ के डिजाइन के अनुसार एक भवन का निर्माण किया गया। शुरुआत 1826 में शुरू हुई थी और इस पर 95,000 रुपये खर्च किए जाने का अनुमान था। सन् 1836 में यह चर्च बनकर पूरा हुआ था। इसका डिजाइन पुनर्जागरण शैली का है। जहां तीन पोर्च या पोर्टिको बड़े आकार की खिड़कियां और एक गुंबद रंचित कांच की मौजूद है, जैसा कि फ्लोरेंस कैथेड्रल में इटली में पाया जाता है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में यह चर्च काफी क्षतिग्रस्त हो गया था और बाद में इसकी मरम्मत कराई गई थी।

वास्तुकला

तांबे से बना एक क्रॉस और गेंद मौजूद थी जो वेनिस के चर्च की तरह है। चर्च के मुख्य प्रवेश द्वार में स्टेन ग्लास से बनी की खिड़कियां और कई कॉलम मौजूद हैं।

मेकिंग माई ट्रिप, ट्रिवागो तथा कई ऐसी बेवसाईट हैं। चेन होटल्स की भी अपनी बेवसाईट होती है जहां से आसानी से बुकिंग की जा सकती है। याद रखें कि जितना पहले बुक करेंगे उतना ही डिस्काउंट रेट मिलता है, यदि आप सस्ते विकल्प चुनना चाहते है तो ओयो ऐप पर जाकर बुकिंग कर सकते है। बड़े परिवार के लिये एक और अच्छा विकल्प ''एअर बीएनबी'' है, यहां पर सर्विस अपार्टमेंट बुक किये जा सकते है। यह कमरा या फिर पूरा यूनिट किराये पर देते है और इसमें किचिन वाशिंग मशीन इत्यादि की सुविधा भी मिल जाती है। इस प्रकार एअर बीएनबी में बुकिंग करने से एक या दो समय का भोजन स्वयं बनाकर काफी पैसा बचा सकते है। कई स्थानीय निवासी भी अपने घरों में कमरे किराए पर देते हैं। इन्हें होम स्टे कहा जाता है, यह भी एक सस्ता एवं सुविधाजनक विकल्प है।

छुट्टियां शुरू होने पश्चात

यदि आप निम्नलिखित बातो को ध्यान में रखेंगे तो आप बहुत ही सुनियोजित तरीके से और बहुत कम खर्च में अपने प्रवास का आनंद ले सकेंगे ।

आप जिस स्थान पर घूमने जा रहे हैं वहां के बारे में पूरी जानकारी लेना भी अच्छा रहेगा। होटल की टेबल डेस्क या टूरिस्ट ब्रोशर्स आपकी मदद कर सकते हैं। इससे आपको कोई असानी से धोखा नही दे सकेगा ।

रात को सोने से पहले अगले दिन का कार्यक्रम बना लें कि पहले कहां जाना है, कैसे जाना है, कहां से टिकट मिलेगा उसके बाद कहां जाएंगे इत्यादि। दैनिक यात्रा कार्यक्रम बनाने से हम समय के अभाव में भी ज्यादा अनुभव का फायदा ले सकते है।

* किसी भी पर्यटन स्थल पर कुछ न कुछ खरीददारी हमारे पर्यटन का जरूरी हिस्सा होता है जो हमें छुट्टियों की याद रखने में मददगार होती है। ऐसे में कुछ भी खरीदने के बजाय स्थानीय कलाकृतियां, हस्तशिल्प का सामान आदि लें। यह कोशिश करें कि खरीददारी सरकारी मान्यता प्राप्त दुकानों या स्थानीय दुकानों से ही खरीदें। पर्यटन स्थलों पर स्थित दुकानदार अक्सर बहुत महंगे में सामान बेचते हैं। छुट्टियों के आखिरी दिनों में खरीददारी करने से हमें अपने बजट का भी ध्यान रखना उचित होगा और हम फिजूलखर्च से बचते हैं ।

* दैनिक भोजन के लिये भी ऑनलाईन ऐसा ढाबा खोजें जहां लोग अधिक आते हों, इस प्रकार हम कम खर्च में स्थानीय व्यंजनों का आनंद ले सकेंगे।

* किसी होटल या ''होम–स्टे'' में बुकिंग करते समय ऐसे स्थान का चयन करें, जहां ब्रेकफास्ट कम्पलीमेंटरी हो तो यह हमें और किफायती पड़ता है।

* बहुत सारे होटल एवं रिसोर्ट मॉडिफाइड अमेरिकन प्लान पर कमरा देते हैं जिसमें नाश्ता तथा एक टाईम का खाना भी शामिल होता है। इससे हमारे पैसे बचते हैं।

इस प्रकार से जब हम सुनियोजित तरीके से अपनी छुट्टियों को साकार बनाएंगे तो हम न केवल कम खर्च में पर्यटन का आनंद ले सकेंगे अपितु कम खर्च में देश विदेश घूमने और अलग–अलग अनुभव प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित होंगे और हमें घूमने फिरने का एक अलग ही आनंद मिलेगा ।

अ

महिला सशक्तिकरण

–दीपक कुमार

नरेन्द्र मोदी जी ने महिला दिवस पर कहा था कि देश की तरक्की के लिये पहले हमें भारत के महिलाओं को सशक्त बनाना होंगा । पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी कहा था कि ''देश और समाज को जगाने के लिए महिलाओं का जागृत होना जरूरी है। एक बार जब वह अपना कदम बढ़ाती है तो परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर बढ़ता होता है।''

देश को पूरी तरह से शक्तिशाली बनाने के लिए महिला सशक्तिकरण बहुत जरूरी है और इसके लिए महिलाओं को अधिकार देना है। भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों का हनन करने वाली सोच जैसे दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन उत्पीड़न, असमानता, भ्रूणहत्या, घरेलू हिंसा, मानव तस्करी और वैश्यावृत्ति जैसे अपराधों को समाप्त करना जरूरी है। इस तरह की बुराईयों को मिटाने के लिये भारत के संविधान में उल्लिखित समानता के अधिकार को महिलाओं के लिए सुनिश्चित करना ही उन्हें सशक्त बनाने का एक प्रभावशाली उपाय है ।

भारत एक सांस्कृतिक और बौद्धिक देश माना जाता है । प्राचीन समय से ही भारत में महिलाएँ अग्रणी भूमिका में रही थी। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, किट्टूर की रानी चेनम्मा, मांडला की रानी दुर्गावती दिल्ली की रजिया सुलतान को कौन नहीं जानता जिन्होंने अपने देश की रक्षा के लिए दुश्मनों के दांत खट्टे किए ?

सबसे पहले हमें यह जानना चाहिये कि 'सशक्तिकरण' क्या होता है। 'सशक्तिकरण' से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिससे उसमें इतनी समझ आ जाती है कि वह अपने से संबंधित सभी निर्णय स्वयं कर सके। महिला सशक्तिकरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं

भारतीय संविधान के प्रावधान के अनुसार, पुरुषों की तरह सभी क्षेत्रों में महिलाओं को भी बराबर का अधिकार प्राप्त है। महिला सशक्तीकरण को सुदृढ करने के लिए ही देश के कई भागों में पंचायतों में पंच और सरपंच के पदों पर महिला के लिए आरक्षित कर दिए गए है, फिर भी सुनने में आता है कि बहुत से कार्यों में उनके स्थान पर उनके पति ही कार्यो में हस्तक्षेप करते हैं। मीडिया में सरपंचपति आदि जैसे शब्द भी पढ़ने सुनने को मिलते हैं।

''महिला सशक्तिकरण'' के नारे के साथ एक प्रश्न उठता है कि क्या वास्तव में ही महिलाएं मजबूत बनी है और क्या उनका लंबा संघर्ष समाप्त हो चुका है। राष्ट्र के विकास में महिलाओं की सच्ची महत्ता और अधिकार के बारे में समाज में जागरुकता लाने के लिये भारत सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है। फिर भी, कई बार ऐसा लगता है कि महिलाओं को उनका पूरा लाभ नहीं मिल रहा है ।

आज भी देश में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता है जहाँ महिलाएं समाज ही नहीं, अपने परिवार के बुरे बर्ताव से भी पीड़ित है। आज भी देश में अनपढ़

*होटल प्रबंधन संस्थान, हैदराबाद(तेलंगाना) में प्रथम वर्ष के छात्र

महिलाओं की एक बड़ी संख्या मौजूद है। उचित शिक्षा और आजादी के लिये उनको कभी भी मूल अधिकार नहीं दिए गए। यह पीड़ित महिलाएं पुरुषप्रधान की सोच के कारण हिंसा और दुर्व्यवहार को सहन कर रहीं हैं और समाज में पिछड़ती जा रही है।

प्राचीन काल से ही भारत अपनी सभ्यता,सांस्कृतिक विरासत, परंपरा, धर्म और भौगोलिक विशेषताओं के लिये जाना जाता है, जबकि दूसरी ओर यह अपनी पुरुषप्रधान सोच के रुप में भी प्रसिद्ध है । महिलाओं को बहुत से अधिकार प्राप्त होने के बावजूद समाज तथा परिवार में उनके साथ बुरा व्यवहार भी किया जाता है। आज भी वह घरों की चारदीवारी तक ही सीमित रहती है और केवल पारिवारिक जिम्मेदारियां पूरी करना ही उनका कर्तव्य समझा जाता है। उन्हें अपने अधिकारों और विकास से बिल्कुल अनभिज्ञ रखा जाता है। नारी सशक्तिकरण का असली अर्थ तभी सार्थक होगा जब उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाए और उन्हें इस काबिल बनाया जाए कि वह हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर फैसले कर सकें।

यदि एक महिला अच्छी पारिवारिक योजना से परिवार की आर्थिक स्थिति के अनुसार उसका प्रबंधन कर सकती है तो उसका कारण उसमें अपने परिवार के लिए एक जिम्मेदारी की भावना होती है । इसलिए हमें स्वीकार करना होगा कि महिला में वह ताकत होती है जो समाज और देश में बहुत कुछ बदल सकती हैं क्योंकि वह सभी समस्याओं का अच्छी तरह से समाधान निकाल लेती है।

हाल ही के कुछ वर्षों से देश को महिला सशक्तिकरण का लाभ मिल रहा है। महिलाएँ अपने स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी, तथा परिवार, देश और समाज के प्रति जिम्मेदारी को लेकर ज्यादा सचेत हुई है। वह हर क्षेत्र में प्रमुखता से भाग लेकर अपनी क्षमता प्रदर्शित कर रही हैं। आखिर अनेक वर्षों के संघर्ष के बाद उन्हें उनका अधिकार मिला है।

जैसा कि हम सभी जानते है कि भारत में पुरुष प्रधान समाज है जहाँ हर क्षेत्र में पुरुष का दखल होने के बाद भी घर–परिवार की व्यवस्था का दायित्व

महिला पर ही होता है। मगर इसके साथ ही उन पर कई पाबंदियां भी होती है। आज देश लगभग 50 प्रतिशत आबादी महिलाओं की है। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ हुआ कि पूरे देश की आधी आबादी अभी भी अनेक सामाजिक बंधनों से बंधी है। ऐसी स्थिति में हम कैसे कह सकते हैं कि भविष्य में हमारा देश विकसित हो पायेगा। अगर हमें अपने देश को विकसित बनाना है तो सरकार ही नहीं बल्कि समाज द्वारा भी महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है ।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता इसलिये भी जरूरी है क्योंकि प्राचीन काल से ही भारत में लैंगिक असमानता रही थी। महिलाओं को उनके अपने परिवार और समाज द्वारा कई कारणों से दबाया गया तथा उनके साथ कई प्रकार की हिंसा हुई और परिवार और समाज में भेदभाव भी किया गया। ऐसा केवल भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में भी दिखाई पड़ता है।

महिलाओं के लिये प्रति समाज में चले आ रहे गलत तथा पुराने चलन को परंपरा और नये रीति–रिवाजों में ढ़ाल दिया गया था। पारिवारिक सदस्यों द्वारा उनके सामाजिक–राजनैतिक अधिकारों (जैसे काम करने की आजादी, शिक्षा का अधिकार आदि) को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया गया। महिलाओं के प्रति इन कुप्रथाओं के खिलाफ कुछ खुले विचारों के लोगों और विद्वानों द्वारा आवाज उठाई गई ।

राजा राम मोहन रॉय के सतत प्रयासों से ही अंग्रेजों ने भारत में सती प्रथा को खत्म किया था। भारत में विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिये ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने आवाज उठाई और उनकी कोशिशों से ही विधवा पुर्नविवाह अधिनियम 1856 बनाया गया। दूसरे भारतीय समाज सुधारकों में आचार्य विनोबा भावे, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा ज्योतिराव फुले, और सावित्रीबाई फूले आदि का नाम

उल्लेखनीय है जिन्होंने महिला उत्थान और उनके अधिकारों की दिशा में संघर्ष किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार ने भी महिलाओं के विरूद्ध हो रहीं लैंगिक असमानता और कुप्रथाओं को हटाने के लिये कई संवैधानिक और कानूनी प्रावधान लागू किये गये हैं जैसे कि समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976, दहेज निषेध अधिनियम 1961, अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम 1956, मेडिकल टर्म्नेशन ऑफ प्रेग्नेंसी अधिनियम एक्ट 1987, बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006, लिंग परीक्षण तकनीक (नियंत्रक और गलत इस्ते माल के रोकथाम) 1994, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण अधिनियम 2013 आदि। यह सभी कानून महिला सशक्तिकरण की दिशा में किए गए प्रयास हैं। परिणामस्वरूप, अनेक स्वयं–सेवी समूह और गैर सरकारी संगठन आदि इस दिशा में कार्य कर रहे है और समाज में महिलाओं में उनके अधिकारों के प्रति जागरुकता ला रहे हैं।

लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता–पिता की अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी के कारण लड़कियों की शिक्षा की अनदेखी, कम उम्र में विवाह करने का प्रचलन देखा जा सकता है। एक बेहतर शिक्षा की शुरुआत बचपन से घर पर हो सकती है, महिलाओं के उत्थान के लिये एक स्वस्थ परिवार की जरुरत है जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है।

लैंगिक समानता को प्राथमिकता देते हुए महिला सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये इन्हें और अधिक प्रचारित किए जाने की जरूरत है ताकि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रुप से मजबूत हो सकें।

"हटा दो सब बधाएँ मेरे पथ की
मिटा दो आशंकाएं सब मन की
जमाने को बदलने की शक्ति को समझो
कदम से कदम मिला के चलने तो दो मुझको।"

शुभकामनाएँ

इस तिमाही में सेवा निवृत्त होने वाले कार्मिक

Ø-l-	uke	in	ekg
1.	श्रीमती रश्मि वर्मा	सचिव (पर्यटन)	नवंबर, 2018
2.	श्री जे.पी. शॉ	क्षेत्रिय निदेशक, भारत पर्यटन, कोलकाता	नवंबर, 2018
3.	श्री बिजेन्द्र	स्टाफ कार ड्राईवर	नवंबर, 2018

पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं।

–अतुल्य भारत

वीरता के पर्यटन स्थल

याद इन्हें भी कर लें

लौंगेवाल के हीरों

—प्रस्तुति : ओम प्रकाश मीना

भारत और पाकिस्तान के बीच छिड़ा 1971 का युद्ध चल रहा था इसी बीच 4 दिसंबर को मेजर कुलदीप सिंह को सूचना मिली कि पाकिस्तान की एक बड़ी फौज लौंगेवाला चौकी की ओर बढ़ रही है। लौंगेवाला चौकी की सुरक्षा की जिम्मेदारी जिस सैन्य टुकड़ी के पास थी, उसका नेतृत्व मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी कर रहे थे। उस समय उनके पास 120 सैनिक थे और इतनी बड़ी फौज का सामना करना मुश्किल था। कुछ समय में लौंगेवाला चौकी पर पाकिस्तानी टैंक गोले बरसाने लगे। भारतीय सैनिकों ने भी जवाबी हमले में रिकॉइललेस राइफल और मोर्टार से फायरिंग शुरू कर दी। पाकिस्तानी सेना में करीब दो हजार जवान थे और भारतीय सैन्य टुकड़ी में बमुश्किल 120 जवान, फिर भी उनका हौसला मजबूत था। रात होते–होते पाकिस्तान के 12 टैंक तबाह कर दिए और आठ कि. मी. दूर तक पाकिस्तानी सैनिकों को खदेड़ दिया था।

1971 में भारत–पाक युद्ध के दौरान लौंगेवाला की सीमा चौकी पर हुई जंग में पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ाने वाले 'असली हीरो' कुलदीप सिंह चांदपुरी नहीं रहे। उन्होंने 17 नवम्बर,2018 को मोहाली के फोर्टिस अस्पताल में अंतिम सांस ली जहां उनका कैंसर का इलाज चल रहा था। वह 78 वर्ष के थे। उन्हें श्रद्धांजली देते हुए याद करें कि क्यों याद किया जाता है लौंगेवाला का युद्ध...

*सहायक निदेशक, पर्यटन मंत्रालय

लौंगेवाला जैसलमेर, राजस्थान में थार रेगिस्तान पर एक छोटा सा शहर है। यह पाकिस्तान की सीमा से लगा है। इस जगह का अपना एक अलग ही महत्व है क्योंकि यहां 1971 में 4–5 दिसंबर को भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ था। इसमें पाकिस्तान ने भारत पर लगभग 3000 बम गिराए थे, लेकिन फिर भी जीत भारत की हुई थी। आज हम आपको बताते हैं कि क्या थी इस युद्ध की खास बातें...

लौंगेवाला चौकी को आज 'इंडो–पाक पिलर 638' के नाम से जाना जाता है। 1971 में पाकिस्तान ने भारत की लौंगेवाला चौकी पर हमला कर दिया था। यहां से उनका जैसलमेर जाने का प्लान था, लेकिन वो कामयाब नहीं हो सके थे। इस जंग में भारत के दो जवान शहीद हुए थे, जबकि पाकिस्तान को अपने 200 से अधिक सैनिक गंवाने पड़े।

2000 से ज्यादा पाकिस्तानी सैनिक 'लौंगेवाला में नाश्ता, रामगढ़ में लंच और जोधपुर में डिनर' का सपना लिए आधी रात को भारतीय सीमाओं की ओर बढ़े थे। हालांकि, सुबह भारतीय एयरफोर्स की जवाबी कार्रवाई के बाद पाकिस्तान अपने कदम पीछे खींचने को मजबूर हो गया था। पंजाब रेजीमेंट के 120 जवानों के अलावा बीएसएफ के कुछ सुरक्षाकर्मियों ने दो हजार से ज्यादा पाकिस्तानियों को खदेड़ दिया। पाकिस्तानी सैनिकों के पास 50 से ज्यादा टैंक थे वहीं, भारत के पास बहुत कम हथियार थे। इसके बावजूद, उन्होंने पाकिस्तानी सेना को पूरे छः घंटे तक सीमा पर रोके रखा।

लौंगेवाला की लड़ाई के बाद का एक दुर्लभ फोटो।

ब्रिगेडियर कुलदीप सिंह का जन्म 22 नवंबर 1940 को पंजाब के जिले मांटगुमरी में (जो अब पाकिस्तान में है) एक गुर्जर सिख परिवार में हुआ था। कुलदीप सिंह 1962 में भारतीय थल सेना में शामिल हुए थे और 1963 में उनको पंजाब रेजिमेंट की 23वीं बटालियन में कमिशन दिया गया था। उन्होंने पश्चिमी सैक्टर में हुए भारत पाक युद्ध में हिस्सा लिया। युद्ध के बाद वह एक वर्ष के लिए संयुक्त राष्ट्र की ओर से इमर्जेसी फोर्स में गाजा में भी अपनी सेवाएं दे चुके थे। सेना से रिटायर होने के बाद वह सपरिवार चंडीगढ़ में रहते थे। श्री कुलदीप सिंह चांदपुरी को अपनी जांबाजी और कुशल नेतृत्व के लिए जाना जाता है। भारत सरकार ने युद्ध के दौरान दिखाए गए पराक्रम और योगदान के लिए उन्हें महावीर चक्र से सम्मानित किया था।

वास्तव में पाकिस्तानी सेना ने पूर्वी पाकिस्तान में दिखती अपनी जबरदस्त हार के बाद तय किया कि अगर पश्चिमी क्षेत्र में भारत के कुछ इलाकों पर कब्जा कर लिया जाए तो भारत पर दबाव बना सकते थे। इस कड़ी में उन्होंने जैसलमेर पर कब्जा करने की योजना बनाई क्योंकि उस समय भारत का सारा ध्यान पूर्वी सीमा पर लगा हुआ था। इसलिए पश्चिमी क्षेत्र में सेना कम थी। इधर लौंगेवाला की चौकी पर कुल 120 जवान थे। उस समय वहां मेजर कुलबीर सिंह चांदपुरी कमांडर थे। जब उन्हें पता चला कि पाकिस्तानी सेना ने जबरदस्त हमला कर दिया है तो उन्होंने ऊपर से सहायता मांगी। चूंकि रात का समय था, इसलिए उन्हें आदेश किए गए कि वहीं डटे रह कर दुश्मन को रोको और अगर हालात बेकाबू हो तो पीछे हटकर रामगढ़ आ जाए। कम से कम छः घंटे से पहले सहायता मिलने की उम्मीद नहीं थी क्योंकि उस समय हमारी वायुसेना के पास रात में देखने के उपकरण नहीं थे। मेजर कुलबीर ने पीछे हटने के

बजाय वहीं डट कर मुकाबला करने का फैसला किया और जिस तरह से उस चौकी पर नेतृत्व किया भी आज वह भारतीय सेना के इतिहास में एक मिसाल माना जाता है।

मेजर कुलबीर सिंह ने सारे हालात को देखते हुए युद्ध का सामना किया और 12 टैंक ध्वस्त कर दिए। सुबह उजाला होते ही भारतीय वायुसेना सहायता के लिए आ गई। वायुसेना के आते ही सब कुछ बदल गया। वायुसेना ने बमबारी कर पाकिस्तान के 22 टैंक नष्ट कर दिए।

वायुसेना के इतिहास में शायद पहली बार हुआ होगा कि जैसलमेर से उड़े हमारे लडाकू जहाजों को धूल के कारण कुछ नहीं दिख रहा था और वह सड़क को देखते हुए ही 'लौंगेवाला' पहुंचे थे। इस लड़ाई में पाकिस्तानी सेना के सैंकड़ों सैनिक मारे गए और उनके टैंक और गाड़ियां भी नष्ट कर दी गई। कुछ घंटें पहले ही जोधपुर पर कब्जा करने वाली पाकिस्तानी सेना को खुद को और अपने इलाको को बचाने की फिक्र लग गई थी।

मेजर कुलदीप सिंह ने उस लड़ाई का जिक्र करते हुए अपने एक साक्षात्कार में बताया था....

''भारत–पाकिस्तान में लड़ाई चल रही थी। 4 दिसंबर की रात को हमें खबर मिली कि दुश्मन की एक बड़ी फौज लौंगेवाला चौकी की तरफ बढ़ रही है। उस वक्त लौंगेवाला चौकी पर हम कुल 120 लोग ही थे और इंचार्ज मैं था। कंपनी के 29 जवान और लेफ्टिनेंट धर्मवीर इंटरनेशनल बॉर्डर की पेट्रोलिंग पर थे। हम लड़ाई के लिए तुरत तैयार नहीं थे और 58 टैंकों वह हथियारों से लैस दुश्मन लौंगेवाला की ओर बढ़ा आ रहा था। ब्रिगेडियर ई.एन. रामदास ने कहा कि या तो वहीं रूक कर चौकी की रक्षा करें या खतरा ज्यादा हो तो रामगढ़ के लिए पैदल ही निकल जाएं और फैसला मुझ पर छोड़ दिया गया कि क्या करना था? हम चाहते तो बटालियन को लेकर रामगढ़ जा सकते थे। मुझे लगा कि पीछे हटने का मतलब भागना भी होता है लेकिन मैं था पंजाब का बेटा पीछे कैसे हटता ?

''हमारी टुकड़ी पंजाब रेजिमेंट की थी, जिसमें ज्यादातर जवान सिख और पंजाबी थे, साथ ही कुछ राजस्थान के जैसलमेर से भी थे। हमें एक विकल्प चुनना था या तो मैदान छोड़कर भाग जाएं या फिर दुश्मन से सीधी टक्कर लें। और...हमने वहीं रुककर पाकिस्तानी सेना से दो–दो हाथ करने की ठानी और जवानों को कार्रवाई करने का आदेश दिया।''

''अंधेरा हो चला था.....हैड क्वार्टर से किसी तरह की मदद मिल पाने की उम्मीद नहीं थी। हम बिना देरी किए दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देने की तैयारी में लग गए। कुछ ही देर बाद पाकिस्तानी टैंक गोले बरसाते हुए हमारी ओर आते दिखाई दिए। हम बिना किसी डर के दुश्मन की सेना पर टूट पड़े और जीप पर लगी रिकॉयललैस राइफल और मोर्टार से फायरिंग शुरू कर दी। शुरु में ही हमारी जवाबी कार्रवाई इतनी दमदार थी कि पाकिस्तान सेना कुछ दूरी पर आकर रुक गई।''

''सभी जवानों का बस एक ही लक्ष्य था कि किसी भी तरह से पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ने से रोका जाए। जितने भी जवान थे उन्हें लेकर दुश्मन की सेना पर हमला बोल दिया। यदि ऐसा नहीं करते तो शायद लौंगेवाला पर पाकिस्तान का कब्जा होता।''

''पाकिस्तान सेना में तकरीबन 2000 सैनिक थे

और हमारे पास केवल 120 जवान। भारतीय सैनिकों के इरादे मजबूत थे, रात भर इसी तरह गोलाबारी जारी रही और रात भर में इस छोटी टुकड़ी ने पाकिस्तान के 12 टैंक तबाह कर दिए थे। पाकिस्तानी सेना के इरादे के मुताबिक वह हमारी चौकी पर कब्जा कर रामगढ़ होते हुए जैसलमेर जाना चाहते थे। मगर हमारे जवानों के फौलादी इरादे उनके सामने दीवार बनकर खड़े थे। बस हमें आखिरी दम तक खड़े रहना था। हवाई मदद मिलना संभव नहीं हो रहा था क्योंकि हंटर एयरक्राफ्ट रात के अंधेरे में हमला नहीं कर सकते थे। अब सिर्फ सुबह का इंतजार था। उस समय हमारे पास आज की तरह आधुनिक हथियार भी नहीं थे। सुबह के इंतजार में पूरी रात लड़ते रहे लेकिन दुश्मन सेना को अपनी सीमा में पांव नहीं रखने दिया।''

''5 दिसंबर 1971 को सूरज की पहली किरण निकलते ही सुबह 7:00 बजे लौंगेवाला के रणक्षेत्र में विंग कमांडर एमएस बावा का विमान मंडराया और नीची उड़ान भरकर हंटर से पाकिस्तानी टी–59 टैंकों को निशाना बनाना शुरू कर दिया। कुछ ही देर में तीन और हंटर आ गए जिन्होंने लौंगेवाला में पाकिस्तानी टैंकों पर बम बरसाने शुरू किए तो पाकिस्तानी सेना उल्टे पांव भागने लगी। पहले ही बार में उनके कुल 18 टैंक नष्ट किए गए। वायुसेना के हंटरों ने फिर कहर बरपाना शुरू किया और पूरी टैंक ब्रिगेड और रेजीमेंट का सफाया कर दिया। जब मदद के तौर पर पहला विमान मंडराया तो जवानों की खुशी का ठिकाना नहीं था और उनका उत्साह देखने लायक था।''

''थार के रेगिस्तान में जैसलमेर जिले की लौंगेवाला चौकी पर मिली हार को पाक सेना शायद ही कभी भुला पाएगी। इस चौकी पर कब्जा जमाने के प्रयास में पाकिस्तान सेना को अपने 34 टैंक, बहुत सी बख्तरबंद गाडियों और दो सौ से अधिक जवानों से हाथ धोने पड़े। इसके बावजूद चौकी पर कब्जा नहीं हो सका। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद दुनिया में यह पहला अवसर था जब किसी सेना ने एक रात में इतनी बड़ी संख्या में अपने टैंक गंवाए हों।''

''पाकिस्तानी सेना तो इस इरादे से आगे बढ़ी थी कि वह भारतीय सेना को धराशायी कर देगी और उनका सुबह का नाश्ता लौंगेवाला में दोपहर का खाना जोधपुर में और डिनर दिल्ली में होगा। लेकिन बाजी पलट गई, नजारा कुछ और ही था। सुबह तक हमें हंटर विमानों की मदद मिल गई थी जिनकी मदद से पाकिस्तानियों के परखच्चे उड़ा दिए थे। 6 दिसंबर के दिन ही हम दुश्मन को खदेड़ते हुए पाकिस्तान के अंदर आठ कि.मी.तक जा घुसे। 14 दिसंबर तक हमने वहीं पर डेरा जमाए रखा। वहीं खाना बनता और वहीं पर खाते। मुझे अच्छे से याद है 14 दिसंबर की सुबह भी हम पाकिस्तान की सीमा में बैठे नाश्ता कर रहे थे। 16 दिसंबर तक भारत ने जंग जीत ली। इसके बाद हम अपनी सीमा में वापस आए थे।''

लौंगेवाला को टैंकों की कब्रगाह कहते हैं क्योंकि दुनिया में शायद ही ऐसी कोई जगह हो जहां इतने कम समय में दुश्मन के शक्तिशाली टैंकों को नष्ट किया गया था। 12 टैंक थल सेना ने और 22 टैंक वायुसेना ने कुल मिलाकर 34 टैंक तोड़े गए। आज भी लौंगेवाला में पाकिस्तानी टैंकों और दूसरे वाहनों के टुकड़े इधर उधर बिखरे देखे जा सकते हैं।

लौंगेवाल में युद्ध की याद में एक विजय स्तम्भ स्मारक बनाया गया है। यहां एक छोटा 'वार म्यूजियम' भी बनाया गया है। यहां प्रति वर्ष 16 दिसम्बर को मेला लगाया जाता है।

शहीद स्मारक लौंगेवाल

आप लौंगेवाला जाना चाहते हैं तो केवल सड़क मार्ग से ही जा सकते हैं। जैसलमेर शहर से, रामगढ़ होते हुए लगभग 127 कि.मी. का पूरा रास्ता विश्व प्रसिद्ध थार रेगिस्तान से गुजरता है। यहां बहुत अधिक गर्मी होती है। लेकिन आप यहां थार रेगिस्तान का असली सौदर्य देख सकते हैं। दूर तक फैला रेत का समंदर, वास्तव में ही कमाल के दृश्य हैं। लेकिन आपको रास्ते में छोटे–मोटे हरियाले पेड़ पौधे और आस पास छोटे गांव भी दिखाई देंगे जिन्हें देखकर आंखों को सकून मिलता है। यदि मानसून के मौसम में जाएं तो कुछ राहत मिल सकती है। लौंगेवाला जाने का मार्ग पूरी तरह रेगिस्तान के मध्य से गुजरता है और शायद इसलिए विदेशी पर्यटक भी इस क्षेत्र में आना पसंद करते हैं। हालांकि, विदेशी पर्यटकों को लौंगेवाला आने के लिए अनुमति लेनी पड़ती है।

लौंगेवाला का जिक्र अधूरा ही रह जाएगा यदि इसमें तन्नोठ माता की कृपा का उल्लेख न किया जाए। वह चार दिसम्बर, 1971 की रात थी जब जैसलमेर जिले की पश्चिमी सीमा पर थार रेगिस्तान में लौंगेवाला सीमा पर पंजाब रेजिमेंट की एक कम्पनी ने मां की कृपा से लौंगेवाला में पाकिस्तान की पूरी टैंक रजिमेंट को धूल चटा दी और लौंगेवाला में पाकिस्तानी टैंकों का कब्रिस्तान बना दिया। लौंगेवाला सीमा तन्नोठ लगभग 50 कि.मी. दूर है।

माना जाता है कि भारत और पाकिस्तान के मध्य सितम्बर, 1965 में हुई लड़ाई में भी पाकिस्तान के सैनिकों ने मंदिर पर कई बम गिराए थे लेकिन माँ की कृपा से एक भी बम नहीं फट सका था। तभी से हमारी सेना और सीमा सुरक्षा के जवान तनोठ

माता के प्रति काफी श्रद्धा भाव रखते हैं। 1965 में हुए भारत–पाक युद्ध के बाद से आज तक तन्नोठ माता की पूजा अर्चना का कार्य सीमा सुरक्षा बल के सैनिकों द्वारा किया जाता है। 1965 के युद्ध के बाद सीमा सुरक्षा बल ने इस मंदिर की सुरक्षा के साथ–साथ पूजा अर्चना का काम भी संभाल लिया है। अब यहां सीमा सुरक्षा बल की एक चौकी भी है।

1965 के युद्ध में पाकिस्तान की सेना ने 16 नवम्बर, 1965 को आगे बढ़कर सीमा के अंदर शाहगढ़ तक कब्जा कर लिया और तनोठ को चारों ओर से घेरने की कोशिश में सफल नहीं हो पा रहे थे। हार कर उन्होंने लगभग 3000 बम बरसाए लेकिन संयोग से एक भी बम नहीं फटा। मंदिर और उसके आसपास के गांवों के घरों को कोई खरोंच तक नहीं आई (वहां की आबादी को तो पहले ही वहां से हटा लिया गया था)। 450 बम तो मंदिर में ही पड़े मगर उनमें से एक भी नहीं फटा। आज भी यह सारे बम मंदिर में बनाए गए संग्रहालय में तीर्थयात्रियों के दर्शन के लिए सुरक्षित रखे गए हैं। युद्ध के बाद पाकिस्तान के एक पायलट ने लिखा था कि जब जहाज से बम गिराते थे उन्हें नीचे कुछ दिखाई नहीं देता था बस एक तालाब के पास एक लड़की बैठी दिखती थी। वह कुछ इशारा करती थी। माता के इन्हीं अदभुत चमत्कारों से यह मंदिर भारतीय सेना की श्रृद्धा का केन्द्र बन गया है। तनोठ माता के मंदिर में प्रति वर्ष चैत्र और अश्विनी महीनों के नवरात्रों में यहां विशाल मेला लगता है और हजारों की संख्या में लोग शामिल होते हैं।

थार के रेगिस्तान का विहंगम दृश्य

कैसे पहुंचे : लौंगेवाला जाने वाले पर्यटकों को जैसलमेर आना होता है। यहां देश के विभिन्न स्थानों से रेलगाड़ियां उपलब्ध हैं। वहां से टैक्सी या रोड़वेज की बसें मिलती हैं।

हवाई अड्डा : निकटतम हवाई अड्डा जोधपुर है। जल्दी ही जैसलमेर में भी एयरपोर्ट बन कर तैयार होने वाला है।

कहां ठहरें : लौंगेवाला में ठहरने की अच्छी व्यवस्था नहीं है। लेकिन जैसलमेर में ठहरने की अच्छी व्यवस्था है। तनोठ के मन्दिर में 10 कमरे उपलब्ध है जो बीएसएफ की देख रेख में है।

लौंगेवाला और तनोठ माता में लगने वाले मेलों में राजस्थानी लोक संगीत और नृत्य पूरी तरह छाए रहते हैं। रेत के टिब्बों पर रेगिस्तान महोत्सव के अवसर पर यहां की जनजातियों का सबसे कामुक नृत्य 'कालबेलिया' को अब कौन नहीं जानता। यहां आयोजित होने वाले रेगिस्तान महोत्सव में, राजस्थानी पगड़ी बांधना, ऊंटों की दौड़, ऊंट की सवारी और

सबसे लम्बी मूँछ आदि की प्रतियोगितायें की जाती है जिन्हें देखने दूर–दूर से हजारों पर्यटक यहां आते हैं।

आस्था के साथ हमारी सेना के पराक्रम को देखने लौंगोवाला और तनौठ आ सकते हैं।

श्रद्धांजलि

हिमांशु जोशी

–

23 नवम्बर, 2018 को हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार और पत्रकार हिमांशु जोशी का निधन हो गया। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता से ही अपने कार्यक्षेत्र की शुरुआत की थी। हिंदी की जानी–मानी हिंदी पत्रिका 'कादम्बिनी' और 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के संपादन से वह लंबे समय तक जुड़े रहे। बाद के दिनों में उन्होंने 'वागर्थ' के संपादन का दायित्व भी संभाला। देहावसान से कुछ समय पूर्व तक वह नार्वे से प्रकाशित पत्रिका 'शांतिदूत' के सलाहकार संपादक रहे थे ।

हिमांशु जोशी का जन्म उत्तराखण्ड के चंपावत जिले के 'जोस्यूड़ा' गांव में 4 मई 1935 में हुआ था। उनके बचपन का लंबा समय 'खेतीखान' गांव में बीता जहां से उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के बाद मिडिल स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद 1948 में उनका परिवार नैनीताल आ गया। यहीं से उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। आजीविका की तलाश में हिमांशु जोशी दिल्ली आ गए और दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.फिल किया और पत्र–पत्रिकाओं के संपादन के साथ–साथ दूरदर्शन और आकाशवाणी के लिए भी काम करने लगे। जीवन के संघर्ष का प्रभाव उनके लेखन पर भी पड़ा। उन्होंने हिंदी फिल्मों के लिए भी लेखन कार्य किया। हिमांशु जोशी के उपन्यास 'सु–राज' पर आधारित फिल्म 'सु–राज' ने 'इंडियन पेनोरमा' के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भारतीय फिल्मों का प्रतिनिधित्व किया। दूरदर्शन का एक धारावाहिक 'तुम्हारे लिए' उनके इसी नाम के उपन्यास पर बनाया गया था। साथ ही 'तर्पण' 'सूरज की ओर' आदि पर टेलीफिल्में बनी। जोशी ने आकाशवाणी पर शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के सुप्रसिद्ध बांग्ला उपन्यास 'चरित्रहीन' के रेडियो–सीरियल का निर्देशन भी किया।

अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजली अर्पित है।

भारतीय विज्ञापन उद्योग जगत में ऐड गुरु के नाम से विख्यात और अभिनेता एलेक पद्मश्री का 90 साल की उम्र में शनिवार सुबह निधन हो गया। एलेक पद्मश्री को साल 1982 में आई फिल्म 'गांधी' में मोहम्मद अली जिन्ना के किरदार के लिए ज्यादा जाना जाता है। उन्हें फादर ऑफ मॉडर्न इंडियन एडवरटाइजिंग कहा जाता था जिन्होंने पूरी दुनिया में ऐड में महारथ हासिल कर अपना नाम कमाया। एलेक ने देश की टॉप एडवरटाइजिंग कंपनी 'लिंटास' की स्थापना की।

याद इन्हें भी कर लें

श्रद्धांजलि

अभिनय प्रतिभा के धनी: कादर खान

एक जनवरी को नए साल की सुबह हिंदी सिनेमा के प्रेमियों के लिए एक दुख भरी खबर लेकर आई कि हिंदी फिल्मों के जाने–माने हास्य कलाकार कादर खान नहीं रहे।

कादर खान अक्सर कहते थे कि किसी इंसान की मौत के बाद तो लोग उसकी शान में खूब कशीदे पढ़ते हैं, लेकिन जीते जी उसकी कद्र नहीं होती। अगर कोई कलाकार अच्छा काम करता है तो उसके काम की सराहना की जानी चाहिए। दरअसल आत्मसम्मान की यह सीख कादर खान को बचपन में अपनी मां से मिली थी।

कादर खुद बताते थे कि गरीबी के कारण रात में कई बार बिना कुछ खाए ही सोना पड़ता था। एक दिन कुछ कमाने की सोच कर, सुबह ही मैं पड़ोसी लड़कों के साथ फैक्ट्री में मजदूरी करने निकला। सीढ़ियां ही उतर रहा था कि पीछे से किसी ने कंधे पर हाथ रखा। मुड़कर देखा तो मेरी मां खड़ी थी। वह बोली, 'बेटा, दो–तीन रुपये कमाकर ले आने से गरीबी नहीं मिटेगी। अगर तू सचमुच मुझे खुशियां देना चाहता है, तो अपनी पढ़ाई पूरी कर और तू पढ़। मुसीबतों से मैं लड़ लूंगी,बस तू पढ़।' मां के मुंह से 'तू पढ़' शब्द कुछ इस अंदाज में निकला कि पिघले शीशे की तरह सिर से पैर तक उतर गया। मैं मां के साथ वापस कमरे में लौटा, किताबें उठाईं और स्कूल की ओर चल पड़ा। इंजीनियरिंग तक की पढ़ाई पूरी की और भायखला के साबू सिद्दीक पॉलिटेक्निक में लैक्चरर बनकर ही दम लिया। छात्रों को पढ़ाने के साथ ही ट्यूशन भी करते।

"यह शायद मां की दुआओं का ही असर था कि लोगों की आवाज और चालढाल की नकल उतारने का शौक वरदान बनकर सामने आया। जब भी मौका मिलता, कार्ल मार्क्स या मैक्सिम गोर्की या गालिब या कबीर की रचनाओं में से कुछ पसंदीदा लाइने कागज पर लिख लेता और पास के एक कब्रिस्तान में जाकर उसे जोर–जोर से बोलकर याद करने की कोशिश करता । एक दिन रात के अंधेरे में यह अभ्यास चल रहा था कि चेहरे पर टॉर्च की रोशनी पड़ी। सामने से एक आदमी आया और उसने पूछा कि 'क्या नाटक में काम करोगे।' मैंने झट से हां कर दी । नाटक समाप्त हुआ तो मेरे काम और अदाकारी से खुश होकर एक दर्शक ने सौ–सौ के दो नोट दिए। उस दिन जिंदगी में पहली बार सौ का नोट देखा था। उसे कई बार छूकर देखा। बस उस दिन से नाटकों में काम करने का चस्का लग गया और मंडली बनाई ''कल के कलाकार'। अभिनेता आगा को 'ताश के पत्ते' नाटक में मेरा काम बहुत पसंद आया। उन्होंने दिलीप कुमार के सामने नाटक की इतनी तारीफ की कि अगली बार दिलीप कुमार भी यह नाटक देखने आ पहुंचे। जब मुझे पता चला कि दिलीप साहब भी नाटक देखने आए हैं तो और जोश भर गया । दिलीप साहब ने मेरी अदाकारी की जमकर तारीफ की और कुछ दिन बाद बैराग और सगीना फिल्मों में अपने साथ

*प्रस्तुतिः विश्वरंजन, पर्यटन मंत्रालय

एक छोटी सी भूमिकाएं दिलवा दीं ।

कादर खान का फिल्म लेखक बन जाना महज एक संयोग था। 'कल के कलाकार' ने ऑल इंडिया ड्रामा कॉम्पिटिशन में एक नाटक 'लोकल ट्रेन' का मंचन किया, जिसे बेस्ट ऐक्टर, बेस्ट राइटर, बेस्ट डायरेक्टर सारे पुरस्कार मिले और नकद 1500 रुपये का ईनाम भी। जूरी में राजेंद्र सिंह बेदी, कामिनी कौशल, रमेश बहल जैसे दिग्गज थे जिन्होंने बाद में उनसे कहा कि फिल्मों में कोशिश क्यों नहीं करते। नरेंद्र बेदी ने बांद्रा अपने ऑफिस में बुलाकर स्क्रिप्ट सौंप दी। और 'जवानी दीवानी' के डायलॉग लिखने का ऑफर दिया। मैं ट्रेन से मरीन लाइंस पहुंचा और मैदान में खेलते बच्चों की भीड़ में, एक कोने में बैठकर महज तीन घंटे में सारे डायलॉग लिख डाले। बांद्रा लौटकर जब डायलॉग सुनाए तो उन्होंने सीने से लगा लिया और 1500 रुपये दिये। एक महीने बाद शुरू होने वाली शूटिंग अगले ही हफ्ते शुरू हो गई। उनसे तारीफ सुन कर रफूचक्कर के निर्माता ने भी अपनी फिल्म के डायलॉग लिखने का आफर दिया और मोटा सा लिफाफा थमा दिया। बाद में खोला तो 21 हजार रुपये थे।

''300 रुपये की तनख्वाह पाने वाले के लिए आदमी के लिए यह एक बड़ी रकम थी। फिल्मों में काम मिलने के बाद भी मैने टीचिंग और ट्यूशन का काम जारी रखा। छात्रों के आग्रह पर चेंबूर के स्टूडियो से स्कूटर चलाकर भायखला जाता और कॉलेज के हॉल में रात के 12 बजे से सुबह 5 बजे तक पढ़ाता। सारे छात्र फर्स्ट क्लास में पास हुए। तो बड़ी खुशी मिली।

अगर मां ने 'तू पढ़' नहीं कहा होता तो मुंबई की कमाठीपुरा की गंदी गलियों में भूख और गरीबी झेल रहे उस बच्चे ने न तो किताबों का दामन थामा होता, न वह इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर प्रोफेसर कादर खान बनता और न ही सिनेमा को एक शानदार लेखक एवं अभिनेता मिलता। राजेश खन्ना और अमिताभ बच्चन से लेकर जीतेंद्र और गोविंदा तक के साथ सैंकड़ों फिल्मों में कलम का कमाल और अदाकारी के जौहर दिखा चुके कादर खान को इस बात का हमेशा मलाल रहा कि उनको नाम और दाम तो मिला, लेकिन वह सम्मान और पुरस्कार नहीं मिला, जिसके वह हकदार थे।

कादर खान का यह दर्द उनके हास्य लेखन में भी नजर आता है। मां की एक बात उन्हें हमेशा याद रही, 'गरीबी जीतने के लिए बस एक ही तलवार है और वह तलवार है कलम।' कादर खान ने कलम का जबर्दस्त इस्तेमाल किया। मनमोहन देसाई की चुनौती स्वीकार की और रोटी का इतना खूबसूरत क्लाइमेक्स लिखा कि मनमोहन देसाई खुशी से उछल पड़े। सोने का अपना ब्रेसलेट तोहफे में दिया और सवा लाख रुपये का पारिश्रमिक भी। अमिताभ बच्चन के लिए अमर अकबर एंथनी, नसीब, कुली, मुकद्दर का सिकंदर, शराबी जैसी सुपरहिट फिल्मों के सुपर हिट डायलॉग लिखकर सफलता की नई परिभाषा गढ़ी। जीतेंद्र, गोविंदा और शक्ति कपूर के साथ हास्य की चाशनी बनाई तो कई बार सामाजिक सीमाएं तोड़ने के आरोप भी लगे। ऐसे आरोपों पर उनका कहना था, 'सिनेमाहॉल में लोग मनोरंजन के लिए आते हैं और हमारा काम दर्शकों को खुश करना है। उन्हें खुश नहीं कर पाए तो सारी मेहनत बेकार है।'

गोविंदा ने लिखा– वह काफी पढ़े–लिखे इंसान थे। आत्मसम्मान को काफी महत्व देते थे। कादर खान जिस कलाकार के साथ काम करते थे, उसे सुपरस्टार बना देते थे। उनके जाने से फिल्म इंडस्ट्री को जो नुकसान हुआ है वो शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उन्होंने अब तक 300 से अधिक फ़िल्मो में काम किया है।

ऐसे महान कलाकार को अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियाँ एवं समाचार

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन की कार्यक्रम और बजट समिति की बैठक की अध्यक्षता की

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस के साथ मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के प्रतिनिधिमंडल ने बहरीन के मनामा में संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) की कार्यकारी परिषद के 109वें सत्र में भाग लिया। कार्यकारी परिषद का तीन दिवसीय सत्र 30 अक्टूबर को प्रारंभ हुआ। कार्यकारी परिषद ने वैश्विक पर्यटन क्षेत्र के विकास से संबंधित अनेक विषयों पर चर्चा की गई। भारत 2021 तक यूएनडब्ल्यूटीओ की कार्यकारी परिषद की अध्यक्षता करेगा।

कार्यकारी परिषद के बैठक के पहले दिन श्री के. जे. अल्फोंस ने यूएनडब्ल्यूटीओ की कार्यक्रम और बजट समिति की बैठक की अध्यक्षता की। अपने सम्बोधन में माननीय मंत्री जी ने कहा कि रोजगार सृजन, उद्यम तथा पर्यावरण विकास और विदेशी मुद्रा आय के माध्यम से पर्यटन सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। समिति के अध्यक्ष के रूप में पर्यटन राज्य मंत्री ने बताया कि पहली बार यूएनडब्ल्यूटीओ का बचत बजट आया है।

पर्यटन मंत्री ने यूएनडब्ल्यूटीओ के महासचिव श्री जुरब पोलोलिकाशविली से मुलाकात की और पर्यटन को विकसित करने के लिए यूएनडब्ल्यूटीओ को मजबूत एजेंट के रूप में शामिल करने के बारे चर्चा की ताकि विश्व का भविष्य बेहतर हो और वैश्विक स्तर पर सार्वजनिक निजी साझेदारी स्थापित की जा सके।

विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) उत्तरदायी, सतत और सार्वभौमिक रूप से पहुंच योग्य पर्यटन के प्रोत्साहन के लिए उत्तरदायी संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी है। यूएनडब्ल्यूटीओ कार्यकारी परिषद संगठन के गवनिंग बॉडी का नेतृत्व करती है परिषद की बैठक प्रत्येक वर्ष में कम से कम दो बार होती है। परिषद के 35 पूर्णकालिक सदस्य हैं। भारत 2021 तक यूएनडब्ल्यूटीओ कार्यकारी परिषद की कार्यक्रम और बजट समिति की अध्यक्षता करेगा।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस 30 अक्टूबर, 2018 को मनामा, बहरीन में संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) के कार्यक्रम और बजट समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए।

पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के तहत पूर्वोत्तर सर्किट की दो महत्वपूर्ण योजनाओं का अरूणाचल प्रदेश में उद्घाटन

पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत दो प्रमुख परियोजनाओं का 15 नवम्बर, 2018 को अरूणाचल प्रदेश के तवांग में पीटीएसओ झील में उद्घाटन किया गया। यह परियोजनाएं हैं : पूर्वोत्तर परिपथों का विकास – भालुकपोंग–बोमडिला– तवांग परियोजना और नफरा– सेप्पा– पाप्पू, पासा, पाक्के घाटी– सांगदुपोटा – न्यू सगाली– ज़ीरो–योम्चा परियोजना"। इन परियोजनाओं का माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोन्स, अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री, श्री पेमा खांडू और अरुणाचल प्रदेश के पर्यटन मंत्री श्री जकर गैमलिन ने संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। इस अवसर पर अन्य महत्वपूर्ण गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने कहा कि पर्यटन मंत्रालय के प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं और इस क्षेत्र में विदेशी पर्यटन आगमन

15 नवंबर, 2018 को अरुणाचल प्रदेश में पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत पूर्वोत्तर के दो परिपथों के उद्घाटन के अवसर पर पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोन्स तथा अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पेमा खंडू

में पिछले कुछ वर्षों के दौरान बढ़ोतरी का रुख दिखाई दिया है। यहां वर्ष 2016 के दौरान जहां 1.45 लाख और 2017 के दौरान 1.69 लाख विदेशी पर्यटक आए। इस प्रकार 2016 के मुकाबले 16.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज हुई। 2017 में 95.47 लाख घरेलू पर्यटक इस क्षेत्र में आए जबकि 2016 में 77.71 लाख पर्यटक यहां आए थे। इस प्रकार 2016 की तुलना में 22.8 प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज हुई। पर्यटकों की बढ़ती हुई तादाद ने इस क्षेत्र के स्थानीय लोगों के लिए बेहतर रोजगार के अवसर जुटाए हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में 2016 की तुलना में 2017 में विदेशी पर्यटक आगमन में 16.7 प्रतिशत की वृद्धिः पर्यटन आधारभूत संरचना के विकास के लिए 1300 करोड़ रुपये से अधिक राशि की स्वीकृति ।

भालुकपोंग–बोमडिला के विकास की 49.77 करोड़ रुपये की लागत वाली इस परियोजना को पर्यटन मंत्रालय ने मार्च, 2015 में मंजूरी दी थी। इस परियोजना के तहत मंत्रालय ने जांग, सोरंग मठ, लंपो, ज़ीमिथांग, बुमला पास, ग्रिट्संग, त्सो झील, पीटीएसओ झील, थिंगबू और ग्रेन्खा हॉट स्प्रिंग और सेला झील में आवास, कैफेटेरिया, मार्गस्थ सुविधाएं, अंतिम छोर तक जुड़ाव, सड़कें, शौचालय, बहुउद्देशीय हॉल जैसी सुविधाएं विकसित की हैं।

नाफरा– सेपा–पाप्पू, पासा, पाक्के घाटी – संगदुपोटा– न्यू सगाली– ज़ीरो–योम्चा की विकास परियोजना को दिसंबर, 2015 में पर्यटन मंत्रालय द्व ारा मंजूरी दी गई थी। इस परियोजना की लागत 97. 14 करोड़ रुपये थी। इस परियोजना के तहत यहां हेलीपैड, मार्गस्थ सुविधाएं, ट्रैकिंग पगडंडियां, राफ्टिंग केन्द्र, लॉग हट्स, शिल्प बाजार, ईको पार्क, पर्यटक सुविधा केन्द्र, पार्किंग, बहुउद्देशीय हाल, त्यौहारों के लिए स्थान आदि को शामिल किया गया है ।

पर्यटन के विकास में क्षेत्र की कई चुनौतियों में से एक है पर्यटन के विकास के लिए गुणवत्तापरक सेवाओं तथा क्षेत्र के और पर्यटन उत्पादों के बारे में जागरूकता की कमी, इसीलिए पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन का विकास पर्यटन मंत्रालय का एक प्रमुख केंद्र बिंदु है। मंत्रालय ने इस क्षेत्र में घरेलु तथा अंतराष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की है।

मंत्रालय ने इस क्षेत्र में अपनी प्रमुख योजनाओं– स्वदेश दर्शन और प्रसाद के तहत पर्यटन अवसंरचना को बहुत महत्व दिया है। मंत्रालय ने पर्यटन अवसंरचना के विकास के लिए अपनी स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजनाओं के तहत सभी पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों को शामिल करके 1349.04 करोड़ रुपये की 16 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। मंत्रालय इस क्षेत्र में पर्यटन के विकास के लिए अन्य केंद्रीय मंत्रालयों जैसे संस्कृति, पूर्वोत्तर विकास, सड़क परिवहन और राजमार्ग तथा नागर विमानन के साथ मिलकर सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है।

स्वदेश दर्शन पर्यटन मंत्रालय की एक प्रमुख योजना है। इसका उद्देश्य एक योजनाबद्ध और प्राथमिकता से देश में स्वदेश दर्शन योजना के तहत विषयगत परिपथों का विकास करना है। इस योजना के तहत सरकार देश में गुणवत्तापरक संरचना पर ध्यान दे रही है ताकि एक ओर पर्यटकों को बेहतर अनुभव और सुविधाएं और दूसरी ओर आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया जा सके। यह योजना 2014 –15 में शुरू की गई थी और आज तक पर्यटन

मंत्रालय ने 30 राज्यों और संघशासित प्रदेशों में 5873.99 करोड़ रुपये की लागत की 73 परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की हैं। इन परियोजनाओं में से 30 के इस वर्ष पूरा होने की आशा है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के लिए केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय इस क्षेत्र की विविधता, पर्यटन उत्पादों और इस क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति का उल्लेख करते हुए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार में विशेष प्रचार करता है। मंत्रालय प्रति वर्ष पूर्वोत्तर के राज्यों में बारीबारी से अंतरराष्ट्रीय ट्रेवेल मार्ट का आयोजन करता है ताकि अंतरराष्ट्रीय और घरेलू खरीदारों के लिए यहां पर्यटन क्षमता का प्रदर्शन किया जा सके और उनके साथ बातचीत करने का अवसर मिल सके। पर्यटन मंत्रालय ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन और आतिथ्य सत्कार में कामगारों के कौशल को बढ़ाने के लिए होटल प्रबंधन और पाक कला संस्थान भी स्थापित किए हैं।

इन्दिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पर्यटक सहायता एवं सूचना काउंटर का उद्घाटन

पर्यटन मंत्री श्री के.जे. अल्फोंस ने 5 नवम्बर 2018 को नई दिल्ली के इन्दिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पर्यटक सहायता और सूचना काउंटर का उद्घाटन किया। यह सहायता काउंटर आईजीआई हवाई अड्डे के टी–3 टर्मिनल के आगमन गेटों पर बनाया गया हैं।

सरकार द्वारा आईजीआई हवाई अड्डे पर स्थापित सहायता काउंटर अपने किस्म का पहला है। पर्यटन मंत्रालय ने यह काउंटर नई दिल्ली के आईजीआई हवाई अड्डे पर पहुंचने वाले घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय यात्रियों को 24X7 यानि चौबीस घंटे सातों दिन सूचना देने के उद्देश्य से बनाए हैं। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में मंत्री जी ने कहा कि इससे देश में आने वाले पर्यटकों को काफी सहायता मिलेगी। यह काउंटर अंग्रेजी नहीं बोलने वाले पर्यटकों को भी सेवा प्रदान करेंगे क्योंकि काउंटर पर्यटन मंत्रालय की 24X7 हेल्पलाइन "1363" से जुड़े होंगे जहां पर्यटक विदेशी भाषा एजेंट से सीधे ही बातचीत कर सकते हैं। फ्रेंच, जर्मन, इटैलियन, पुर्तगाली, रूसी, जापानी, कोरियाई, चीनी तथा अरबी में निर्देश प्राप्त कर सकते हैं।

पर्यटन मंत्रालय मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, गया तथा वाराणसी में शीघ्र ही सहायता काउंटर खोलने जा रहे हैं।

पर्यटक सहायता काउंटर पर दो कर्मी और एक सुपरवाइजर तैनात होंगे जो पर्यटकों के प्रश्नों का उत्तर देंगे और उन्हें सूचनाएं देंगे। काउंटर पर पर्यटकों को अच्छा पर्यटक साहित्य और विवरण पुस्तिकाएं भी प्रदान की जाएंगी।

कोरिया गणराज्य के साथ समझौता ज्ञापन

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 5 नवम्बर, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन के क्षेत्र में कोरिया गणराज्य के साथ सम्बंधों को मजबूत बनाने के लिए कोरिया गणराज्य के संस्कृति, खेल और पर्यटन मंत्रालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौता ज्ञापन पर भारत की ओर से माननीय पर्यटन मंत्री श्री के.जे. अलफॉन्स तथा कोरिया की ओर से माननीय संस्कृति, पर्यटन और खेल मंत्री श्री दो जोंग ह्वान ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर भारत और कोरिया के पर्यटन मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित थे। समझौता ज्ञापन में पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत बनाने के लिए दोनों पक्षों ने मुख्यतः पर्यटन क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने; सूचना तथा पर्यटन से संबंधित डाटा का आदान–प्रदान बढ़ाने; होटलों तथा टूर ऑपरेटरों सहित पर्यटन क्षेत्र के हितधारकों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करने; मानव संसाधन विकास में सहयोग के लिए आदान–प्रदान कार्यक्रम प्रारंभ करने; पर्यटन तथा आतिथ्य क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित करने; दोतरफा पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए टूर ऑपरेटरों/मीडिया/जनमत बनाने वालों की एक–दूसरे के यहां यात्राओं का आयोजन करने; संवर्धन, बाजार गंतव्य विकास तथा प्रबंधन के क्षेत्रों में अनुभवों को साझा करने; एक–दूसरे देश में पर्यटन मेलों/प्रदर्शनियों में भागीदारी को प्रोत्साहित करने तथा सुरक्षित, सम्मानित और सतत पर्यटन को प्रोत्साहित करने की इच्छा व्यक्त की गई है।

इस अवसर पर माननीय पर्यटन राज्य मंत्री ने कहा कि कोरिया गणराज्य भारत के लिए एक अग्रणी पर्यटन बाजार है क्योंकि कोरिया गणराज्य से 2017 में 1,42,383 पर्यटक आए और जनवरी–सितम्बर के दौरान 1,08,901 (अस्थाई आंकड़ा) पर्यटक आए।

अगरतला में 7 वां अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट 22-24 नवम्बर,2018

त्रिपुरा के राज्यपाल प्रोफेसर कप्तान सिंह सोलंकी ने 22 नवम्बर, 2018 की शाम अगरतला में पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस एवं त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री विप्लव कुमार देव की गरिमामयी उपस्थिति में ''पूर्वोत्तर प्रदेशों के लिये 7वें अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट'' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पर्यटन मंत्रालय की ओर से तत्कालीन सचिव श्रीमती रश्मि वर्मा, महानिदेशक (पर्यटन) श्री सत्यजीत राजन के साथ ही त्रिपुरा के पर्यटन मंत्री श्री प्रसन्नजीत सिंघा रॉय तथा केंद्रीय व उत्तर–पूर्व प्रदेशों के मंत्रालयों के अन्य सम्मानित अतिथिगण भी उपस्थित थे।

महामहिम राज्यपाल ने अपने उद्घाटन अभिभाषण में पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिये भारत सरकार द्वारा हाल के वर्षों में की गई अनेक शुरुआतों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पर्यटन क्षेत्र का विकास बड़ी संख्या में लोगों, विशेषकर राज्य के युवाओं के लिये अर्थपूर्ण रोज़गार एवं आय के साधनों का सृजन करने में सहायता करेगा।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोन्स ने 7 नवंबर, 2018 को अगरतला में 7 वें अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट 2018 में एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उनके साथ त्रिपुरा के महामहिम राज्यपाल श्री कप्तान सिंह सोलंकी और त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री बिप्लाब कुमार देब उपस्थति थे।

अगरतला में 7 वें अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट–2018 में एक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोन्स और तत्कालीन सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा स्थानीय कलाकारों के साथ

माननीय मुख्यमंत्री श्री विप्लव कुमार देव ने अपने अभिभाषण में कहा कि त्रिपुरा की राज्य सरकार ने अगले तीन वर्ष की अवधि में प्रदेश का रूपांतरण कर एक उदाहरण दिए जाने लायक राज्य बनाने की योजना बनाई है। इसमें पर्यटन क्षेत्र को प्रदेश के विकास के एक ठोस प्रमुख घटक के रूप में शामिल किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से प्रदेश सरकार पर्यटन क्षेत्र का सर्वतोमुखी विकास करने की दिशा में आगे बढ़ रही है।

अपने उद्बोधन में माननीय पर्यटन राज्य मंत्री श्री के.जे. अल्फोंस ने कहा कि भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड, त्रिपुरा एवं सिक्किम शामिल हैं और इस क्षेत्र में पर्यटन की दृष्टि से व्यापक आकर्षक विविधताएं देखने को मिलती हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में पर्यटन के संपूर्ण उन्नयन पर अधिक ज़ोर देते हुए भारत सरकार ने इन प्रदेशों में पर्यटन के विकास के लिये अनेक नए कार्यक्रमों एवं योजनाओं की शुरुआत की है और इन चार वर्षों के दौरान पर्यटन क्षेत्र ने नई ऊंचाई को छुआ है।

इस अवसर पर तत्कालीन सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा ने सम्बोधन में कहा कि भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने त्रिपुरा की सरकार के पर्यटन विभाग तथा पूर्वोत्तर के राज्यों के साथ मिल कर इस मार्ट का आयोजन किया। संपन्न विरासत के साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र की अलग अलग तरह की स्थलाकृति इस क्षेत्र को एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाती है। साथ

ही उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि मार्ट में की गई चर्चा पूर्वोत्तर प्रदेशों में पर्यटन को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य पूरा करेंगी। उन्होंने पूर्वोत्तर क्षेत्र में पिछले वर्ष पर्यटकों की सर्वाधिक संख्या के लिये त्रिपुरा राज्य की प्रशंसा की।

इस मार्ट में ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, चीन, फ्रांस, इण्डोनेशिया, जापान, केन्या, मलेशिया, म्यांमार, नीदरलैण्ड, न्यूज़ीलैण्ड, रूस, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, स्पेन, थाईलैण्ड, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) एवं संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसए) से आए 53 प्रतिनिधियों ने भागीदारी दर्ज की। इनमें टूर ऑपरेटर एवं ट्रेवल एजेंट व मीडिया प्रतिनिधि, पत्रकार, यात्रा लेखक एवं ब्लॉगर भी शामिल थे। विदेशी प्रतिनिधियों के अतिरिक्त देश के अन्य भागों से 26 घरेलू टूर ऑपरेटर एवं पूर्वोत्तर के प्रदेशों से 78 हितधारकों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। पूर्वोत्तर के राज्यों के पर्यटन विभागों के प्रतिनिधि भी अपने पर्यटन स्थलों की जानकारी देने तथा विदेशी प्रतिनिधियों के साथ चर्चा करने के लिये मौजूद थे। वहीं पूर्वोत्तर क्षेत्र के विक्रेताओं के साथ व्यापार से व्यापार (B2B) की संपर्क बैठकें से भी की गईं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के संपन्न एवं विविध पर्यटन उत्पादों के बारे में जागरूकता बढ़ाने तथा पर्यटन स्थलों का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के लिए पूर्वोत्तर के प्रदेशों के अभिज्ञता टूर (identity tour) की व्यवस्था भी की गई। मार्ट में भाग लेने वाले प्रदेशों के राज्य पर्यटन विभागों द्वारा सुंदर शिल्पकारी एवं हथकरघा प्रदर्शित करने तथा अपने पर्यटन उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिये एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड, त्रिपुरा एवं सिक्किम से बना भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र विविध पर्यटन आकर्षणों एवं उत्पादों से संपन्न है। क्षेत्र की विविध स्थलाकृति, वनस्पति व जीव, संपन्न प्राचीन परम्पराओं की विरासत तथा जीवनशैलियों वाले संजातीय समुदाय, त्यौहार, कला एवं हस्तकौशल इसको छुट्टियों का ऐसा गंतव्य बनाते हैं जो हमारी प्रतीक्षा करता है।

घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों के समक्ष क्षेत्र की पर्यटन क्षमताओं को दर्शाने के लिये पूर्वोत्तर क्षेत्र में आयोजित किए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट का यह 7वां कार्यक्रम था। यह पर्यटन व्यापार से जुड़े समुदायों एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र के आठ राज्यों के व्यावसायिकों को एक दूसरे के करीब लाता है।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट पूर्वोत्तर के प्रदेशों में बदल बदल कर हर वर्ष आयोजित किये जाते हैं। ऐसे मार्ट गुवाहाटी, तवांग, शिलॉंग, गंगटोक व इम्फाल में आयोजित किये गए थे।

चार अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों वाला इकलौता राज्य केरल

कन्नूर हवाई अड्डे के साथ ही केरल भारत का पहला ऐसा राज्य बन गया है जिसमें चार अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं। तिरूवनंतपुरम, कोच्चि और कोझिकोड के बाद कन्नूर को अंतर्राष्ट्रीय विमानपत्तन का दर्जा दिया गया है ।

नागालैंड में पहली स्वदेश दर्शन परियोजना का उद्घाटन

नागालैंड के मुख्यमंत्री श्री नेफियू रियो ने 15 दिसम्बर, 2018 को नागालैंड में किसामा विरासत गांव में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस की उपस्थिति में 'जनजातीय परिपथ विकासः पेरेन–कोहिमा–वोखा' परियोजना का उद्घाटन किया। इस अवसर पर नागालैंड के पर्यटन, कला एवं संस्कृति मंत्री श्री एच. खेहोवी येपथोमी भी उपस्थित थे। यह पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के तहत राज्य में लागू होने वाली पहली परियोजना है।

97.36 करोड़ रुपये की 'जनजातीय परिपथ विकासः पेरेन–कोहिमा–वोखा' परियोजना को नवम्बर, 2015 में पर्यटन मंत्रालय ने मंजूरी दी थी। परियोजना के तहत मंत्रालय ने जनजातीय पर्यटक गांव, ईको लॉग हट्स, ओपन एयर थियेटर, जनजातीय कायाकल्प केन्द्र, कैफेटेरिया, हैलिपैड, पर्यटक सूचना केन्द्र, सड़क के आस पास अच्छी सुविधाएं, सार्वजनिक जन सुविधाएं, बहुउद्देशीय हॉल, प्राकृतिक ट्रेल्स पर ट्रैकिंग मार्ग जैसी सुविधाओं का विकास किया गया है।

इस परियोजना के अलावा पर्यटन मंत्रालय ने नागालैंड के लिए 99.67 करोड़ रुपये की लागत वाली 'जनजातीय परिपथ विकास मोकोकचुंग–गतुएन्सां–मोन' परियोजना को भी मंजूरी दी है। इस परियोजना का निर्माण जारी है।

पुनर्नुमोदन पर्यटन मंत्रालय ने ऑनलाइन ट्रैवल एग्रीगेटर्स की स्वीकृति के लिए दिशा-निर्देश तैयार किए

पर्यटन मंत्रालय ने ऑनलाइन ट्रैवल एग्रीगेटर्स (ओटीए) की स्वीकृति/पुनर्नुमोदन के लिए तैयार दिशा–निर्देश कर लिए है। ओटीए की स्वीकृति/पुनर्नुमोदन के लिए तैयार दिशा–निर्देशों में यह सुनिश्चित किया गया है कि सेवा में कमी को दूर करने के लिए पर्याप्त सुरक्षा उपायों के साथ–साथ यदि आवश्यकता हो तो वैकल्पिक व्यवस्था और दंडनीय प्रतिरोध भी किया जा सके। ऑनलाइन ट्रैवल एग्रीगेटर्स को एक आम मंच पर लाने के लिए यह संगठित क्षेत्र की एक स्वैच्छिक योजना है।

ओटीए की स्वीकृति/पुनर्नुमोदन की योजना को ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से प्रारंभ किया जाएगा और इसके लिए सभी आवेदन और शुल्क भुगतान ऑनलाइन करने होंगे। इस योजना से प्रत्यायन की दिशा में न सिर्फ मानकों के निर्धारित होने अपितु संगठित पर्यटन क्षेत्र में ऑनलाइन परिचालन करने वाले समूहकों के लिए निर्भरता और विश्वसनीयता के प्रमाणीकरण और मूल्य संवर्धन होने की भी आशा है।

हाल ही में, कई ऑनलाइन ट्रैवल एग्रीगेटर्स (ओटीए) विभिन्न आवासीय क्षेत्रों में कमरे उपलब्ध कराने के रूप में सामने आए हैं। छोटे पैमाने के व्यवसाय के लिए बैड और ब्रेकफास्ट/होमस्टे जैसे क्षेत्र सदैव अपर्याप्त विपणन का शिकार रहे हैं। ओटीए इस क्षेत्र के लिए न सिर्फ एक प्रेरणा अपितु एक बड़े परिवर्तन के रूप में उभर सकता है।

ऑनलाइन ट्रैवल एग्रीगेटर्स (ओटीए) मध्यस्थ के रूप में इंटरनेट का उपयोग करने वाले आपूर्तिकर्ताओं की ओर से एयरलाइंस, किराए की कार, क्रूज़ लाइनों, होटल/आवास, रेलवे और होलिडे पैकेज जैसे यात्रा उत्पादों और सेवाओं को बेचने वाला एक मध्यस्थ/एजेंट है। वे एक ऑनलाइन बाजार स्थापित करते हैं और आमतौर पर आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रस्तावित कमीशन के रूप में संदर्भित छूट पर मुनाफा कमाते हैं। इस मामले में एक ओटीए हो सकता है:

- इसके अंतर्गत यात्रा से संबंधित सेवा प्रदाताओं/एजेंटों अथवा होटल, अपने ब्रांड के तहत स्वयं के माध्यम से होमस्टे जैसे अन्य सेवा प्रदाताओं को सूचीबद्ध करना शामिल है।
- इसके अंतर्गत अपने ब्रांड के तहत स्वयं के प्लेटफॉर्म पर संभावित यात्रा, आतिथ्य और संबंधित सेवा प्रदाताओं/ विक्रेताओं के साथ खरीदारों को जोड़ना शामिल है।
- इसके अंतर्गत संभावित ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सुविधाओं और/अथवा गुणवत्ता मानकों को निर्धारित करने के अलावा सेवा प्रदाताओं पर अपना प्रभाव बनाना शामिल है।
- इसके अंतर्गत ऐसे सेवा प्रदाताओं के साथ अनुबंध करना होगा जो मानदंड के तौर पर आवश्यक सेवाएं जैसे मानक/कमीशन दरें और अन्य सेवाओं को निर्धारित कर सकें।

अभी ओटीए क्षेत्र में बहुत से व्यक्ति बिना किसी प्रमाणीकरण/सत्यापन के कार्य कर रहे हैं। इस तरह के संचालन से बाजार को यह जोखिम बना रहता है

और ऐसी अनैतिक व्यापारिक व्यवस्थाएं पूरे बाजार को खराब कर सकती हैं। रचनात्मक रूप से ओटीए के साथ जुड़ने के लिए, यह जरूरी है कि प्रत्यायन के साथ–साथ गुणात्मक मानदंडों के साथ एक प्रणाली लागू की जाए। ओटीए के द्वारा ग्राहकों के लिए सेवा वितरण की गुणवत्ता का आश्वासन ही सर्वाधिक चिंता का विषय होगा।

दिशा-निर्देशों की प्रमुख विशेषताएं:

1. भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा संबंधित क्षेत्रीय निदेशक (आरडी), एफएचआरएआई के प्रतिनिधि, आईएटीओ के प्रतिनिधि और सक्षम प्राधिकरण (अध्यक्ष, एचआरएसीसीसी) से युक्त एक समिति के निरीक्षण की रिपोर्ट/सिफारिशों के आधार पर पांच वर्ष के लिए एक ओटीए के रूप में मान्यता दी जाएगी।

2. इसके पश्चात पुनः अनुमोदन के लिए इसी समिति द्वारा किए गए निरीक्षण के बाद पांच साल के लिए मान्यता दी जाएगी। इसके लिए ओटीए को पिछली स्वीकृति की समाप्ति से कम से कम 6 महीने पूर्व ऑनलाइन माध्यम से आवश्यक शुल्क/दस्तावेजों के साथ बिना किसी त्रुटि और पूर्ण जानकारी के साथ आवेदन करना होगा।

3. सभी मामलों की जांच के बाद आवेदकों से प्राप्त दस्तावेज ऑनलाइन स्वीकार किए जाएंगे। पर्यटन मंत्रालय के वेतन और लेखा कार्यालय से शुल्क भुगतान की पुष्टि के बाद निरीक्षण दल द्वारा पहली मंजूरी/पुनर्नुमोदन आवेदन की प्राप्ति के 40 कार्य दिवसों के भीतर निरीक्षण किया जाएगा।

4. एक अनुमोदित ओटीए को मंत्रालय द्वारा दी गई स्वीकृति के प्रमाण पत्र के साथ कार्यालय परिसर में एक फोटो फ्रेम में लगाना अनिवार्य होगा ताकि यह मुख्य वेबसाइट/ऑनलाइन पोर्टल के मुख्य पृष्ठ पर एक प्रमुख लिंक के अंतर्गत संभावित पर्यटक को भी दिखाई दे सके।

5. मंजूरी/पुनर्नुमोदन के मामले में भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय का निर्णय अंतिम होगा। हालांकि, मंत्रालय किसी भी फर्म को फिर से स्वीकृति देने या किसी भी समय इसके अनुमोदन/पुनः अनुमोदन पर अपने विवेकाधिकार से रोक लगा सकता है। इस तरह का निर्णय लेने से पहले, कारण नोटिस भी आवश्यक तौर पर जारी किया जाएगा और इसके जवाब के बाद ही इस पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाएगा। पुनः अनुमोदन को स्वीकृति न मिलने की परिस्थितियों की भी जानकारी दी जाएगी।

कृपया ध्यान दें

भारत सरकार ने अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह में स्थित तीन द्वापों के नाम बदल दिए हैं: अब इन्हें इन नामों से जाना जाएगा।

द्वीप का पुराना नाम	द्वीप का नया नाम
रॉस आईलैंड	नेता जी सुभाष चन्द्र बोस द्वीप
नील आईलैंड	शहीद द्वीप
हैवलॉक आईलैंड	स्वराज द्वीप

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी अनुदेशों के अनुपालन में पर्यटन मंत्रालय में प्रति वर्ष 1 से 14 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। इसमें अन्य के साथ–साथ, अधिकारियों तथा कर्मचारियों को सरकारी कार्य हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी पर्यटन मंत्रालय में 1 से 14 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। महानिदेशक (पर्यटन) श्री सत्यजीत राजन ने 20 नवंबर, 2018 को विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

पर्यटन मंत्रालय
MINISTRY OF TOURISM

पर्यटन मंत्रालय
MINISTRY OF TOURISM

पर्यटन मंत्रालय

पर्यटन मंत्रालय

पर्यटन मंत्रालय

पर्यटन मंत्रालय
MINIST OF TOURISM

राहुल सांकृत्यायन पर्यटन पुरस्कार

पर्यटन मंत्रालय द्वारा पर्यटन से संबंधित विषयों पर मूल रूप से हिन्दी में लिखी गई पुस्तकों को पुरस्कृत करने के लिए ''राहुल सांकृत्यायन पर्यटन पुरस्कार योजना' वर्ष 2001–02 से चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार (40,000 रुपये), द्वितीय पुरस्कार (30,000 रुपये), तृतीय पुरस्कार (20,000 रुपये) तथा एक प्रोत्साहन पुरस्कार (10,000 रुपये) तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाते हैं।

महानिदेशक (पर्यटन) श्री सत्यजीत राजन ने 20 नवंबर, 2018 को राहुल सांकृत्यायन पर्यटन पुरस्कार प्रदान किए।

प्रथम पुरस्कार डॉ. राजेश कुमार जैन को उनकी पाण्डुलिपि–पुस्तक 'गढ़वाल पर्यटन–लाल बुग्याल फूलों की घाटियां, अद्भूत यात्राएं एवं तीर्थस्थान' के लिए प्रदान किया गया।

द्वितीय पुरस्कार श्री राजीव रंजन प्रसाद को उनकी पुस्तक 'बस्तरनामा' के लिए प्रदान किया गया।

श्री ऋषि राज को उनकी पुस्तक 'अतुल्य भारत की खोज' के लिए तृतीय पुरस्कार के लिए प्रदान किया गया।

प्रोत्साहन पुरस्कार विजेता मुख राम 'माहिर' अवस्थता के कारण उपस्थित नहीं हो सकें।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस 10 अक्टूबर, 2018 को नई दिल्ली में उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा लिखित 'प्रकृति का अलौकिक सौन्दर्य' नाम की पुस्तक का विमोचन करने के अवसर पर संबोधित करते हुए।

मेघालय के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री श्री अलेक्जेंडर लालू हेक ने 15 अक्टूबर, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस से भेंट की ।

कुआंग नाम प्रोवेशिंयल पीपुल काउंसिल के अध्यक्ष श्री ग्यून नगोक क्वांग के नेतृत्व में वियतनाम के एक प्रतिनिधिमंडल ने 17 अक्टूबर, 2018 को नई दिल्ली में केंद्रीय पर्यटन राज्य मंत्री(स्वत्रंत प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस के साथ बैठक की। इस अवसर पर तत्कालीन सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा भी उपस्थित रहीं।

23 अक्टूबर, 2018 को पोर्ट एलिजाबेथ (दक्षिण अफ्रीका) में दूसरे इंडियन ओशियन आरआईएम एसोसिएशन पर्यटन मंत्रियों की बैठक में भाग लेते हुए पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस

गाम्बिया गणराज्य की उच्चायुक्त, सुश्री जैनबा जगने 29 अक्टूबर 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.अल्फोन्स से मुलाकात करते हुए।

दिनांक 30 नवम्बर, 2018 को पर्यटन मंत्रालय में श्रीमती रश्मि सचिव (पर्यटन) के पद से सेवानिवृत्त होने पर उन्हें माननीय पर्यटन राज्य मंत्री जी की उपस्थिति में मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भावभीनी विदाई दी। इस अवसर पर माननीय पर्यटन मंत्री जी, नए पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी जी तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित थे। श्रीमती वर्मा ने 11 मई, 2017 को पर्यटन मंत्रालय में सचिव का कार्यभार ग्रहण किया था।

30 अक्टूबर, 2018 को मनामा, बहरीन में यूएनडब्ल्यूटीओ कार्यकारी परिषद के 109 वें सत्र में भाग लेने के दौरान पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस एक सामुहिक तस्वीर में

5 नवम्बर, 2018 को लंदन में हुए विश्व पर्यटन मार्ट में भारतीय पैवेलियन का तत्कालीन सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा ने उद्घाटन किया।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस ने 5 नवम्बर, 2018 को दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के आगमन हॉल में पर्यटन मंत्रालय के सूचना एवं सुविधा काउंटर का उद्घाटन किया

ह्यूस्टन शहर के महापौर श्री सिल्वेस्टर टर्नर ने 13 नवम्बर, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस तथा अन्य अधिकारियों के साथ एक बैठक में भाग लिया

15 नवंबर, 2018 को नई दिल्ली में इनक्रेडिबल इंडिया टूरिस्ट फैसिलिटेटर सर्टिफिकेशन (आईआईटीएफसी) कार्यक्रम के समापन समारोह में तत्कालीन सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

22 नवंबर, 2018 को अगरतला में 7 वें अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट 2018 के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस, त्रिपुरा के राज्यपाल, श्री कप्तान सिंह सोलंकी, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री बिप्लब कुमार देब। तत्कालीन सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा, महानिदेशक (पर्यटन) श्री सत्यजीत राजन, अपर महानिदेशक (एम.आर.) श्री पी.सी.सिरियक भी मंच पर उपस्थित थे।

23, नवंबर, 2018 को अगरतला में 7वें अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट 2018 में बिजनेस–टू–बिजनेस सत्र झलक

सउदी अरब के भारत स्थित राजदूत श्री सउद अल–साती ने 30 नवम्बर, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस से नई दिल्ली में भेंट की ।

07 दिसंबर, 2018 को नई दिल्ली में आइसलैंड के विदेशी मंत्री श्री गुडलॉगुर थोर थोर्डर्सन ने (दायीं ओर दूसरे) एक प्रतिनिधि मंडल के साथ पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस से भेंट की। इस अवसर पर मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थिति थे।

रेलवे बोर्ड के चेयरमैन श्री अश्विनी लोहानी और पर्यटन मंत्रालय के सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी ने 8 दिसंबर, 2018 को बौद्ध परिपथ स्थलों के लिए नई डिलक्स पर्यटक ट्रेन को सफदरजंग रेलवे स्टेशन, नई दिल्ली में हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

मलेशिया के पर्यटन, कला एवं संस्कृति उपमंत्री श्री वाई बी. तुआन मुहम्मद बख्तियार बिन वान् चिक ने 13 दिसम्बर, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री श्री के.जे. अल्फोंस से भेंट की। इस अवसर पर श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, सचिव (पर्यटन) भी उपस्थित थे

27 दिसंबर, 2018 को नई दिल्ली में एक कार्यक्रम के दौरान प्रतिष्ठित पर्यटन स्थलों के लिए मोबाइल ऑडियों गाइड ऐप विकसित करने के लिए 'एडोप्ट अ हैरिटेज' परियोजना के तहत मेसर्स रेसबर्ड टेक्नोलॉजीज को सहमति पत्र सौंपते हुए पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस। इस अवसर पर श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, सचिव (पर्यटन) भी उपस्थित थे।

LoPNrk es ;ksxnku ns

✔ D;k djs

✖ D;k u djs

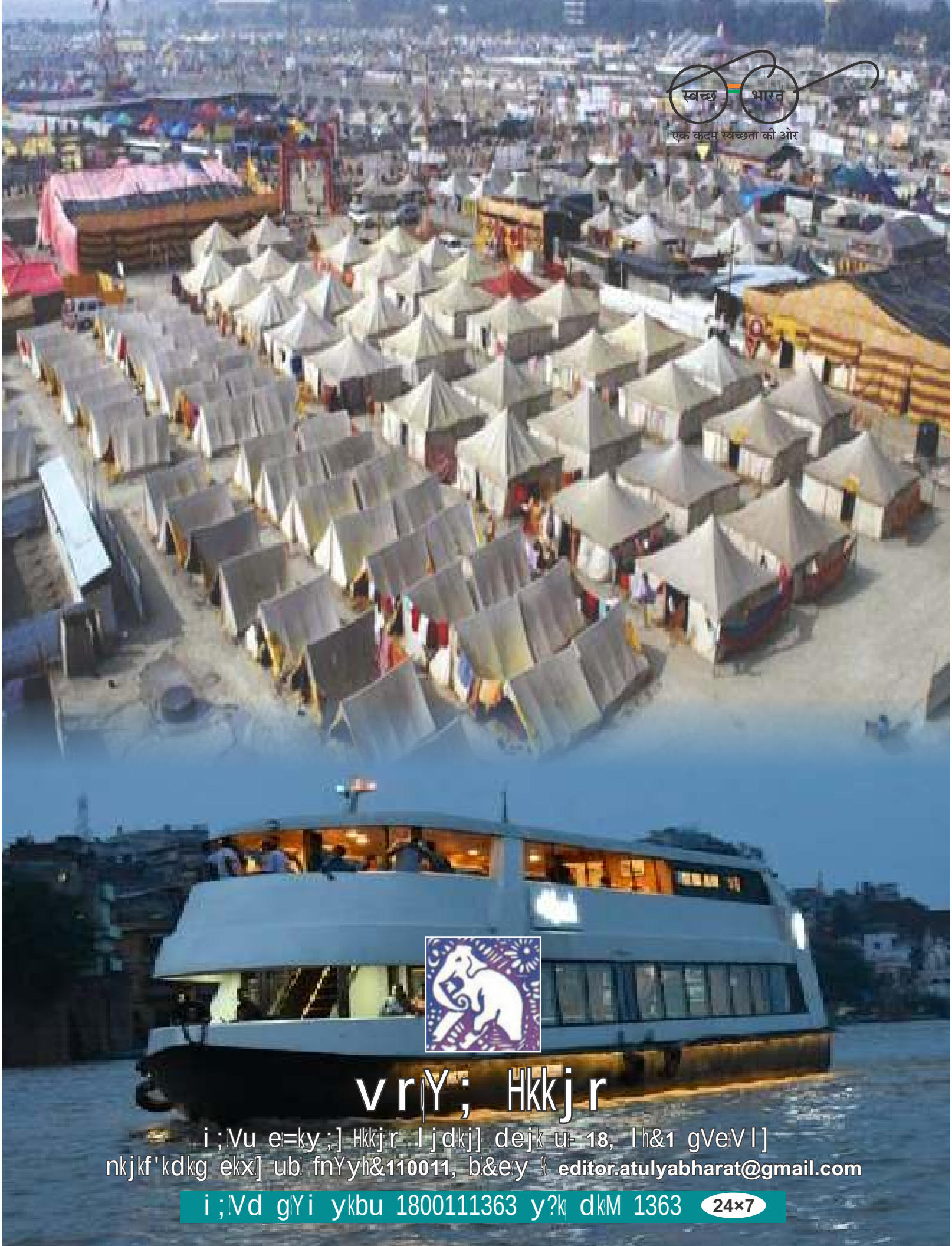

vrqY; Hkkjr

i;Vu e=ky;] Hkkjr ljdkj] dejk u- 18, lh&1 gVeV~l]
nkjkf'kdkg ekx] ubZ fnYyh&110011, b&esy % editor.atulyabharat@gmail.com

i;Vd gSYi ykbu 1800111363 y?kq dksM 1363 24×7